भारतीय रेल

मार्च - 2019

₹ 10



राजधानी एक्सप्रेस के 50 वर्ष



वडोदरा मंडल विशेषांक

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपना विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुंच बनाएं

भारतीय रेल की विज्ञापन दरें (रुपये में)

विवरण	सामान्य दरें	अनुबंधित दरें
सेकण्ड कवर	10,450/-	9500/-
थर्ड कवर	9500/-	8550/-
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति जैसे टेक्स्ट से पूर्व व बाद में)	8550/-	7600/-
पूरा पृष्ठ (सामान्य)	7600/-	6650/-
आधा पृष्ठ	5130/-	4180/-
सेन्टर स्प्रेड	15,000/-	13,300/-
सेन्टर स्प्रेड (स्पेशल पोजिशन)	16,500/-	14,700/-

(विज्ञापन चार कलर में)

तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथवा बारी–बारी विज्ञापन देने पर ही अनुबंधित दरें लागू होंगी

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार 28 से.मी. x 20.5 से.मी.

छपाई क्षेत्र 23 से.मी. x 16.5 से.मी.

★ पत्रिका का प्रसार **समग्र देश में** ★

विज्ञापन सामग्री – ई–मेल, आर्टपुल, सीडी

संपर्क करें : व्यापार प्रबंधकः प्रशांत कुमार पट्टनायक, मोबाइल : 9717647367

310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली–110001

टेलीफोन : 011–23382531, 23303665, 23304456

Email : bmpr310rb@gmail.com

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपना विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुंच बनाएं

भारतीय रेल की संशोधित विज्ञापन दरें (रुपये में)

विवरण	सामान्य दरें	अनुबंधित दरें
सेकण्ड कवर	**10,450/-**	**9500/-**
थर्ड कवर	**9500/-**	**8550/-**
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति जैसे टेक्स्ट से पूर्व व बाद में)	**8550/-**	**7600/-**
पूरा पृष्ठ (सामान्य)	**7600/-**	**6650/-**
आधा पृष्ठ	**5130/-**	**4180/-**
सेन्टर स्प्रेड	**15,000/-**	**13,300/-**
सेन्टर स्प्रेड (स्पेशल पोजिशन)	**16,500/-**	**14,700/-**

(विज्ञापन चार कलर में)

तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथवा बारी–बारी विज्ञापन देने पर ही अनुबंधित दरें लागू होंगी

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार	28 से.मी. x 20.5 से.मी.	छपाई क्षेत्र	23 से.मी. x 16.5 से.मी.

★ पत्रिका का प्रसार **समग्र देश में** ★

विज्ञापन सामग्री – ई–मेल, आर्टपुल, सीडी

संपर्क करें : व्यापार प्रबंधकः प्रशांत कुमार पट्टनायक, मोबाइल : 9717647367
सहायक अनुभाग अधिकारी : राजकुमार : 9717610297
310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली–110001
टेलीफोन : 011–23382531, 23303665, 23304456
Email : bmpr310rb@gmail.com

AADHAAR ENABLED BIOMETRIC ATTENDANCE SOLUTIONS

TRUSTED BY INDIA'S MAHARATNA AND NAVRATNA PSUs

AADHAR ENABLED • AVAILABLE ON GEM • PROUDLY MADE IN INDIA • DSIR RECOGNIZED



Hindi and English Language Interface | *Embedded Linux based Device* | *Card and Fingerprint based Access* | *Water Resistant* | *WiFi, 4G/3G* | *Ethernet/LAN*

Matrix presents a smarter, faster and error-free way to mark attendance. The smart card based system reads the aadhar number from card for authentication, hence; the employees are relieved from frustrating process of manually entering it. It also uses a second level of authentication of fingerprint scanning, making it virtually error-free.

WHY MATRIX COSEC BEST SUITABLE FOR GOVERNMENT ORGANIZATIONS

- ✓ Fast and Error-free Attendance Marking System
- ✓ Reads Aadhar Number from Smart Card
- ✓ Double Authentication of Card and Fingerprint
- ✓ No More Wasting Time in Queue for Marking Attendance
- ✓ Proven Trust of More than 1 Million Government Employees

A FEW OF OUR CUSTOMERS

- Western Railway - Maharashtra
- North Western Railway Head Quarters - Jaipur
- Central Railway - Mumbai
- Eastern Railway - Kolkata
- Southern Railway - Podanur
- Western Railway-Carriage Repair Workshop - Lower Parel
- Integral Coach Factory Ministry of Railways - Chennai
- Indian Navy - Mumbai, Delhi
- Defense Terrain Research Laboratory (DTRL), DIPAS - Delhi
- Doordarshan Kendra - Mumbai, Delhi, Srinagar
- Ministry of External Affairs - Delhi
- ESIC Model Hospital - Mumbai, Faridabad
- Metal & Steel Factory - Kolkata
- ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute - West Bengal, Assam, Kerala, Gujarat, Maharastra
- Directorate General of Audit - Kolkata
- Office of The Controller General of Patents, Designs & Trade Marks - Chennai
- Chief Postmaster General Maharashtra Circle - Mumbai
- Advanced Training Institute - Calicut
- MP Police Housing and Infrastructure - Bhopal
- Controller General of Patents Design - Kolkata
- Defense Research and Development Organization (DRDO) - Delhi, Kerala
- Indian Maritime University - Mumbai
- KEM Hospital - Mumbai
- Forest Research Institute - Uttaranchal
- Export Inspection Council of India - Maharashtra

MATRIX
SECURITY SOLUTIONS

MATRIX COMSEC
394-GIDC, Makarpura, Vadodara-390 010, India
Toll Free Number: **+91 1800-258-7747**
Customer.Care@MatrixComSec.com | Gem@MatrixComSec.com
www.MatrixAccessControl.com

RIVER
in association with...

Stesalit LIMITED

River Engineering Pvt Ltd is engaged in designing, manufacturing and supplying of top-of-the-line products in the technology arena of electrical, magnetic and electro-mechanical for **Mainline Railways**, **Metro Rail**, **Aerospace** and **Defence applications**.

An array of products that are manufactured by the company are for **electric locomotives**, **passenger coaches** and high-end precision items for aerospace and defence, among others.

The company's core competencies comprise technology absorption, **customisation**, modification, **design & development**, testing, installation and project management.

The state-of-the-art manufacturing facility has been certified for **quality management**, **health** and **safety**, **environment** protection, **military worthiness** and quality assurance for **aerospace** and **defence**.

Key Products

Railways & Metro



On-load Single Phase High Voltage Tap Changer for Electric Locomotives



Lube Oil Pump



Water Pump



Terminal Block



Pantograph



Shock Absorbers & Dampers for Locomotives and Coaches



Coach to Coach Coupler



Gear Box Case



Electrical Panel

River Engineering Pvt Ltd

54-55, Toy City, Ecotech-III, Greater Noida - 201 306 (UP), INDIA
E-mail: marketing@riverengg.com • Web: www.riverengg.com

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

मार्च, 2019

आरंभ : 1960 | वर्ष : 59 | अंक : 8 | मूल्य : ₹10



संपादक मंडल

विनोद कुमार यादव
अध्यक्ष

ए.के. प्रसाद
वित्त आयुक्त (रेलवे)

सुशांत कुमार मिश्रा
सचिव

राजेश दत्त बाजपेई
निदेशक (सूचना एवं प्रचार)

योगेश अवस्थी
संपादक

संपादकीय कार्यालय
सम्पादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 337-बी, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
रेलवे टेली - 44519, 9666
(मो.) 9717641075,9909909966
ई-मेल
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क
प्रशान्त कुमार पट्टनायक
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
टेलीफोन :
23303665, 23382531
रेलवे टेली. : 43665/9669
(मो.) : 9717647367

सदस्यता शुल्क :
सर्वसाधारण - ₹ 100,
रेलकर्मियों के लिए - ₹ 90

उप संपादक : दिनेश
संपादन सहयोग : रणमत सिंह

आवरण :
मध्य रेल की कल्याण-कसारा खंड में दौडती राजधानी एक्सप्रेस

Twitter
@bhartiyarailrb
Facebook
www.facebook.com/bhartiyarailpatrika
Instagram
bhartiyarailpatrika



अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड की उपस्थिति में डीरेका निर्मित दो रेल इंजनों का लोकार्पण 7

आरडीएसओ ने नई दिल्ली में आयोजित 'एक्सपोरेल इंडिया -2019' में सहभागिता की 7
चिरेका में 9वां ऑल इंडिया रेलवे तीरंदाजी चैम्पियनशिप संपन्न 8
राजेश तिवारी बने उत्तर पश्चिम रेलवे के नए महाप्रबंधक 9



जॉन मॉरिस अजाक्स फायर इंजन ने स्टेट्समैन चैलेंजर ट्रॉफी जीती 9

10 हावड़ा-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस की स्वर्ण जयंती ***अरविंद कुमार सिंह***
14 मध्य रेल की लोकल से प्रत्यारोपण के लिए लिवर 41 मिनट में... ***डॉ. ए.के. सिंह***
15 अंगदान से जुड़े कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य
16 पारदर्शिता हेतु 'रेल दृष्टि' डैशबोर्ड का प्रारंभ



17 अब ट्रेन चार्ट और खाली बर्थों की जानकारी के लिए नई सुविधा
18 लाइलाज नहीं रही टी.बी. **राकेश शर्मा 'निशीथ'**
21 खौफ **मंजु**
23 डॉ. नामवर सिंह - साहित्य के शिल्पकार **उमेश कुमार शर्मा**
25 रेलों के अंचल से

वडोदरा मंडल विशेषांक

32 भारतीय रेल में विकास की ओर अग्रसर वडोदरा मंडल **देवेन्द्र कुमार**
36 वडोदरा मंडल में पर्यटन के अवसर एवं विकास **प्रमोद गद्रे**
40 वडोदरा मंडल परिचालन विभाग - नवप्रवर्तन में अग्रणी **दीपक मुलचंदानी**
44 रेल आय एवं यात्री सुविधाओं में निरंतर... **डॉ. जेनिया गुप्ता**
46 विद्युत लोको शेड, वडोदरा प्रगति के पथ पर अग्रसर **हरिकेश मीना**
50 वडोदरा मंडल में ऊर्जा संरक्षण व ऊर्जा दक्षता के कार्य **शकील अहमद**
52 कर्षण परिचालन अभिनव प्रयोगों के साथ अग्रसर **विनय कुमार**
56 अनुरक्षण से रक्षण : यांत्रिक विभाग, वडोदरा **बी.वी.एस. प्रसाद**
59 सुलभ, सुरक्षित, सुखद यात्र की मार्गदर्शिका... **अमोल कुमार पिंगले**
62 कर्षण वितरण संगठन - हमारी यातायात सेवा... **सुनील कुमार गुप्ता**
64 संरक्षा भारतीय रेल का स्पंदन **एच.एल. मीना**
65 कार्मिक विभाग - वडोदरा मंडल **उमेश त्रिवेदी**
66 मंडल चिकित्सालय - स्वस्थ कर्मी हमारा उद्देश्य **डॉ. ब्रह्म प्रकाश**
67 यात्री सुरक्षा धर्म हमारा यात्री सुरक्षा कर्म हमारा **हेमंत कुमार**
71 मेमू कार शेड, वडोदरा : सेवा में रत, अनवरत **कल्लाराम मीना**
72 पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल का मीडिया प्रबंधन **खेमराज मीना**
74 चिट्ठी-पत्री
74 अस्तित्व (कविता) **अर्चना शर्मा**



वडोदरा स्टेशन की दृश्य



आनंद स्टेशन के वातानुकूलित प्रतीक्षा कक्ष का दृश्य



स्टेशन में मुफ्त वाई-फाई

संपादकीय

रफ्तार और सुविधा की पर्याय राजधानी एक्सप्रेस के 50 वर्ष

भारतीय रेल के प्रारंभ में कभी किसी ने शायद ही सोचा होगा कि कभी कोई वातानुकूलित ट्रेन 100 किमी से भी अधिक रफ्तार से चलेगी। इसीलिये वातानुकूलित, रफ्तार तथा अत्याधुनिक सुविधाओं से सज्ज पहली राजधानी एक्सप्रेस जब 1 मार्च, 1969 को नई दिल्ली से हावड़ा और 3 मार्च, 1999 को हावड़ा-नई दिल्ली के बीच दौड़ी, तब इसे देखने के लिए हजारों लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। 1 मार्च, 2019 को इस ट्रेन ने अपने 50 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। समय के साथ-साथ इसकी गति तथा सुविधाओं में काफी परिवर्तन किये गये, जिसकी यात्रियों ने काफी सराहना की। आज राजधानी एक्सप्रेस के माध्यम से करीबन सभी राज्यों के प्रमुख शहर देश की राजधानी से जुड़े हुए हैं।

नौ कोच की प्रथम राजधानी एक्सप्रेस में एक वातानुकूलित प्रथम श्रेणी और 5 वातानुकूलित चेयरकार कोच होते थे। लंबी यात्रा में चेयरकार के यात्रियों को काफी दिक्कतें होती थीं, जिसके चलते भारतीय रेल में पहली बार एसी 3 कोच को राजधानी एक्सप्रेस में 12 दिसंबर, 1991 को लगाया गया, जिसमें यात्रियों को सोने की सुविधा प्रदान की गई। राजधानी एक्सप्रेस के कोच बनाने का श्रेय भी सवारी डिब्बा कारखाना (आईसीएफ) चेन्नै को मिला है।

हाल ही में शुरू हुई नई दिल्ली-वाराणसी के बीच चल रही सेमी हाई स्पीड 'वंदे भारत एक्सप्रेस' को यात्री काफी पसंद कर रहे हैं। अत्याधुनिक सुविधाओं वाली इस स्वदेशी ट्रेनसेट का निर्माण भी आईसीएफ द्वारा किया गया है। आने वाले वर्षों में इस ट्रेनसेट के अपग्रेडेड रैक आप को देश-विदेश के ट्रैक पर दौड़ते नजर आयेंगे।

आईसीएफ अत्याधुनिक कोच बनाने के क्षेत्र में भी अब अग्रसर हो गया है। आईसीएफ ने केवल फरवरी माह में ही 301 कोच का निर्माण किया है। चालू वित्त वर्ष में अब तक कोचों का कुल उत्पादन 2919 तक पहुँच गया है। इसके साथ ही आईसीएफ रेल कोच बनाने वाली दुनिया की सबसे बड़ी कंपनियों में शामिल हो गई है ।

रायबरेली स्थित मॉडर्न कोच फैक्ट्री भी कोच बनाने में पीछे नहीं है। यहाँ फरवरी में 143 रेल कोच बनाए गए जबकि 2018-19 में अब तक 1,283 रेल कोच का निर्माण हुआ है। यह पिछले साल की समान अवधि के 586 कोच के मुकाबले दोगुने से भी अधिक है। आधुनिक तकनीक तथा सुविधाओं से सज्ज यह कोच धीरे-धीरे पुराने कोच का स्थान ले रहे हैं।

सामान्यत: अंगदान के तहत् प्राप्त किये गये अंग को एयर या ग्रीन कॉरिडोर के माध्यम से एक हॉस्पिटल से दूसरे हॉस्पिटल तक पहुँचाया जाता है। देश में पहली बार 15 अप्रैल, 2019 को दादर से परेल तक मध्य रेल की लोकल ट्रेन में प्रत्यारोपण हेतु लीवर को 41 मिनट में पहुँचाया गया। मुंबई सहित सभी महानगरों में आज ट्रैफिक की विकट समस्या होती जा रही है। ऐसे में प्रत्यारोपण हेतु अंग को निश्चित समय पर हॉस्पिटल तक पहुँचाने के लिए लोकल ट्रेन या मेट्रो रेल का उपयोग किया जा सकता है।

भारतीय रेल हमेशा अपने सामाजिक दायित्व को निभाती आ रही है। अंगदान एक भगीरथ कार्य है। अंगदान के महत्त्व को समझते हुए। धीरे-धीरे ही सही, परंतु अब भारतीय रेल के कई रेलवे, मंडलों तथा उत्पादन इकाइयों में अंगदान जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। हम सब को मिलकर इस कार्य में सहभागी बनना होगा।

आपको यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएँ, आप के सुझावों से इस पत्रिका को और अधिक रोचक तथा पठनीय बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं।

खुश रहें, स्वस्थ रहें और अंगदान के विषय में जरूर एक बार सोचें। ■

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड की उपस्थिति में डीरेका निर्मित दो रेल इंजनों का लोकार्पण

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव एवं महाप्रबंधक श्रीमती रश्मि गोयल की उपस्थिति में फरवरी में सेवानिवृत्त होने वाले उत्पादन से जुड़े डीरेका के छः कर्मचारियों द्वारा 8 फरवरी को डीजल रेल इंजन कारखाना लोको टेस्ट शॉप में एक 6000 अश्व शक्ति के विद्युत रेल इंजन 'डब्ल्यू8एपी7' एवं गैर रेलवे ग्राहक को प्रेषण हेतु एक 3100 अश्व शक्ति के डीजल रेल इंजन 'डब्ल्यूडीजी3ए' का लोकार्पण किया गया। इसके पूर्व अध्यक्ष ने महाप्रबंधक श्रीमती रश्मि गोयल एवं अन्य प्रमुख अधिकारियों के साथ विद्युत रेल इंजन के ड्राइवर कैब का निरीक्षण कर रेल इंजन से संबंधित महत्त्वपूर्ण तकनीकी जानकारियां प्राप्त कीं।

इस अवसर पर श्री यादव ने कहा कि डीरेका ने विश्व में प्रथम बार इतनी अधिक अश्व शक्ति के दो पुराने डीजल रेल इंजनों को एक विद्युत रेल इंजन में परिवर्तित कर कीर्तिमान स्थापित किया है। भारतीय रेल के संपूर्ण विद्युतीकरण की योजना के चलते विद्युत रेल इंजनों की मांग बढ़ रही है। मुझे विश्वास है कि डीरेका बढ़ी हुई मांग को तत्परता से पूरा करेगा।

समारोह के दौरान डीरेका कर्मियों की कार्यशैली से अभिभूत होकर अध्यक्ष ने डीरेका कर्मियों को 50,000 रुपए



विद्युत रेल इंजन का लोकार्पण कर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव, साथ में हैं महाप्रबंधक श्रीमती रश्मि गोयल

का सामूहिक पुरस्कार प्रदान करने के साथ ही साथ रेल इंजन निर्माण से जुड़े फरवरी माह में सेवानिवृत्त होने वाले छः कर्मचारियों एवं चालक दल को 5,000-5,000 रुपए पुरस्कार की घोषणा की। डीरेका महाप्रबंधक श्रीमती रश्मि गोयल ने कहा कि जनवरी, 2019 तक डीरेका ने कुल 119 विद्युत रेल इंजनों का निर्माण किया है। ■

आरडीएसओ ने नई दिल्ली में आयोजित 'एक्सपोरेल इंडिया-2019' में सहभागिता की

आरडीएसओ ने नई दिल्ली के प्रगति मैदान में 8 से 9 फरवरी तक 'एक्सपोरेल इंडिया-2019' के आयोजन में भाग लिया। इस प्रदर्शनी में रेलवे से सम्बंधित प्रौद्योगिकी, उपकरण और सेवाओं का प्रदर्शन किया गया। एक्सपोरेल इंडिया ने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय कंपनियों को भारतीय रेल के परिवर्तन और विस्तार का हिस्सा बनने का अवसर प्रदान किया। यह भारतीय रेल क्षेत्र के लिए नवीनतम तकनीकी प्रगति, नये उत्पादों और नवाचारों को प्रदर्शित करने के लिए एक आदर्श मंच साबित हुआ।

प्रदर्शिनी का उद्घाटन सदस्य, चल स्टॉक, रेलवे बोर्ड, राजेश अग्रवाल, द्वारा किया गया। महानिदेशक, आरडीएसओ, वीरेन्द्र कुमार भी इस मौके पर आरडीएसओ स्टाल पर उपस्थित थे। आरडीएसओ स्टाल पर सदस्य रोलिंग स्टॉक, रेलवे बोर्ड के अतिरिक्त कई गणमान्य अतिथियों एवं आगंतुकों ने दौरा किया। रेल उत्पादों से जुड़े कई भावी रेल वेंडरों ने आरडीएसओ स्टाल पर प्रदर्शित कार्यों को देखा एवं वेंडर्स सम्बंधित प्रक्रिया व जानकारी प्राप्त की। आरडीएसओ का प्रयास है कि रेल कार्यों से जुड़े वेंडरों को अधिक से अधिक जोड़ा जाये, जिससे कि उद्योग जगत आरडीएसओ के



साथ उद्योग करने में सरलता एवं पारदर्शिता ला सके।

कार्यकारी निदेशक, प्रशासन, एन.के. सिन्हा के नेतृत्व में आरडीएसओ दल ने अपने आरडीएसओ स्टाल की स्थापना की, जिसमें आरडीएसओ द्वारा हाल ही में अर्जित की गयी विभिन्न योजनाओं एवं उपलब्धियों का प्रदर्शन किया गया।

आरडीएसओ का स्टॉल 'ओपनिंग टू इंडस्ट्री' के थीम पर आधारित था। ■

चिरेका में 9वां ऑल इंडिया रेलवे तीरंदाजी चैम्पियनशिप संपन्न



9वीं ऑल इंडिया रेलवे तीरंदाजी (महिला और पुरुष) चैम्पियनशिप कार्यक्रम में उपस्थित सदस्य कार्मिक, रेलवे बोर्ड, एस.एन. अग्रवाल

चित्तरंजन रेल कारखाना के इंडोर स्टेडियम में 7 फरवरी को 9वीं ऑल इंडिया रेलवे तीरंदाजी (महिला और पुरुष) चैम्पियनशिप 2018-19 का उद्घाटन, सदस्य कार्मिक, रेलवे बोर्ड, एस.एन. अग्रवाल ने किया। चिरेका स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित 7 से 9 फरवरी तक चलने वाली इस तीन दिवसीय तीरंदाजी खेल में देश भर के 11 रेलवे जोन के 41 राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के महिला और पुरुष खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर बोलते हुए, श्री अग्रवाल ने कहा कि भारतीय रेल के खिलाड़ियों ने अपनी खेल प्रतिभा के दम पर देश का नाम रौशन किया है। जिसका ताजा उदाहरण है, इस चैंपियनशिप में हिस्सा ले रही पद्मश्री अवार्ड पुरस्कार की सूची में अपना नाम दर्ज कराने वाली श्रीमति एल बोम्बिला देवी।

इस अवसर पर महाप्रबंधक, चिरेका, प्रवीण कुमार मिश्रा ने कहा कि चिरेका के लिए यह गर्व की बात है कि इतने नामचीन तीरंदाज इस तीरंदाजी समागम में हिस्सा ले रहे है। इस अवसर पर श्रीमती सुनीता मिश्रा, अध्यक्षा, महिला कल्याण संगठन, राम प्रकाश, अध्यक्ष, चिरेका खेल कूद संगठन एवं पीसीईई सहित अन्य अधिकारी, खेल प्रेमी और बड़ी संख्या में प्रतिभागी भी मौजूद थे। इसके अलावा चिरेका स्थित सिंथेटिक लॉन टेनिस कोर्ट और आर्चरी अकादमी हॉस्टल का भी अतिथियों के द्वारा उद्घाटन किया गया। आर्चरी अकादमी हॉस्टल में 40 तीरंदाजों के रहने की सुविधा है। इसी परिसर में गणमान्य अतिथियों ने पौधारोपण भी किया। प्रतियोगिता का समापन 9 फरवरी को प्रवीण कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक, चिरेका एवं श्रीमती सुनीता मिश्रा, अध्यक्षा, महिला कल्याण संगठन द्वारा विजेताओं को पारितोषिक एवं पुरस्कार वितरण के साथ हुआ। ■



10 फरवरी को ग्वालियर में आयोजित ऑल इंडिया सीनियर हॉकी चैंपियनशिप का खिताब रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड ने गत विजेता पंजाब को 3-1 से हरा कर जीता। रेलवे के हर साहिब सिंह 'मैन ऑफ द मैच' रहे



18 फरवरी को हिसार, हरियाणा में आयोजित 9वीं हॉकी इंडिया सीनियर महिला राष्ट्रीय चैंपियनशिप-2019 (ए डिवीजन) का खिताब रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड ने मध्य प्रदेश को 5-0 से हराकर जीता।

जॉन मॉरिस अजाक्स फायर इंजन ने स्टेट्समैन चैलेंजर ट्रॉफी जीती

भारतीय रेल अपनी औद्योगिक सुरक्षा के साथ-साथ भावी पीढ़ियों को जीवंत विरासत का दर्शन कराने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व के विंटेज ब्लेसाइज चेसिस (1914) पर जॉन मॉरिस अजाक्स फायर इंजन भारतीय रेल की गौरवमयी संपत्ति है। इसे राष्ट्रीय रेल संग्रहालय, नई दिल्ली में संरक्षित किया गया है। इसने स्टेट्समैन 53वें संस्करण की विंटेज कार रैली में भाग लिया, जहाँ इसे स्टेट्समैन चैलेंजर ट्रॉफी से नवाजा गया। यह फायर इंजन हर साल अनेक श्रेणियों में नियमित रूप से ट्रॉफियां जीत रहा है। राष्ट्रीय रेल संग्रहालय इस रैली में 1981 से भाग ले रहा है। 2013 तक इसे हमेशा स्टेट्समैन चैलेंजर ट्रॉफी और 2013 के बाद से इस रैली में भाग लेने वाले सबसे पुराने वाहन के लिए इंडियन ऑयल ट्रॉफी से सम्मानित किया जा रहा है। यह प्रसिद्ध वाहन हमेशा शहर में चर्चा का और ऑटोमोबाइल प्रेमियों में आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

सौ साल का सफर करने के बाद जॉन मोरिस एजेक्स फायर इंजन को 2014 में सेवा मुक्त कर दिया गया था। इसे 1914 में यू.के. की कंपनी जॉन मॉरिस ने तैयार किया था।



जॉन मॉरिस अजाक्स फायर इंजन का निरीक्षण करते हुए रेलवे बोर्ड के सदस्य चल स्टॉक, राजेश अग्रवाल एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

हैदराबाद के निजाम ने इसे आग बुझाने के लिए मंगाया था। दक्षिण मध्य रेलवे की ललगुडा वर्कशॉप में इसकी मरम्मत का काम किया जाता है। ■



25 फरवरी, 2019 को रेलवे बोर्ड के सदस्य यातायात गिरीश पिल्लई ने पुरी रेलवे स्टेशन का दौरा किया एवं अधिकारियों के साथ स्टेशन संबंध में विचार विमर्श किया

राजेश तिवारी बने उत्तर पश्चिम रेलवे के नए महाप्रबंधक

राजेश तिवारी ने उत्तर पश्चिम रेलवे के नए महाप्रबंधक का पदभार ग्रहण कर लिया है। इससे पूर्व श्री तिवारी उत्तर रेलवे में अपर महाप्रबंधक के पद पर कार्यरत थे।



राजेश तिवारी, 1981 बैच के 'भारतीय रेल इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग सेवा' (आइआरएसईई) के वरिष्ठ अधिकारी हैं। श्री तिवारी ने भारतीय रेल में विभिन्न क्षेत्रीय रेलों तथा उत्पादन इकाइयों जैसे मध्य रेलवे, उत्तर मध्य रेलवे, पूर्व मध्य रेलवे, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, पूर्व तट रेलवे, उत्तर रेलवे, रेलवे विद्युतीकरण संगठन, अनुसंधान व अभिकल्प मानक संगठन तथा डीजल लोकोमोटिव वर्क्स में सेवाएं प्रदान की हैं। श्री तिवारी को रेलवे के विभिन्न विभागों में महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करने का गहन अनुभव प्राप्त है। श्री तिवारी, अपर महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे, नई दिल्ली, प्रमुख मुख्य बिजली इंजीनियर, उत्तर रेलवे, नई दिल्ली, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, इलाहाबाद, मंडल रेल प्रबंधक, सोनपुर, पूर्व मध्य रेलवे, मुख्य बिजली इंजीनियर, डीजल लोकोमोटिव वर्क्स, वाराणसी, अपर मंडल रेल प्रबंधक, बिलासपुर, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे सहित विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवा दे चुके हैं। ■

हावड़ा–नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस की स्वर्ण जयंती

अरविंद कुमार सिंह
वरिष्ठ पत्रकार और परिवहन क्षेत्र के जानकार

भारत जब बुलेट ट्रेन के मुहाने पर खड़ा है और देश की पहली सेमी हाई स्पीड ट्रेन वंदे भारत एक्सप्रेस स्वदेशी प्रयासों से 17 फरवरी, 2019 से अपने सफर पर निकल पड़ी है, भारत की पहली अभिजात्य ट्रेन हावड़ा–नई दिल्ली राजधानी अपनी स्वर्ण जयंती मना रही है। साठ के दशक में आरंभ हुई यह रेलगाड़ी भारतीय रेल की सबसे प्रतिष्ठित और भरोसेमंद गाड़ी मानी गयी, जिसने वैश्विक स्तर पर अपनी प्रतिष्ठा हासिल की। राजधानी एक्सप्रेस श्रेणी की यह पहली गाड़ी 1 मार्च, 1969 को नई दिल्ली से हावड़ा और 3 मार्च, 1969 को हावड़ा से नई दिल्ली के बीच आरंभ हुई थी।

संसद में उस दौरान 1969–70 के वित्तीय वर्ष के रेल बजट में यह प्रस्ताव रखा गया था कि नई दिल्ली से हावड़ा के बीच सप्ताह में दो दिन राजधानी एक्सप्रेस शुरू होगी जो 18 घंटे से कम समय में यह दूरी तय करेगी। तब किसी को भरोसा नहीं हो पा रहा था। तब हावड़ा रूट विद्युतीकृत भी नहीं था और रेलगाड़ियों की औसत रफ्तार 100 किमी से भी कम थी। लेकिन जब हावड़ा राजधानी के चलने के पहले पूर्व रेलवे ने अखबारों में यह विज्ञापन दिया तो लोगों का कौतूहल काफी बढ़ा। विज्ञापन कुछ इस तरह था–

- पूर्णतया वातानुकूलित नयी दिल्ली हावड़ा एक्सप्रेस
- रफ्तार 120 किमी प्रतिघंटा
- महज 17 घंटा 20 मिनट में तय होगा नयी दिल्ली से हावड़ा का सफर
- खाना, चाय और नाश्ता मिलेगा सीट पर
- हावड़ा से सोमवार, शुक्रवार और नयी दिल्ली से बुधवार और शनिवार को चलेगी
- किराया चेयरकार का 90 रुपए प्रति सवारी खाना सहित
- वातानुकूलित शयनयान–280 रुपए प्रति सवारी

हावड़ा स्टेशन से जब राजधानी 3 मार्च, 1969 को शाम पांच बजे रवाना हुई तो इस ऐतिहासिक मौके पर भारी भीड़ जमा थी। इसके गार्ड एस.ओ.लेबी ने चालक जी.एल. टोचर को हरी झंडी दी तो स्टेशन के प्लेटफार्म तथा आसपास भारी भीड़ थी। रास्ते में सजी धजी यह गाड़ी जिस इलाके से गुजरी हर तरफ लोगों ने इसका स्वागत किया। इस गाड़ी ने नयी दिल्ली तक 1445 किमी का लंबा सफर मात्र 17 घंटा 20 मिनट में पूरा कर एक नया इतिहास रचा।



आरंभिक राजधानी एक्सप्रेस में पांच वातानुकूलित चेयरकार, एक वातानुकूलित प्रथम श्रेणी, एक वातानुकूलित पैंट्री कार, दो पावरकार समेत कुल नौ डिब्बे लगे थे। इन डिब्बों का निर्माण सवारी डिब्बा कारखाना यानि आईसीएफ चेन्नै ने किया था। यह भारतीय रेल की पहली सबसे तेज गाड़ी मानी गयी जिसने 130 किमी प्रतिघंटे की गति से सफर किया। 1969 से पहले बड़ी लाइन पर भारतीय रेल पर रेलगाड़ियों की गति सीमा 100 किमी प्रतिघंटे से अधिक नहीं थी। लेकिन राजधानी के लिए 120 किमी की गति सीमा तय करने के साथ ही इसे 130 तक बढ़ाया गया। इस तरह हावड़ा राजधानी इस लिहाज से भारतीय रेल इतिहास में मील का पत्थर बनी कि इसने सौ साल के गति प्रतिबंधों को तोड़ा।

हावड़ा राजधानी में आरंभिक दिनों में पूरी यात्रा में डीजल इंजन का प्रयोग ही होता था। नई दिल्ली–हावड़ा खंड के विद्युतीकरण का काम 3 अगस्त, 1976 को पूरा हो जाने के बाद इस गाड़ी का सफर और आसान हो गया। बाद में थ्री फेज उच्च अश्व शक्ति के डब्ल्यूएपी–5 विद्युत इंजनों के सेवा में आने से इसे और सुविधा हो गयी। आरंभ में हावड़ा राजधानी के ठहराव कानपुर, मुगलसराय और गोमो रखे गए थे जिनको बाद में जनता की मांग और समय के हिसाब से बढ़ाया गया।



भारत में सुपरफास्ट क्रांति का वाहक मानी जाने वाली यह गाड़ी समय के साथ तमाम बदलावों से गुजरी और बेहद लोकप्रिय हुई। राजधानी एक्सप्रेस की सेवा 1 अप्रैल, 1983 को सप्ताह में दो दिन से बढ़ा कर चार दिन कर दी गयी। वहीं 1 अक्टूबर, 1986 से पांच दिन तथा 19 मई, 2003 से सप्ताह में छह दिन चलने लगी। बाद में 1 जुलाई, 2000 से सियालदह-नयी दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस आरंभ हुई। काफी समय से इन दोनों राजधानी एक्सप्रेस गाडियों में नए एलएचबी (लिंक हाफमैन बास) कोच हैं, जिसमें पर्याप्त स्थान और बेहतर यात्री सुख-सुविधाएं उपलब्ध हैं। राजधानी एक्सप्रेस की आन-बोर्ड सेवा की अपनी अलग और विशिष्ट पहचान बन चुकी है। इसकी खानपान सेवा भी बेहतरीन है। साथ ही कई विशिष्ट सेवाएं भी।

वास्तव में तेज रफ्तार गाड़ी के बारे में रेल मंत्रालय काफी समय से विचार कर रहा था। दुनिया भर में रेलों में सुख सुविधाओं के विस्तार और गति को देखते हुए भारतीय रेल ने 1967 में आरडीएसओ, लखनऊ को मौजूदा रेलपथ, सिगनलिंग और चलस्टाक पर अधिक निवेश किए बिना गति विस्तार की संभावनाओं को तलाशने के लिए एक विशेष अध्ययन का जिम्मा सौंपा था। भारतीय रेल प्रणाली को विश्व स्तरीय बनाने की पहल के तहत रेलवे बोर्ड ने यह कदम जब उठाया उस दौरान बड़ी लाइन पर एक्सप्रेस गाड़ियों की अधिकतम रफ्तार 96 किमी प्रति घंटा तक ही थी।

7 अक्टूबर, 1967 को हुई रेलवे बोर्ड की उच्चस्तरीय बैठक में काफी लंबे विचार मंथन के बाद दिल्ली-हावड़ा खंड पर गति विस्तार का फैसला हुआ। बाद में 16 अक्टूबर, 1967 को इस खंड पर 120 किमी प्रतिघंटा की गति से रेलगाड़ी चलाने के लिए व्यवहार्यता अध्ययन आरंभ करने का फैसला लिया गया। इस विशेष परियोजना के तहत वरिष्ठ अधिकारियों की एक टीम बनायी गयी जिसमें तत्कालीन सदस्य इंजीनियरी के.सी. सूद, आरडीएसओ के महानिदेशक पी.एन. माथुर और अनुसंधान निदेशक टी.वी. जोसेफ, उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक पी. सहाय और पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक के.के. मुखर्जी शामिल थे। व्यवहार्यता अध्ययन में आने वाली तकनीकी और प्रशासनिक समस्या से निपटने के लिए पहले ही संबंधित विभागों को रेलवे बोर्ड की ओर से विशेष निर्देश दिए गए थे।

इस परियोजना के तहत सारे पहलुओं, मसलन रेल पथ, सिगनलिंग, पुल, चल स्टाक और अन्य पक्षों की पड़ताल की गयी। तेज रफ्तार के लिए डब्ल्यूडीएम-4 इंजन के साथ मैन-हाल और सवारी डिब्बा कारखाने के बने कोच अध्ययन में लगाए गए। यही विशेष अध्ययन हावड़ा राजधानी की शुरुआत का मजबूत आधार बना। इसमें स्वाभाविक तौर पर सुरक्षा और संरक्षा को खास ध्यान में रखा गया था। बाद में काफी व्यापक विचार के बाद जून, 1968 में रेलवे बोर्ड ने आरडीएसओ की अध्ययन रिपोर्ट में की गयी सिफारिशों को स्वीकार कर लिया। इस रिपोर्ट में कहा गया था कि दिल्ली हावड़ा खंड पर बगैर बड़े निवेश के मौजूदा संसाधनों में तेज रफ्तार वाली गाड़ी चलाना संभव है। स्वदेशी प्रयासों से तमाम परीक्षण करने के बाद 1 मार्च, 1969 को जब हावड़ा राजधानी चली तो उसके पहले एक शैडो एक्सप्रेस भी चलायी गयी थी।

दरअसल हावड़ा राजधानी से भारतीय रेल इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ा। सवारी डिब्बा कारखाना चेन्नै में बने एयरब्रेक वाले, धूलरोधी, शोर रहित और गद्देदार शयनयान के साथ कुर्सीयान या चेयरकार में कई सुधार किए गए। सोने और बैठने की व्यवस्था में काफी सुधार आया। साथ ही अधिक चौड़ी खिड़कियों से यात्री आराम से बाहर के नजारों को देख सकते थे। हावड़ा राजधानी गांव देहात में किस्सा कहानियों का केंद्र भी बनी और साहित्य में भी इसने जगह बनायी। राजधानी की रफ्तार को लेकर कई कहावतें बनीं। नई दिल्ली-हावड़ा राजधानी एक्सप्रेस भारतीय रेल के इतिहास में मील का पत्थर मानी गयी। इस रेलगाड़ी ने देश विदेश की मीडिया में काफी सुर्खियां बटोरी। साथ ही आम जनमानस में भी खासी चर्चा का केंद्र रहने के साथ-साथ लोकगीतों में भी शामिल हुई।

दरअसल हावड़ा राजधानी की व्यापक लोकप्रियता और सफलता के बाद नई दिल्ली-मुंबई सेंट्रल राजधानी एक्सप्रेस



17 मई, 1972 को आरंभ की गयी। बाद में नई दिल्ली-झांसी के बीच में 10 जुलाई, 1988 से शताब्दी एक्सप्रेस आरंभ की गयी। इसी तरह अगस्त क्रांति राजधानी एक्सप्रेस हजरत निजामुद्दीन से मुंबई सेंट्रल के बीच 1 जुलाई, 1991 को आरंभ की गयी। पहले इसका नाम एसी एक्सप्रेस था जो 2 अक्टूबर 1992 को अगस्त क्रांति की 50वीं वर्षगांठ पर बदला गया। फिर भी इसे बोलचाल की भाषा में डुप्लीकेट राजधानी कहा जाता रहा। चौथी राजधानी एक्सप्रेस निजामुद्दीन-सिकंदराबाद-बेंगलूरु के बीच में 1 नवंबर, 1992 से चली। बाद में नई दिल्ली-हावड़ा राजधानी संख्या दो वाया पटना 3 जुलाई, 1993 को चली, जबकि छठी राजधानी हजरत निजामुद्दीन-त्रिवेंद्रम के बीच जुलाई 1993 में चेन्नै के लिए चली थी लेकिन 1 जुलाई, 1994 से बढ़ा कर त्रिवेंद्रम तक कर दी गई। बाद में नई दिल्ली-भुवनेश्वर राजधानी एक्सप्रेस 1 अप्रैल, 1994 को शुरू की गयी। आठवीं राजधानी एक्सप्रेस हजरत निजामुद्दीन-गुवाहाटी 6 जुलाई, 1994 को शुरू हुई जबकि नवीं हजरत निजामुद्दीन-जम्मूतवी राजधानी 8 जुलाई, 1994 को शुरू की गयी। धीरे-धीरे राजधानी एक्सप्रेस से देश की राजधानी नयी दिल्ली से राज्यों की राजधानियां ही नहीं कई प्रमुख नगर जुड़ते गए।

बीते दशकों में राजधानी एक्सप्रेस की सेवा की गुणवत्ता में काफी बदलाव आया। काफी समय तक राजधानी एक्सप्रेस में बड़ी संख्या में चेयरकार होती थी। रात भर लंबी यात्रा करने वाले मुसाफिरों के लिए यह काफी कष्टकारक थी। भारतीय रेल में पहली बार एसी-3 डिब्बों को लगाने का सिलसिला भी राजधानी एक्सप्रेस से ही आरंभ हुआ। पहला एसी-3 कोच हावड़ा राजधानी में ही 12 दिसंबर, 1993 को लगा तो मुसाफिरों की सुविधाओं को जैसे पंख लग गए। बाद में 1996-97 के दौरान मुंबई राजधानी में उपग्रह आधारित टेलीफोन सेवाएं उपलब्ध कराने की पहल की गयी।

हाल में यात्रा अनुभवों में सुधार के लिए रेल मंत्रालय ने परियोजना स्वर्ण के तहत प्रमुख राजधानी और शताब्दी गाड़ियों को उन्नत बनाने का भी फैसला किया। इसके तहत कोच के अंदर की दशा, प्रसाधन, कोच के अंदर सफाई की स्थिति, समय की पाबंदी, खान-पान, बिस्तर, स्टाफ का व्यवहार, सुरक्षा, मनोरंजन सुविधा आदि शामिल है।

राजधानी एक्सप्रेस से आरंभ हुआ यह सफर आज एक नयी बुलंदियों पर है। मिशन रफ्तार और स्वदेशी प्रयास से हाल के सालों में काफी काम हुए हैं। हाल में आरंभ की गयी वंदे भारत एक्सप्रेस स्वदेशी प्रयासों से गति में एक नयी क्रांति के तौर पर देखी जा रही है। रोज करीब ढाई करोड़ से अधिक मुसाफिरों को गंतव्य तक पहुंचाने वाली भारतीय रेल की वंदे भारत एक्सप्रेस विश्वस्तीय सेवा में सुर्खियां बटोर रही है। वहीं भारतीय रेल की सबसे अहम अहमदाबाद-मुंबई हाईस्पीड रेल परियोजना यानि बुलेट ट्रेन पर भी काम तेज रफ्तार पकड़ रहा है। 15 अगस्त, 2022 तक इसे साकार करने का लक्ष्य रखा गया है। करीब एक लाख आठ हजार करोड़ की लागत की ये परियोजना भारतीय रेल को रफ्तार के एक नए युग में प्रवेश कराएगी। और भारत उन 15 देशों में शुमार होगा जहां तेज रफ्तार बुलेट ट्रेनें चलती हैं।

भारतीय रेलों में गाड़ियों की गति बढ़ाने को 2016-17 के बजट में मिशन रफ्तार की घोषणा की गयी थी। इसके तहत पांच सालों में मालगाड़ियों की औसत गति दोगुना करने का लक्ष्य रखा गया। मिशन रफ्तार के तहत 5 अप्रैल, 2016 को गतिमान एक्सप्रेस की शुरुआत हुई। इससे दिल्ली आगरा के बीच का सफर सौ मिनटों में साकार हो गया। 2017-18 के दौरान 769 मेल एक्सप्रेस और पैसेंजर गाड़ियों की गति बढ़ायी गयी है। रेल मंत्रालय का प्रयास है कि 2020 तक सभी ट्रेनों की गति बढ़ जाये। डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर मार्च, 2020 तक पूरी तरह चालू होगा तो रफ्तार को और गति मिलेगी।

आज भारतीय रेल का नेटवर्क 67,368 किमी हो गया है और रफ्तार पर खास जोर दिया जा रहा है। सरकार ने पांच सालों में माल गाड़ियों की औसत रफ्तार दोगुना करने और यात्री गाड़ियों की रफ्तार 25 किमी प्रति घंटा बढ़ाने की परिकल्पना की है। भारतीय रेल ने 2017-18 से 2021-22 के बीच अपने 38 हजार किमी रेलमार्ग के विद्युतीकरण की महत्त्वाकांक्षी योजना तैयार की है। इससे सालाना 13,510 करोड़ की बचत होगी। ■



With Best Compliments from

M/s. Best Technocrate India Pvt. Ltd.
Mobile : Mahesh Bhai, 9824045123
Email: besttechnocrate@yahoo.co.in

M/s. Best Hiring Co.
Email : besthiringco@yahoo.com

M/s. Indian Welding Inverter
Mobile : Pathik Mohta, 9909984821
Email : indianweldinginverter@yahoo.in

M/s. M.G. Electromac
Mobile : Gowtham Bhai, 9825073795
Email : mgelectromac2013@yahoo.com

12, Mansarover Complex,
Opp. Chhani Gurudwara, Vadodara- 391740

M/s. Infratech Solutions
9, Ajit Complex, Sudarshan Mill Compound
Opp. Kashiram Textile, NR. Ahmedabad Estate, Narol, Ahmedabad-382405
Email : infratechsolutions18@gmail.com
Mobile: Brijesh Menon, 9376210966

Our Products









मध्य रेल की लोकल से प्रत्यारोपण के लिए लिवर 41 मिनट में दादर से परेल पहुंचाया गया

डॉ. ए.के. सिंह, वरिष्ठ जनसंपर्क अधिकारी, मध्य रेल

आपने ऑर्गन ट्रांसप्लांट के लिए प्लेन एवं ग्रीन कॉरीडोर जैसे कई उपायों के बारे में सुना होगा, लेकिन आपने कभी सुना है कि लिवर ले जाने के लिए मुंबई की लाइफ लाइन यानि मुंबई की लोकल सेवा का इस्तेमाल किया जाता है।



उल्लेखनीय है कि सामाजिक कार्यकर्ता भरत खरे एक सडक दुर्घटणा में घायल हो गये थे। अस्पताल द्वारा ब्रेन डेड घोषित किये जाने के बाद उनके परिवार ने उनका अंगदान करने की पेशकस की थी। ठाणे के जुपिटर अस्पताल से ग्लोबल हॉस्पिटल परेल को एक कैडवेरिक अलर्ट प्राप्त हुआ कि लीवर अंग को जल्द से जल्द प्राप्त कर स्थानांतरित किया जाना है। 15 फरवरी को इस योजना पर विचार किया गया। दोपहर का समय ईस्ट एक्सप्रेस राजमार्ग पर भारी वाहन के लिए व्यस्ततम समय रहता है। इसलिए ग्लोबल अस्पताल की चिकित्सा टीम ने जीवन को बचाने के लिए अंग के परिवहन हेतु सबसे तेज और सबसे विश्वसनीय तरीका यानी लोकल उपयोग किया। मध्य रेल, जीआरपी, आरपीएफ और मुंबई पुलिस से सभी अपेक्षित अनुमति तुरंत मांगी गई ताकि अंग को सुनिश्चित समय पर ले जाया जा सके।

स्थिति की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए सुरक्षित और तेज गति के लिए आरपीएफ दादर द्वारा एक समर्पित लाइन बनाई गई। सिटी ट्रैफिक पुलिस को भी सतर्क कर दिया गया था और दादर के बाहर वाहनों को उनके द्वारा नियंत्रित किया गया था। लोकल ट्रेन शाम 3 बजकर 4 मिनट पर लीवर को लेकर दादर के लिए ठाणे से निकली और तेज अप लोकल ट्रेन दोपहर 3.35 बजे दादर पहुंची। और दादर स्टेशन के परिसर से बाहर निकलने के लिए अनूप लॉरेंस की अगुवाई में अस्पताल कॉर्डिनेशन टीम के दादर के आरपीएफ और रेल कर्मचारियों द्वारा सभी सहायता प्रदान की गई, जिसके फलस्वरूप लीवर को दोपहर 3 बजकर 38 मिनट पर परेल ग्लोबल अस्पताल में पहुंचाया जा सका। इस प्रकार मध्य रेल के प्रयासों से एक व्यक्ति को नया जीवन दिया जा सका ■







अंगदान से जुड़े कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

अंगदान किसी ऐसे व्यक्ति की सहायता करना है, जिसे उस अंग की जरूरत हो। अंगदान से दूसरे व्यक्ति को नया जीवन मिल सकता है। कोई भी व्यक्ति अंगदान कर कई जिंदगियों को बचा सकता है। हम आपको इस लेख के जरिए अंगदान से जुड़ी कुछ अहम जानकारी दे रहे हैं।

अंगदान के प्रकार : यह दो प्रकार का होता है, अंगदान और टिशू यानी ऊतकों का दान। अंगदान में शरीर के अंदरूनी हिस्सों का दान किया जाता है। जब कि ऊतक यानी टिशू दान आमतौर पर आंख, कान, त्वचा, हड्डी और हृदय वाल्व से जुड़ा है। सामान्यत: व्यक्ति की मौत के बाद ही अंगदान किया जाता है, लेकिन कुछ अंगदान और टिशू दान जीवित रहने के दौरान भी कर सकते हैं।

किन अंगों का कर सकते हैं दान : दान किए जा सकने वाले अंगों में गुर्दे, यकृत, पैनक्रियाज, फेफड़े और दिल शामिल होते हैं, जबकि ऊतक की बात करें तो आंख, त्वचा, हड्डी, अस्थि मज्जा, नसों, मस्तिष्क, हृदय वाल्व, कान का परदा, कान की हड्डियों और रक्त का दान कर सकते हैं।

क्या है अंगदान की प्रक्रिया : किसी व्यक्ति की ब्रेन डेथ की पुष्टि होने के बाद, डॉक्टर उसके घरवालों की इच्छा से शरीर से अंग निकाल लेता है। इससे पहले सभी कानूनी प्रकियाएं पूरी की जाती हैं। इस प्रक्रिया को एक निश्चित समय के भीतर पूरा करना होता है। ज्यादा समय होने पर अंग खराब होने शुरू हो जाते हैं। अंग निकालने की प्रक्रिया में अमूमन आधा दिन लग जाता है।

कितने समय में कर सकते हैं अंगदान : किसी भी अंग को डोनर के शरीर से निकालने के बाद 6 से 12 घंटे के अंदर ट्रांसप्लांट कर देना चाहिए। कोई भी अंग जितना जल्दी प्रत्यारोपित होगा, उस अंग के काम करने की संभावना उतनी ही ज्यादा होती है। लिवर निकालने के 6 घंटे के अंदर और किडनी 12 घंटे के भीतर ट्रांसप्लांट हो जानी चाहिए। वहीं आंखों का 3 दिन के अंदर प्रत्यारोपण हो जाना चाहिए।



किस उम्र में अंगदान कर सकते हैं : अंगदान करने के लिए उम्र की कोई सीमा नहीं है। 18 साल से कम उम्र के व्यक्ति को अंगदान के लिए अपने माता-पिता या संरक्षक से इजाजत लेनी जरूरी है।

क्यों जरूरी है अंगदान : अंगदान पूरी तरह से आपकी सोच पर निर्भर करता है। यदि आप दूसरों को जीवन दान करना चाहते हैं तो अंगदान एक बेहतर विकल्प हो सकता है, आप जीवित रहते हुए या मरने के बाद दूसरों को एक स्वस्थ जीवन दे सकते हैं। अंग की जरूरत किसी को भी हो सकती है वह आपका मित्र या परिवार का कोई सदस्य भी हो सकता है।

कैसे करें अंगदान : अंगदान के लिए दो तरीके हो सकते हैं। कई एनजीओ और अस्पतालों में अंगदान से जुड़ा काम होता है। इनमें से कहीं भी जाकर आप एक फॉर्म भरकर दे सकते हैं कि आप मरने के बाद अपने कौन से अंग दान करना चाहते हैं। जो अंग आप चाहेंगे केवल उसी अंग को लिया जाएगा। शरीर के किसी भी अंग को दान करने वाला व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए।

अंग दान पर भारत की कानूनी स्थिति : भारतीय कानून द्वारा अंग दान कानूनी है। भारत सरकार ने मानव अंग अधिनियम (टीएचओए), 1994 के प्रत्यारोपण को अधिनियमित किया, जो अंग दान की अनुमति देता है, और 'मस्तिष्क की मृत्यु' की अवधारणा को वैध बनाता है।

कैसे किसी के लिए मददगार है अंगदान : अंग प्राप्तकर्ताओं के लिए, प्रत्यारोपण का अर्थ जीवन में दूसरा मौका होता है। हृदय, पैनक्रिया, यकृत, गुर्दे और फेफड़ों जैसे महत्त्वपूर्ण अंग उन लोगों के लिए प्रत्यारोपित किए जा सकते हैं जिनके अंगों में काम करने की क्षमता समाप्त हो रही होती है। कुछ लोगों के लिए अंगदान जीवित रहने का एक मंहगा इलाज हो सकता है मगर ऐसा नहीं है। अंगदान से अंग प्राप्तकर्ता पहले जैसा सामान्य जीवन जी सकता है। उदाहरण के लिए, एक कॉर्निया या ऊतक का प्रत्यारोपण का अर्थ है, फिर से देखने की स्वतंत्रता।

नोट – अंगदान को बढ़ावा देने के उद्देश्य इस लेख को 'ओनली माय हेल्थ वेबसाइट' से साभार लिया गया है। ■

पारदर्शिता हेतु 'रेल दृष्टि' डैशबोर्ड का प्रारंभ





भारतीय रेल ने पारदर्शिता और जबावदेही को बढ़ावा देने के लिए 'रेल दृष्टि' डैशबोर्ड की शुरुआत की है। यह विभिन्न स्रोतों से एक ही स्थान पर जानकारी एकत्र करेगा और देश के प्रत्येक नागरिक को प्रमुख आंकड़ों और मापदंडों तक पहुंच प्रदान करेगा। इस डैशबोर्ड तक डेस्कटॉप/लेपटॉप अथवा मोबाइल उपकरण जैसे फोन अथवा टेबलेट का इस्तेमाल करते हुए पहुंच बनाई जा सकती है। यह एप्लिकेशन जनता के आसान इस्तेमाल के लिए मोबाइल अनुकूल है। इस डैशबोर्ड का यूआरएल 'raildrishti.cris.org.in' है।

डैशबोर्ड पर उपलब्ध जानकारी को 15 यूजर फ्रेंडली श्रेणियों में बाटा गया है :

एक नजर में : भारतीय रेल के चार प्रमुख मापदंडों के बारे में जानकारी देता है। इसमें यात्री आरक्षण, अनारक्षित टिकटिंग, फ्रेट अर्निंग और फ्रेट लोडिंग शामिल हैं। विभिन्न अवधियों के लिए प्रत्येक अवयवों के मापदंड दर्शाए गए हैं। भारतीय रेल के किसी भी स्टेशन के बारे में जानकारी इस में देखी जा सकती है।

सेवाएं : यात्री पेश की गई किसी भी डिजिटल सेवा को देख सकते हैं और उसका लाभ उठा सकते हैं। रेल दृष्टि में 6 सेवाएं पीएनआर पूछताछ, ओडीसी आवेदन पूछताछ, शिकायत पूछताछ, टेंडर संबंधी पूछताछ, श्रमिक पूछताछ और मालभाड़ा संबंधी पूछताछ शामिल हैं। नागरिकों की सुविधा के लिए यहाँ 8 महत्त्वपूर्ण रेलवे वेबसाइटों के लिंक उपलब्ध हैं।

परिचालित ट्रेनें : यात्री अब भारतीय रेल के नेटवर्क पर किसी भी ट्रेन पर निगरानी रख सकते हैं। यात्रियों को ट्रेन के साथ-साथ हाउसकीपिंग कर्मचारियों के बारे में भी जानकारी मिल सकती है। विशेष ट्रेनों को देखने के लिए फिल्टर भी मौजूद है।

आईआरसीटीसी रसोई : डैशबोर्ड आईआरसीटीसी की विभिन्न रसोई में लगे कैमरों से जानकारी दे सकता है। यात्री अब देख सकते हैं की उन्हें ट्रेन में दिया जाने वाला भोजन कैसे पक रहा है और पैक हो रहा है।

शिकायतें : इस वर्ग में शिकायत प्रबंधन प्रणाली (सीओएमएस) के जरिए मिलने वाली शिकायतों की स्थिति देखी जा सकती है। इसमें हल की गई और लंबित शिकायतों की संख्या दिखाई देती है। डैशबार्ड के जरिए क्षेत्रवार और मंडल वार अलग-अलग शिकायत का प्रकार देखा जा सकता है।

उपलब्धियां : डैशबोर्ड के लिए भारतीय रेल की संपूर्ण उपलब्धियों और विभिन्न राज्यों में रेलवे की उपलब्धियों को देखा जा सकता है।

स्टेशन की छवि : यह भारतीय रेल नेटवर्क पर यात्रियों के अनुभव बेहतर बनाने के लिए शुरू की गई कुछ प्रमुख पहलों की प्रगति की निगरानी करता है। यह काम से पहले और काम के बाद नेटवर्क में विभिन्न क्षेत्रों की छवि को दर्शाता है।

विरासत : यह भारतीय रेल में यात्रा के सांस्कृतिक पहलू को दर्शाता है। इस टैब में चार प्रमुख वर्ग है इनमें रेल विरासत, स्मरणीय यात्राएं, मार्गों, ट्रेनों, सैलूनों की चौतरफा यात्रा और आईआरसीटीसी पर्यटन डेस्क जो महत्त्वपूर्ण जानकारी और पर्यटन सेवाएं प्रदान करता है।

श्रमिक कल्याण : यह वर्ग रेलवे ठेकेदारों के साथ कार्यरत असंगठित क्षेत्र के बारे में जानकारी प्रदान करता है। डैशबोर्ड

में कैज्यूएल कर्मचारियों को दिए जाने वाले वेतन मान की मात्रा उपलब्ध है। इसे विभिन्न समय अवधियों के लिए विभाग वार और क्षेत्र वार भी देखा जा सकता है। यह इस बात को सुनिश्चित करने का प्रयास है कि असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को उनका भुगतान किया जा रहा है।

बिल : आपूर्तिकर्ताओं को रेलवे द्वारा भुगतान के लिए बिलों की आवश्यकता होती है और अवधिवार उनकी विचाराधीनता को डैशबोर्ड में देखा जा सकता है।

मालभाड़े से आमदनी : यह वर्ग भारतीय रेल के नेटवर्क में मालभाड़े से आमदनी को दर्शाता है। अलग-अलग क्षेत्रों और वस्तुओं के साथ एक दिन, एक सप्ताह, एक महीने और एक वर्ष की आमदनी को देखा जा सकता है। 9 प्रमुख मालभाड़ा वस्तुओं की जानकारी उपलब्ध कराई गई है।

माल चढ़ाना और उतारना : अलग-अलग क्षेत्रों और वस्तुओं के साथ एक दिन, एक सप्ताह, एक महीने और एक वर्ष में रेकों की संख्या और चढ़ाए जाने वाले और उतारे जाने वाले माल की मात्रा प्रदान की गई है। 9 प्रमुख मालभाड़ा वस्तुओं की जानकारी उपलब्ध कराई गई है।

यात्रियों से आमदनी : इस वर्ग में यात्रियों के आरक्षण और अनारक्षित टिकेटिंग से आमदनी दर्शाई गई है। यात्री टिकटों की संख्या और आमदनी को देखा जा सकता है। साथ ही अनारक्षित टिकटिंग में उप नगर, गैर-उपनगर, और मोबाइल बुकिंग देखी जा सकती है।

व्यय : व्यय का विवरण, भारतीय रेल द्वारा किए गए कार्यों को देखा जा सकता है। चार विभिन्न अवधियों के आंकड़े दिए गए हैं - दिन के दौरान, पिछले 7 दिन के दौरान, महीने के दौरान और वर्ष के लिए कार्य।

सुगम-मालभाडा ऐप : भारतीय रेल के मालभाड़ा व्यवसाय के बारे में जानकारी तक पहुंच प्रदान करता है। यह ग्राहकों को अपने खेप पर नजर रखने में मदद करती है। यह विभिन्न टर्मिनलों और संबद्ध शीर्ष अधिकारियों, मांगपत्र स्थिति, वर्तमान मालभाड़ा दरों, रेक आवंटन योजना,लागू प्रतिबंधों आदि के बारे में जानकारी प्रदान करता है। टेब में मालभाड़ा और अन्य आंकड़े भी उपलब्ध हैं। ■

अब ट्रेन चार्ट और खाली बर्थों की जानकारी के लिए नई सुविधा उपलब्ध

भारतीय रेल ने यात्रियों के सुविधा के लिए ट्रेन चार्ट तथा खाली बर्थों की जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध करवा दी है। अब यात्रा के इच्छुक व्यक्ति खाली बर्थ की जानकारी का उपयोग ऑनलाइन या टीटीई से टिकट बुकिंग के लिए कर सकते हैं।

यात्री आरक्षण चार्ट के आधार पर ट्रेन में उपलब्ध खाली बर्थों की जानकारी आईआरसीटीसी वेबसाइट www.irctc.co.in पर उपलब्ध होगी। इससे यात्रियों को चार्ट तैयार होने के बाद खाली बर्थों की जानकारी मिलेगी। यात्री ट्रेन प्रारंभ होने के स्टेशन के साथ-साथ यात्रा के दौरान आने वाले स्टेशनों की खाली बर्थों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। खाली बर्थ की जानकारी का उपयोग यात्री ऑनलाइन या टीटीई से टिकट बुकिंग के लिए कर सकते हैं। यह सुविधा वेबसाइट और मोबाइल दोनों पर उपलब्ध है। इस नई व्यवस्था से निश्चित तौर पर यात्रियों का अनुभव बेहतर होगा। खाली बर्थों की जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध होने से टीटीई को ढूंढने की जरूरत नहीं रह जाएगी। इस सुविधा को डायनेमिक प्रणाली से जोड़ा गया है। इसके तहत यात्रा के दौरान जानकारी को अद्यतन बनाया जा रहा है। इस संबंध मे रेलवे बोर्ड के सदस्य यातायात गिरीश पिल्लई ने कहा कि इस प्रयास का लक्ष्य आरक्षण प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करना है और यात्रियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है। यात्री दूसरा चार्ट बनने के बाद भी उपलब्ध खाली बर्थों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कुछ ही दिनों में सभी राजधानी और शताब्दी ट्रेनों में दूसरा चार्ट बनने के बाद भी टिकट बुकिंग की सुविधा दी जाएगी। ■



लाइलाज नहीं रही टी.बी.

राकेश शर्मा 'निशीथ'

24 मार्च, 1882 को राबर्ट कोच ने तपेदिक फैलाने वाले कीटाणु माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्यूलोसिस की खोज की थी। इसके लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनकी खोज के सौ साल पूरे होने पर इंटरनेशनल यूनियन अगेंस्ट ट्यूबरक्यूलोसिस एंड लंग डिजीज ने 24 मार्च को 'वर्ल्ड टी.बी. डे' मनाकर विश्व को इस रोग के प्रति जागरूक करने का प्रस्ताव रखा था। इस पहले दिवस का थीम थी 'टी.बी. की हार : अब और हमेशा के लिए'। इसका उद्देश्य वर्ष में कम-से-कम एक दिन विश्व के जनमानस का ध्यान इस भयानक बीमारी की ओर आकृष्ट करना था।

मनुष्य में इस रोग का सबसे पुराना प्रमाण जर्मनी में हाइडलबर्ग के निकट एक कब्रिस्तान में मिला था, जहाँ नवपाषाणकालीन अस्थि अवशेषों में टी.बी. के चिह्न मिले थे। मिस्र में 3000 से 2400 वर्ष ईसा पूर्व की ममियों में भी टी.बी. के लक्षण मिले हैं। मिस्र में 1500 ईसा पूर्व में टी.बी. अस्पताल होने के प्रमाण भी मिले हैं। 600 ईसा पूर्व लिखी गई सुश्रुत संहिता में टी.बी. के इलाज की विधि बताई गई थी और यजुर्वेद में इस रोग से पीड़ित लोगों को पहाड़ों पर जाने की सलाह दी गई थी। ऋग्वेद में टी.बी. का उल्लेख यक्ष्मा के नाम से आता है। अथर्ववेद में इसके कुछ लक्षणों का ब्यौरा तक दिया गया है।



17वीं शताब्दी में रॉबर्ट कोच ने कुछ निर्णायक साक्ष्य प्रस्तुत किए। इसके द्वारा इस बीमारी को एक जीवाणु द्वारा संक्रामक रूप से फैलाया जाना सिद्ध हुआ। 19वीं शताब्दी में टी.बी. को सफेद प्लेग की संज्ञा दी गई थी। कुछ यूरोपियनों ने इसे रूमानी रोग के रूप में देखा। हिप्पोक्रेट्स ने टी.बी. को आनुवंशिक रोग बताया, जबकि अरस्तु और गैलेन ने इसको संक्रामक रोग माना। 20वीं शताब्दी के आरंभ में एडवर्ड ट्रबु के प्रयोगों द्वारा यह प्रदर्शित किया गया कि टी.बी. एक जीवाणु द्वारा फैलती है तथा वातावरण, परिस्थितियां इसके प्रसार में मुख्य भूमिका निभाती हैं। उन्होंने टी.बी. सेनिटोरियम की परिकल्पना भी प्रस्तुत की।

टी.बी. क्या है ? टी.बी. का पूरा नाम ट्यूबर बासिलस है। भारत में एड्स से भी बड़ा खतरा टी.बी. है। रोग से प्रभावित अंगों में छोटी- छोटी गांठ अर्थात ट्युबरकल्स बन जाते हैं। उपचार न होने पर धीरे-धीरे प्रभावित अंग अपना कार्य करना बंद कर देते हैं और यही मृत्यु का कारण हो सकता है। इसके कीटाणु हवा के माध्यम से फैलते हैं। इलाज ठीक से न किया जाए तो यह रोग जानलेवा हो सकता है। टी.बी. सिर्फ फेफड़ों से जुड़ी समस्या नहीं है बल्कि बाल और नाखून छोड़कर शरीर के किसी भी अंग में हो सकती है जैसे हड्डियां, जोड़, पेट, आंत, दिमाग, किडनी, जननांग व मुंह-नाक आदि। क्षयरोग और एचआईवी के बीच संबंध भलीभांति सिद्ध हो चुका है और सक्रिय रोग हेतु निष्क्रिय तपेदिक संक्रमण को बढ़ाने के लिए एचआईवी सर्वाधिक सशक्त जोखिम घटक होने के कारण और एचआईवी रोगियों में तपेदिक सर्वाधिक आम होने वाला संक्रमण है। यह एचआईवी रोगियों की मृत्यु का सबसे आम कारण भी है। इसमें तपेदिक रोगियों और एचआईवी सेरोम्बलैंस लगभग 5 प्रतिशत अनुमानित है।

महिलाओं को अधिक खतरा : सक्रिय टी.बी. के विकास में गरीबी सबसे मुख्य कारक है। दुनिया में गरीबों का 70 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं का ही है। टी.बी. के कारण उनमें रुग्णता और मृत्यु की दर और अधिक हो जाती है। यह रोग युवा महिलाओं को अधिक प्रभावित करता है। महिलाओं में टी.बी. के 50 प्रतिशत से अधिक मामले 34 वर्ष की आयु से पहले होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया में 15 से 44 वर्ष की महिलाओं में मृत्यु का तीसरा प्रमुख कारण टी.बी. है। कम आय वाले देशों में 10 से 19 वर्ष की महिलाओं में मृत्यु का तीसरा प्रमुख कारण है, जबकि दुनिया में 20 से 59 वर्ष की महिलाओं में मृत्यु का पांचवा प्रमुख कारण है। इसके अलावा टी.बी. गर्भवती महिलाओं एवं उनके बच्चों के जीवन के लिए भी बड़ा खतरा है।

भारत में तपेदिक रोग : दुनिया में 6-7 करोड़ लोग टी.बी. की बीमारी से ग्रस्त हैं और प्रत्येक वर्ष 25 से 30 लाख लोगों की इससे मौत हो जाती है। देश में हर तीन मिनट में दो मरीज क्षयरोग के कारण दम तोड़ देते हैं। हर दिन चालीस हजार लोगों को इसका संक्रमण हो जाता है। भारत में हर वर्ष 20 लाख लोग टी.बी. की चपेट में आ जाते हैं और लगभग 5 लाख प्रति वर्ष मर जाते हैं। टी.बी. का पहला सर्वेक्षण भारत में वर्ष 1956 में करवाया गया था। अनेक मानसिक बीमारियां टी.बी. का बड़ा कारण बनकर उभर रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की वर्ल्ड टी.बी. रिपोर्ट-2013 के अनुसार एड्स के बाद विश्व की सबसे गंभीर बीमारी टी.बी. है।

वर्ष 2016 की विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार टी.बी. से पीड़ित रोगियों में इलाज की दर 82 प्रतिशत

है, जबकि इससे होने वाली मौतों का स्तर वर्ष 2000 में 23 प्रतिशत से गिरकर 16 प्रतिशत तक पहुंच गया है। डब्ल्यूएचओ के आंकड़े के अनुसार वर्ष 2017 में टी.बी. के एक करोड़ नए मामले सामने आए थे इसमें करीब 64 लाख मामले डब्ल्यूएचओ को मिले। इसका कारण यह हो सकता है कि टी.बी. की चपेट में आने के बाद लोग मनमर्जी का इलाज कराते हैं, जिससे वे आंकड़े के तहत पंजीकृत नहीं हो पाते।

ड्रग रेजिस्टेंट टी.बी. के प्रकार : टी.बी. दो प्रकार की होती है। आमतौर पर 70 प्रतिशत पल्मोनरी टी.बी. और 30 प्रतिशत एक्सट्रा पल्मोनरी के शिकार होते हैं। पल्मोनरी टी.बी. के कीटाणु हवा के संपर्क से एक से दूसरे व्यक्ति के लिए खतरा हैं। एकस्ट्रा पल्मोनरी टी.बी. के मरीजों से अन्य लोगों को संक्रमण का खतरा नहीं होता। टी.बी. ज्यादातर फेफड़ों पर असर करती है। इसे पल्मनेरी टी.बी. कहते हैं। इसके अलावा यह शरीर के किसी भी अंग पर असर करती है, तो उसे एक्सट्रा पल्मनेरी ट्यूबरक्लोसिस कहा जाता है।

टी.बी. के प्रकार निम्नलिखित हैं :

- पहली श्रेणी की दवाओं (फर्स्ट लाइन एंटी टी.बी. ड्रग्स) पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखती। यह रोग तब विकसित होता है, जब गलत तरीके से दवा दी जाती है या मरीज पूरा इलाज होने से पहले ही दवाएं खाना बंद कर देता है।
- **मल्टी ड्रग रेसिसटेंट ट्यूबर क्लोसिस (एमडीआर)** - यह सामान्य टी.बी. का बिगड़ा रूप है। इसमें टी.बी. की सामान्य दवाइयां असर नहीं करतीं। दवाई की मात्रा बढ़ानी पड़ती है। इसमें जो दो आम दवाओं, आइसिनयाजिड और रिफाम्पिसन का प्रतिरोध करती है। एमडीआर टी.बी. के मामले में मुख्य दवाइयां जैसे रिफैम्पिसिन अथवा आइसोनियाजिड बेअसर हो जाती है। इससे ग्रस्त लोगों में इलाज की समय सीमा 18 से बढ़ाकर 24 महीने करनी पड़ती है।
- **एक्सटेंसिवली ड्रग रेसिस्टेंट टी.बी. (एक्सडीआर)** - जब एमडीआर टी.बी. बिगड़ती है तो यह एक्सडीआर का रूप ले लेती है। ऐसा एमडीआर का पूरा कोर्स नहीं करने के कारण होता है।
- **एक्सट्रीमली ड्रग रेसिस्टेंट टी.बी. (एक्सएक्सडीआर)**- एमडीआर व एक्सडीआर का बिगड़ा रूप एक्सएक्सडीआर टी.बी. है। इसमें दवा असर नहीं करती है।

टी.बी. के कारण : ट्यूबरक्यूलोसिस एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अनुसार, 'इसे हम लाइफ स्टाइल डिजीज नहीं कह सकते, क्योंकि इसके मूल में गरीबी है। लेकिन जिन्हें मधुमेह है, जो मोटापे के शिकार हैं, जो सिगरेट-तंबाकू का सेवन करते हैं, जो भीड़-भाड़ वाले क्षेत्र में काम करते हैं, या जिनके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम है, उन्हें टी.बी. अपनी चपेट में ले सकती है।' टी.बी. का एक रोगी हर साल 10 से 15 लोगों को संक्रमित करता है। टी.बी. के बैक्टीरिया सांस द्वारा शरीर में प्रवेश करते हैं। किसी रोगी के खांसने, बात करने, छींकने या थूकने के समय बलगम व थूक की बहुत ही छोटी-छोटी बूंदें हवा में फैल जाती हैं, जिनमें मौजूद बैक्टीरिया कई घंटों तक हवा में रह कर वायु में फैल जाते हैं। इस कारण स्वस्थ व्यक्ति भी आसानी से इसका शिकार हो जाता है। टी.बी. रोग के अन्य मुख्य कारण इस प्रकार हैं - अपर्याप्त और पौष्टिकता से कम भोजन करना; कम जगह में बहुत से लोगों का रहना; स्वच्छता का अभाव; धूम्रपान एवं मदिरापान करना; स्लेट फैक्टरी में काम करने वाले मजदूरों को इसका अधिक खतरा होता है।

टी.बी. के लक्षण : टी.बी. के लक्षण निमोनिया से भी बहुत मिलते-जुलते हैं। टी.बी. के कुछ लक्षण इस प्रकार दिखाई देते हैं - एक माह से अधिक खांसी; एक माह से अधिक बुखार, विशेषकर शाम को; भूख न लगना; खांसी में खून आना; बच्चों में गिल्टियां निकलना; कफ के साथ खून आना; रात को हद से ज्यादा पसीना आना; अचानक वजन में कमी होना; छाती में दर्द होना; सांस लेने में कठिनाई होना; एक्स्ट्रा पल्मनेरी टी.बी. में प्रभावित क्षेत्र से ही जुड़े लक्षण नजर आते हैं जैसे आंत संबंधी टी.बी. में व्यक्ति को दस्त हो सकते हैं तथा शरीर के जोड़ में टी.बी. होने पर दर्द व सूजन हो सकती है।

टी.बी. की जांच : शरीर के जिस हिस्से में टी.बी. है, उसके अनुसार टेस्ट होता है। फेफड़ों की टी.बी. के लिए बलगम जांच होती है। बलगम की जांच 2 दिन लगातार की जाती है। अगर बलगम में ही कीटाणु मिल गए तब तो संदेह नहीं रहता, नहीं तो चेस्ट का एक्सरे करवा कर उन पर आए दाग-धब्बों के आधार पर टी.बी. की पहचान की जाती है। यदि यह जांच फेल हो जाए तो सीटी स्कैन कराने की आवश्यकता होती है। अंत में जांच है ब्रोंकोस्कोपी। इसमें फेफड़े को धोने के बाद मिले पानी की जांच की जाती है। एक अनुमान के अनुसार 100 मरीजों में से करीब 10 टी. बी. के शिकार खांसी होने की स्थिति में मिल जाते हैं। किडनी की टी.बी. के लिए यूरीन कल्चर टेस्ट होता है। यूटरस की टी.बी. के लिए सर्वाइकल स्वैब लेकर जांच करते हैं। अगर गांठ आदि है तो वहां से फ्लूइड लेकर टेस्ट किया जाता है। कमर में लगातार दर्द है और दवा लेने के बाद भी फायदा नहीं हो रहा है तो एक्सरे-एमआरआई आदि कराया जाता है।

टी.बी. की रोकथाम कैसे हो ? क्षयरोग कोई रोग नहीं है बल्कि कुपोषण का नतीजा है। आधे से अधिक मामले में पौष्टिक भोजन न मिलने से यह रोग होता है। ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन के अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन 'क्षयरोग उन्मूलन: चुनौतियां, दृष्टिकोण और उपाय' में भारत और विश्व के विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया कि भारत को क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम चलाते समय सामाजिक स्थितियों जैसे असमानता, गरीबी, कुपोषण, अत्यधिक भीड़भाड़ पर ध्यान देने की आवश्यकता है। भारत सहित विश्व में टी.बी. के प्रति पर्याप्त जागरूकता का अभाव है, जिससे यह तीव्र संक्रामक रोग पूर्णरूप से उपचार की व्यवस्था के पश्चात् भी भयावह रूप से फैल रहा है।

हमेशा खुले व हवादार घरों में रहें और हर कमरे में हवा का प्रवाह रहे। नमी वाले और अंधेर कमरे में कभी न

रहें और हर कमरे में पर्याप्त मात्रा में धूप आती हो। टी.बी. का कीटाणु हल्की धूप लगते ही मर जाता है। शराब व किसी अन्य मादक द्रव्य के व्यसन से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में भारी कमी आ जाती है और ऐसे लोग टी.बी. के कीटाणु से बच नहीं पाते। टी.बी. से बचाव के लिये –छींकने, खांसने या मुंह या नाक छूने के बाद अपने हाथ धोने चाहिए। खांसने, छींकने या हंसते समय अपने मुंह को टिसू पेपर से ढकें। प्लास्टिक के थैले में इस्तेमाल किए हुए टिश्यू रखकर सील करें और फेक दें। बीमारी के दौरान कार्यस्थल या स्कूल न जाए। दूसरों के साथ घनिष्ठ संपर्क से बचें।

बच्चों को जन्म से एक माह के अंदर टी.बी. का टीका लगवाएं, कभी टी.बी. हो जाए तो पूरा इलाज कराएं एवं अधिक मेहनत वाला काम न करें। बकरी का दूध सर्वथा निरापद है, बल्कि क्षय निवारण में सहायता करता है, क्योंकि बकरी पर उसके शरीर में एक विशेष गंध के कारण क्षय के कीटाणु कोई बुरा प्रभाव नहीं कर पाते हैं। टी.बी. से बचने के लिए न्यूट्रिशन से भरपूर खासकर प्रोटीन डाइट यानी सोयाबीन, दालें, मछली, अंडा, पनीर आदि का सेवन करें मरीज को मास्क पहनकर रखना चाहिए।

दुनिया की बड़ी-बड़ी दवा कंपनियां टी.बी. की नई दवाओं, टीकों आदि की खोज पर खर्च कम करने लगी हैं, जबकि विशेषज्ञों के अनुसार टी.बी. के लिए नई दवाओं की आवश्यकता है। लेकिन मौजूदा दवाओं के लिए छह महीने का कोर्स अनिवार्य है, जो अधिकतर मरीज पूरा नहीं कर पाते, जिससे उनका इलाज अधूरा रह जाता है। एमडीआर टी.बी. से निपटने के लिए तो नई दवाएं हर हाल में चाहिए क्योंकि मौजूदा कई दवाएं इसके मरीजों पर असर ही नहीं करती। टी.बी. के लिए ऐसी दवाओं की आवश्यकता है जो कम संख्या में और कम समय में अपना असर दिखाएं।

टी.बी. मात्र एक चिकित्सकीय बीमारी ही नहीं हैं बल्कि यह एक सामाजिक बीमारी भी है। अत: सोशल मीडिया की इसमें अहम भूमिका हो सकती है। खासकर जागरूकता उत्पन्न करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया जा सकता है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि अच्छी गुणवत्ता वाली दवाएं भी उपलब्ध कराई जाएं। टी.बी. फैलाने पर सजा का भी प्रावधान है। आइपीसी की धारा 269 और 270 के अनुसार टी.बी. का सही से इलाज न कराने और इसे दूसरों तक फैलाने के लिए 6 महीने तक की सजा हो सकती है। एक्सडीआर टी.बी. फैलाने पर एक साल तक की सजा हो सकती है।

एक नोटिफिकेशन अनुसार अगर किसी डॉक्टर, कैमिस्ट या फार्मासिस्ट ने उसकी जानकारी में आने वाले टी.बी. के मामले की जानकारी स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों को नहीं दी, तो उसे छह महीने से लेकर दो साल तक की जेल हो सकती है। स्वास्थ्य अधिकारियों को टी.बी. के हर मरीज को ट्रैक करना होगा। अर्थात् मरीज के घर जाकर पता लगाना होगा कि वह नियमित दवाएं ले रहा है या नहीं। उन्हें टी.बी. के मरीज के घरवालों की काउंसलिंग भी करनी होगी। इसका उद्देश्य देश से टी.बी. का खात्मा करना है। ■

फार्म-IV

घोषणा

'भारतीय रेल' के स्वामित्व एवं अन्य विवरण के संबंध में घोषणा

1.	प्रकाशन	:	नई दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	:	**श्री प्रशान्त कुमार पट्टनायक**
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-1
4.	प्रकाशक का नाम	:	**श्री प्रशान्त कुमार पट्टनायक**
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-1
5.	संपादक का नाम	:	**श्री योगेश अवस्थी**
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	संपादक, कमरा नं. 337-बी, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-1
6.	इन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र की कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के स्वामी हैं	:	रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001

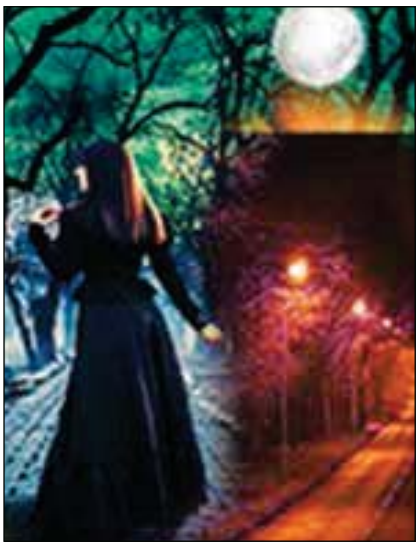
मैं, प्रशान्त कुमार पट्टनायक, एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के अनुसार सही है।

प्रशान्त कुमार पट्टनायक, प्रकाशक

खौफ

मंजु, संयुक्त निदेशक, रेलवे बोर्ड

ऑफिस से घर पहुंचते ही संजना ने गैस के चूल्हे पर मंदिर में जरूरतमंद बच्चों के लिए दाल-चावल पकने के लिए रख दिया। स्नान के पश्चात्, वह शाम की पूजा करने में व्यस्त हो गई। आज उसे मंदिर अकेले ही जाना था। विवेक का ऑफिस से फोन आ गया था कि उसे घर पहुँचने में देर हो जाएगी। पूजा के पश्चात्, दाल-चावल एक बड़े से टिफिन में भरकर वह मंदिर की ओर चल दी। शाम के 7 बज चुके थे। बारिश का मौसम होने से अंधेरा छा गया था। इस सुहाने मौसम में उसे पैदल मंदिर जाना अच्छा लग रहा था। मन में हनुमान चालीसा बोलते हुए, वह मंदिर की ओर जा रही थी। सड़क सुनसान थी, उसे आगे-पीछे दूर तक कोई नजर नहीं आ रहा था। सड़क के दोनों ओर कोठियां थी, परंतु ऐसा लग रहा था जैसे सुनसान पड़ी हों। सड़क के दोनों ओर वृक्षों को देखकर ऐसा लगता था, जैसे वे आपस में गले मिलकर अपना हाल बतिया रहे हों। संजना कुछ ही दूर चली थी कि अचानक तेज गति से एक काले रंग की कार उसके पास आकर रूक गई। इस घटना को नजर अंदाज करते हुए संजना अपनी सामान्य गति से चलती रही। घर से मंदिर का रास्ता मुश्किल से पांच मिनट का था।



मंदिर पहुंचकर उसने हनुमानजी की पूजा-अर्चना की और मंदिर के बाहर बैठे गरीब बच्चों को दाल-चावल बाँटने लगी। संजना बचपन से ही अपने माता पिता के साथ हर मंगलवार गरीब बच्चों को दाल-चावल बाँटने जाती थी। ये संस्कार उसे माता-पिता से मिले थे। शादी के पश्चात् संजना और विवेक ने इसे कायम रखा। शादी के एक साल के बाद भी शायद ही कोई ऐसा मंगलवार होगा, जब वह विवेक के साथ मंदिर में गरीब बच्चों के लिए दाल-चावल न बना कर ले गई हो।

मंदिर में नियमित रूप से आने वाले बच्चे भी उसके द्वारा लाए गए दाल चावल का आनंद उठाते थे और बेसब्री से हर मंगलवार उसका इंतजार करते थे। अपना नियम पूरा करने के बाद वह उसी रास्ते से घर की ओर चल दी। रास्ते में उसे फिर वही गाड़ी नजर आई। उसमें से कुछ लोगों की अजीब अवाजें आ रही थीं परंतु वह इन सब को नजरअंदाज करते हुए अपने घर आ गई। विवेक के ऑफिस से आने से पहले ही वह सारे काम निपटा लेना चाहती थी। उसने टीवी ऑन कर लिया और रसोई में खाना बनाने में जुट गई।

न्यूज चैनल पर पर ब्रेकिंग न्यूज को बार-बार दिखाया जा रहा था कि एक लड़की को एक रात पहले किसी कार में अगवा कर लिया गया था। जो लड़की उसके साथ थी, वह अगवा की गई लड़की के साथ उसी के साथ रहती थी। दोनों लड़कियाँ दिल्ली में नौकरी के सिलसिले में आई थीं। दोनों की नौकरी इस किस्म की थी कि उन्हें घर पहुंचने में अक्सर रात के 12 बज जाते थे। रात को दोनों सहेलियों ने एक साथ खाना खाया रात के लगभग 2 बजे थे घर के पास बने ढाबे पर चाय पीने के लिए चल दीं। घर से कुछ ही कदम चली होंगी कि एक कार उनके पास आकर रूकी, कार में बैठे लोगों ने कार का पिछला दरवाजा खोलकर एक लड़की को अंदर खींच लिया और कार तेज गति से चली गई। दूसरी लड़की जब तक कुछ समझने की स्थिति में होती, गाड़ी उसकी नजरों से ओझल हो चुकी थी। वह गाड़ी का नंबर भी न देख पाई थी। अगवा की गई लड़की की लाश उसी जगह अगले दिन सुबह मिली थी। इस खबर को भिन्न-भिन्न पहलुओं से न्यूज चैनल बार-बार दिखाये जा रहे थे। संजना को कुछ घबराहट-सी महसूस होने लगी। उसने चैनल बदल कर अपना पसंदीदा सीरियल देखना चाहा, पर उसके जहन में बार-बार वही लड़की वाली खबर गूंज रही थी। रसोई का काम पूरा करके उसने टीवी बंद कर दिया, और अपने कमरे में सुस्ताने के लिए लेट गई।

आंखें बंद करते ही उसकी आंखों के सामने फिर से टीवी में दिखाई जाने वाली खबर से जुड़े दृश्य एक-एक कर आने लग गए और उसके साथ ही उसकी आंखों के सामने वह काली गाड़ी नजर आई, जिसे उसने मंदिर के रास्ते में आते और जाते वक्त देखा था। एक सिहरन सी उसके सारे शरीर में दौड़ गई। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह एक खतरनाक हादसे से सही सलामत बच निकली हो। सिर्फ यही एहसास ही उसके शरीर के रोम रोम से निकल रहा था और वह फूट-फूट कर रोने लगी।

कॉल बेल बजते ही उसने अपने आंसुओं को पोंछते हुए दरवाजा खोला, तो विवेक को सामने खड़े पाया। उससे लिपट कर वह जोर-जोर से रोने लगी। विवेक हैरान था, अभी कुछ देर पहले तो उसकी संजना से बात हुई थी और वह काफी खुश लग रही थी। विवेक ने अपनी बाजू का सहारा देते हुए संजना को सोफे पर बिठाया और चुप कराने की कोशिश करते हुए रोने का कारण पूछा, परंतु वह कुछ नहीं बोल पा रही थी। पूछने पर वह विवेक को और जोर से पकड़ लेती। संजना का मूड बदलने के लिए विवेक ने उससे पूछा, क्या उसने घर में कोई चूहा या छिपकली देख ली थी। संजना की

तरफ से कोई प्रतिक्रिया न पा, विवेक नहीं समझ पा रहा था कि ऐसा क्या हो गया था जो संजना कुछ बताने जैसी स्थिति में भी नहीं थी। उसका ध्यान बांटने के लिए विवेक ने टीवी ऑन करना चाहा, परंतु संजना ने उसे ऐसा करने से रोक दिया। विवेक ने पूछा, "क्या तुम मंदिर गई थीं?''

संजना ने "हां'' में सिर हिलाकर जवाब दिया।

"क्या वहां कुछ बात हुई?" विवेक ने धीरे से पूछा।

संजना ने "नहीं" में सिर हिलाकर जवाब दिया।

संजना को बात न करने के मूड में देखकर विवेक ने बात का विषय बदलते हुए कहा, ''मुझे बहुत जोर की भूख लगी है। आज खाना मैं लगाता हूँ। तुम हाथ-मुंह धो लो। मैं भी हाथ मुंह धोकर आता हूँ। जब तुम्हारा मन हो तब बता देना कि तुम किस बात से परेशान हो। मिलकर समाधान ढूंढेंगे। बात मुझसे 'शेयर' नहीं करोगी, तो मुझे कैसे मालूम पड़ेगा तुम्हें क्या परेशानी हो रही है।"

विवेक ने खाना डाइनिंग टेबल पर लगा दिया। दोनों चुपचाप खाना खा रहे थे। खाना वास्तव में लाजवाब बना था और विवेक इसे व्यक्त किए बिना भी न रह सका। खाना खाने के बाद विवेक ने बाहर जाकर आइसक्रीम खाने की इच्छा व्यक्त की। उसके ऐसा कहते ही संजना ने उसे दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया और बोली, "नहीं, आगे से डिनर के बाद आइसक्रीम खाने का मन हो तो हम पहले से ही लाकर फ्रिज में रख लिया करेंगे। हम रात को अकेले बाहर नहीं निकलेंगे।"

विवेक हैरान सा संजना की ओर देखने लगा, उनकी शादी के बाद यह पहला मौका था जब संजना आइसक्रीम के लिए मना कर रही थी। आइसक्रीम के लिए उसकी तबीयत या मौसम भी कभी आड़े नहीं आते थे।

संजना सिर झुका कर कुछ देर चुप बैठी रही और फिर विवेक से पूछा, "क्या आपने उस लड़की को अगवा किए जाने वाली खबर पढ़ी है?"

विवेक ने कहा, "हां, पर उसका हमारे आइसक्रीम खाने से क्या संबंध है?"

संजना ने फिर पूछा, "और आपने वह खबर भी पढ़ी थी जिसमें एक लड़का और लड़की रात को पिक्चर देखकर लौट रहे थे, तो एक बस के चार आदमियों ने उन दोनों के साथ बदसलूकी की। इसके बाद उसने आज शाम की घटना हूबहू दोहरा दी। घर आकर टीवी देखा तो पता चला कि कैसे एक गाड़ी इन दो लड़कियों के पीछे से आई और एक लड़की को अगवा करके ले गई। बस, तब से मेरे जहन से यह बात नहीं निकल रही है कि मैं आज किसी ऐसे हादसे से बचकर निकली हूं। मेरे आगे पीछे कोई नहीं था। सड़क बिल्कुल सुनसान थी और अगर किसी बुरी घड़ी में कार के अंदर बैठे व्यक्ति मुझे कार में खींच लेते तो मैं अगले दिन अखबार की सुर्खियां बनकर रह जाती," ऐसा कहते-कहते संजना फिर जोर से फफक-फफक कर रो पड़ी।

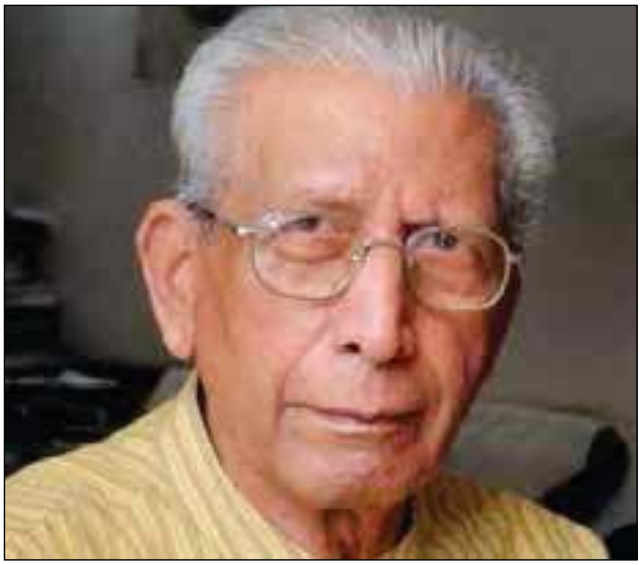
यह सब सुन, पल भर के लिए विवेक भी स्तब्ध रह गया। वह एकदम से नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या बोले। किसी खबर पर प्रतिक्रिया दिखाना और आपबीती होने पर प्रतिक्रिया दिखाने में बहुत फर्क होता है, पर संजना की हालत देखते हुए विवेक ने खुद को संभाला और उसे सांत्वना देते हुए कहा, "जो बात हुई नहीं है, उसके बारे में क्यों इतना परेशान हो रही हो? मेरी उन लड़कियों के साथ पूरी सहानुभूति है, परंतु किसी को भी यह नहीं भूलना चाहिए कि कानून की भी कुछ सीमाएं होती हैं और दरिंदगी किसी भी कानून की भाषा नहीं समझती। उससे निबटने के लिए व्यक्ति को समाज और परिवार द्वारा निर्धारित की गई सीमाओं का पालन करना चाहिए। तुम घबराओ मत। यू आर ए ब्रेव गर्ल। क्या तुम भूल गई, जब तुम्हारे पिताजी रात में अचानक बीमार पड़े और डॉक्टर का फोन नहीं मिल रहा था तो तुम इस बात की परवाह किए बिना कि रात के 12 बजे रहे थे, और डॉक्टर को बुलाने के लिए दौड़ पड़ी और उन्हें लेकर वापस उनकी गाड़ी में घर आई थीं। उन लड़कियों जैसी घटनाओं से हमें यह एहसास होता है कि हम चाहे जितना भी प्रगतिशील हो जाएं, परंतु जहाँ तक सुरक्षा का सवाल है, व्यक्ति की सुरक्षा की जिम्मेदारी उसकी अपनी जिम्मेदारी भी है। कानून हर किसी के घर के अंदर बैठकर उसे सुरक्षा नहीं दे सकता। तुम बिल्कुल सही कहती हो, मैं कोई फिल्मी हीरो नहीं हूं, जो ऐसी आपदा आने पर तुम्हारी या स्वयं की रक्षा भी कर पाऊं। हां, इसके लिए हमें स्वयं ही यह एहतियात बरतनी होगी कि सामान्य कार्यों को सामान्य समय में ही पूरा कर लिया जाए और रात के समय बिना किसी आवश्यक कार्य के घर से बाहर न जाया जाए। शास्त्रों में भी कहा गया है कि शाम ढलने के बाद तामसी शक्तियां शक्तिशाली हो जाती हैं।"

विवेक से बात करने के बाद संजना के चेहरे पर छाई राहत साफ झलक रही थी। उसने पूछा, ''अगर आप फिर कभी आफिस से देर से आए या किसी वजह से मेरे साथ मंदिर न जा पाएं तो क्या मुझे अपना नियम तोड़ना पड़ेगा?", कहते-कहते संजना एकदम रुआंसी हो गई। विवेक ने उसे प्यार से दिलासा देते हुए कहा, ''मेरे कहने का यह मतलब कदापि नहीं था। समय आने पर इसका कुछ हल निकाला जा सकता है कि नियम और श्रद्धा दोनों ही में कोई खलल न पड़े। अच्छा, अब अगर तुम अपने खौफ से बाहर आ गई हो तो मुझे तुम्हें अपने आफिस में आज घटी एक रोचक घटना को बताना है।"

संजना को सुनने के मूड में देख विवेक ने घटना को और भी रोचकपूर्ण ढंग से बताना शुरू किया। जैसे-जैसे घटना आगे बढ़ रही थी, संजना के चेहरे से खौफ और तनाव के चिन्ह गायब होते जा रहे थे। उसे पता ही न चला कि विवेक की बाँहों में कब उसकी आँख लग गई। सोती हुई संजना के चेहरे पर विवेक ने एक नजर डाली। वहाँ उसे सिर्फ मासूमियत ही दिखाई दी। खौफ का अब वहाँ नामोनिशान नहीं था। ■

डॉ. नामवर सिंह – साहित्य के शिल्पकार

उमेश कुमार शर्मा, निजी सचिव, रेलवे बोर्ड



डॉ. नामवर सिंह को साहित्य का शिल्पकार कहना ही उचित होगा क्योंकि समाज को साहित्य-संस्कृति से जोड़ने का जो बेजोड़ कार्य इन्होंने किया है, वह न केवल इस क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिये बल्कि समग्र समाज के लिये महत्त्वपूर्ण है। समाज उनकी प्रगतिशील सकारात्मक सामाजिक सोच को अपना ले तो एक उन्नत समाज के निर्माण की कल्पना को साकार किया जाना बहुत ही सुगम हो जायेगा।

हिन्दी साहित्य के आकाश में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद आलोचना में संभवत: सर्वाधिक काम डॉ. नामवर का ही रहा है। चूंकि उनकी शैली आचार्य शुक्ल की 'लोकमंगलवादी' से अलग 'लोकोन्मुखी क्रांतिकारी' थी जो कि उनके गुरू आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से प्रेरित थी, इसलिये डॉ. नामवर को आचार्य शुक्ल से गुरुतर नहीं तो कमतर भी नहीं आंका जा सकता।

आधुनिक कविता की व्यावहारिक आलोचना की दृष्टि से डॉ. नामवर सिंह की 'कविता के नये प्रतिमान' का कोई सानी नहीं। इससे पूर्व छायावाद के बाद की नई कविता को पढ़ने की कोई व्यवस्थित दृष्टि नहीं थी, जिसकी वजह से उन्हें खारिज कर दिया जाता था। लेकिन नामवर की इस पुस्तक ने ने प्रगतिशील साहित्य को बखूबी स्थापित कर दिया। हालांकि नामवर को लगता था कि उनका मुख्य काम 'दूसरी परंपरा की खोज' में है। साहित्य पर उनकी समझ इतनी विस्तृत और समग्र थी कि वे स्वयं उत्कृष्ट हिन्दी साहित्य का पैमाना बन गये थे। पिछले कई दशकों से हिन्दी साहित्य की कोई भी बात हो बिना नामवर के जिक्र के पूरी नहीं होती थी।

डॉ. नामवर सिंह ने 'आलोचना' त्रैमासिक के प्रधान संपादक एवं 'जनयुग' साप्ताहिक, जो कि कम्युनिस्ट पार्टी का मुखपत्र था, के सम्पादक के रूप में भी कार्य किया। 'आलोचना' का स्तर इतना ऊंचा था कि उसमें किसी की रचना के छप जाने का अर्थ था कि उसे साहित्य समाज की स्वीकृति मिल गई है।

कुल मिलाकर 65 से अधिक वर्षों तक उन्होंने साहित्य की सेवा की। उनके व्याख्यान इतने सरस होते थे कि सुनने वाला मंत्रमुग्ध सा रह जाता था। यही वजह थी कि पिछले 30-35 वर्षों में उन्हें न सिर्फ भारत के बल्कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों से व्याख्यान देने के लिये बुलावा मिला और वे गये भी। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन हिन्दी साहित्य को अर्पित कर दिया था, जिसका परिणाम यह हुआ कि वे नई पीढ़ी के लिये एक जीवंत उदाहरण बन गये थे।

डॉ. नामवर सिंह का जन्म 28 जुलाई, 1926 को वाराणसी के जीयनपुर नामक गांव में हुआ था। इन्होंने अपनी आरंभिक शिक्षा वाराणसी के उदय प्रताप कॉलेज से प्राप्त करने के बाद उच्च शिक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की। स्व. श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी की देख-रेख में आपने शोध किया, और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में ही अध्यापन कार्य शुरू किया। आप जोधपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर और फिर अध्यक्ष भी रहे। इसके उपरांत डॉ. नामवर सिंह जवाहर लाल विश्वविद्यालय में भी प्रोफेसर रहे तथा हिन्दी भाषा के विकास से जुड़े विभिन्न अन्य पदों पर भी रहे।

रचना संसार – 'कविता के नये प्रतिमान', 'दूसरी परंपरा की खोज', 'इतिहास और आलोचना' तथा 'वाद विवाद सम्वाद' आदि हैं।

पुरस्कार- आपके अप्रतिम योगदान के लिये आपको कई महत्त्वपूर्ण सम्मान भी मिले, जिसमें हिन्दी अकादमी दिल्ली का 'शलाका सम्मान' (1991), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की ओर से 'साहित्य भूषण सम्मान' (1993), भारत भारती सम्मान, शब्दसाधक शिखर सम्मान एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान (2010) तथा 'कविता के नये प्रतिमान' के लिए केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा भी सम्मानित किया जाना शामिल है।

डॉ. नामवर सिंह को सर्वाधिक प्रसिद्धि एक आलोचक के रूप में मिली, क्योंकि इन्होंने साहित्य में बहुत से रूढ़िवादी चलन चाहे वो कविता से जुड़े हों या किसी विशेष परिस्थिति में लिखी गई रचनाओं पर सीधे-सीधे सवाल उठाये। इनकी दूरदर्शिता ही थी, कि इन्होंने समाज को साहित्य के माध्यम से न केवल साहित्य की सृजनशीलता के बारे में बताया, बल्कि यह भी बताया कि 'उत्पादन' और 'सृजन' का सीधा-सीधा संबंध है। इसलिये जो सामाजिक, नैतिक और आर्थिक मूल्यों का निर्माता है, वही सौन्दर्य, कला और साहित्यिक मूल्यों का भी निर्माता है। साहित्य और कला के जरिये समाज की चेतना को सदैव जागृत रखा जा सकता है। डॉ. नामवर सिंह का दृष्टिकोण था कि भगवान ने आंखे आगे दीं, पैर आगे चलने के लिये दिये, यानि वे चाहते हैं कि सदैव आगे बढ़ा जाये और नवीनता को स्वीकारा जाये। समाज का उत्थान भी तभी तीव्र गति से होगा जब हम नवीनता का स्वागत करें।

डॉ. नामवर सिंह की पहचान एक ओर 'गुरुवर' की थी तो दूसरी ओर उन्हें साहित्य का 'योद्धा' भी कहा जा सकता है, क्योंकि इनकी विचारधारा इतनी प्रखर थी कि साहित्य जगत में सभी इनके मुरीद हुए, चाहे वे इनके आलोचक ही क्यों न रहे हों। व्यक्तिगत दुराग्रह से दूर वे स्वयं अपने आलोचकों का पूरा सम्मान करते थे। इनके व्यक्तित्व की ऐसी खासियतों की वजह से ही इनकी लोकप्रियता सदैव शिखर पर रही।

डॉ. नामवर सिंह 19 फरवरी, 2019 को पंचतत्त्वों में विलीन हो गये, किंतु उनका दृष्टिकोण जो कि सृजनता और नवीनता से परिपूर्ण था, हमारे न केवल साहित्य जगत का बल्कि प्रत्येक क्षेत्र का मार्गदर्शन सदैव करता रहेगा तथा समाज की चेतना को जागृत रखने के लिये आलोचना का महत्त्व भी बताता रहेगा। सृजनशीलता के जो नये आयाम डॉ. नामवर सिंह ने स्थापित किये वह सदैव हमारा मार्गदर्शन करेंगे। ■

एक कवि के रूप में भी डॉ. नामवर ने काफी प्रतिष्ठा हासिल की

उनकी **'नभ के नीले सूनेपन में'** की पंक्तियां

नभ के नीले सूनेपन में
हैं टूट रहे बरसे बादर
जाने क्यों टूट रहा है तन
वन में चिड़ियों के चलने से टूट रहे पत्ते चरमर
जाने क्यों टूट रहा है मन!
घर के बर्तन की खन-खन में
हैं टूट रहे दुपहर के स्वर
जाने कैसा लगता जीवन!

'बुरा जमाना' की कुछ पंक्तियां जो उनकी सकारात्मक सोच की परिचायक हैं।

गंध हो गई मानव की मानव को दुस्सह।
शिकवा मुझ को है जरूर लेकिन वह तुम से -
तुम से जो मनुष्य होकर भी गुम-सुम से
पड़े कोसते हो बस अपने युग को रह-रह

कोसेगा तुम को अतीत, कोसेगा भावी
वर्तमान के मेधा! बड़े भाग से तुम को
मानव-जय का अंतिम युद्ध मिला है चमको
ओ सहस्र जन-पद-निर्मित चिर-पथ के दावी!

तोड़ अद्रि का वक्ष क्षुद्र तृण ने ललकारा
बद्ध गर्भ के अर्भक ने है तुम्हें पुकारा। ■





दक्षिण पूर्व रेलवे मुख्यालय, गार्डनरीच, कोलकाता में 2 फरवरी को बांग्लादेश के उप उच्चायुक्त एवं विरासत प्रेमियों के साथ एक हेरिटेज वॉक का आयोजन किया गया

महाप्रबंधक द्वारा खड़गपुर मंडल के दीघा–तमलुक एवं पांसकूड़ा–खड़गपुर का निरीक्षण

महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे, पी.एस. मिश्रा ने 29 जनवरी को दक्षिण पूर्व रेलवे के सभी विभागों के प्रमुख एवं मंडल रेल प्रबंधक, खड़गपुर के साथ दीघा–तमलुक एवं पांसकूड़ा–खड़गपुर खंड का निरीक्षण किया। अपने निरीक्षण के दौरान महाप्रबंधक ने विभिन्न कार्यों का उद्घाटन भी किया, जिसमें प्री कास्ट गैंग टूल रूम, चिल्ड्रन पार्क, नवीनीकृत पार्सल कार्यालय, पर्यवेक्षक एवं अधिकारी विश्राम गृह एवं आरपीएफ आउट पोस्ट शामिल है। महाप्रबंधक ने तमलुक की ओर बढ़ते हुए हल्दी नदी पर बने महत्त्वपूर्ण रेलवे ब्रिज का भी निरीक्षण किया। बेहतर रखरखाव के लिए इंजीनियरिंग के दृष्टिकोण से



छोटे रेलवे पुलों का भी निरीक्षण किया। दीघा–तमलुक खंड का निरीक्षण करते समय श्री मिश्रा ने सभी अधिकारियों से ट्रेन परिचालन सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने एवं अत्यधिक सुरक्षा सुनिश्चित करने को कहा। महाप्रबंधक ने केबिन, स्टेशन प्रबंधकों के कमरे एवं बुकिंग कार्यालयों का निरीक्षण किया और संबंधित कर्मचारियों से ड्यूटी के समय बातचीत की। महाप्रबंधक ने यात्री सुविधा, आरामदायक यात्रा, समय की पाबंदी एवं सुरक्षा एवं संरक्षा पर विशेष जोर दिया। रेलवे ट्रैक की स्थिति का आकलन करने के लिए पांसकूड़ा एवं खड़गपुर के बीच 130 किमी प्रति घंटे की गति का परीक्षण किया। ■

दक्षिण पूर्व रेलवे के शालीमार स्टेशन पर वाई–फाई सेवा का शुभारंभ

11 जनवरी को दक्षिण पूर्व रेलवे के शालीमार स्टेशन पर मुफ्त वाई–फाई सेवा का शुभारंभ किया गया। इस स्टेशन के रेल उपयोगकर्ता के लिए वाई–फाई की सुविधा उच्च गति के अत्याधुनिक इंटरनेट प्रदान करने के लिए रेलटेल द्वारा शुरू की गई है। शालीमार स्टेशन के यात्री अब अपनी मनपसंद पुस्तक या संगीत डाउनलोड कर सकते हैं एवं बिना किसी रुकावट के वर्तमान समाचार में लॉग इन कर सकते हैं। दक्षिण पूर्व रेलवे के विभिन्न स्टेशनों पर यात्रियों के बीच वाई–फाई के प्रयोग की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसे ध्यान में रखते हुए दक्षिण पूर्व रेलवे के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले नौ और स्टेशनों पर चालू वित्त वर्ष (2018–19) में मुफ्त वाई–फाई सेवा प्रदान की जाएगी। ये स्टेशन चाकुलिया, हल्दिया, तमलुक, दातन, मिदनापुर, मेचेदा, संतरागाछी, बागनान एवं पांसकूड़ा है। दक्षिण पूर्व रेलवे



ने अब तक 14 स्टेशनों पर मुफ्त वाई–फाई सेवा की शुरुआत की है, जिससे लाखों यात्री मुफ्त इंटरनेट सेवा का लाभ ले रहे हैं। शालीमार के अलावा, दक्षिण पूर्व रेलवे के 13 स्टेशनों पर पहले से ही वाई–फाई की सुविधा उपलब्ध है जो खड़गपुर, रांची, दीघा, पुरुलिया, हटिया बोकारो, टाटानगर, राउरकेला, झाड़सुगुड़ा, बालासोर, महालिमारुप, बाराबंबू एवं तिरूलडीह हैं।

भारतीय रेल में कुल 765 रेलवे स्टेशनों में वाई–फाई सुविधा प्रदान की गई है जो आम जनता के लिए बहुत उपयोगी साबित हुई है। भारतीय रेल निकट भविष्य में कम से कम 2000 स्टेशनों और अंत में सभी स्टेशनों में वाई–फाई सुविधाओं का विस्तार करने की योजना बना रहा है। ■

उत्कृष्ट कार्य के लिए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक को ईटी नाउ 'सीएसआर लीडरशिप अवॉर्ड'

पश्चिम रेलवे नेटवर्क द्वारा सेवित क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास की दिशा में किये गये उत्कृष्ट कार्यों के लिए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता को 18 फरवरी को मुंबई में ईटी नाउ चैनल द्वारा आयेजित समारोह में प्रतिष्ठित कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सब्लिटी (सीएसआर) लीडरशिप अवॉर्ड सुश्री सैली ली-मेयर सारोगान सिटी, फिलिपिंस और पॉल सदरलैंड, अध्यक्ष एवं सीईओ, सदरलैंड द्वारा प्रदान किया गया। श्री गुप्ता के नेतृत्व में पश्चिम रेलवे की टीम ने यात्रियों को बेहतर एवं और अधिक सुरक्षित रेल यात्रा उपलब्ध कराने, मूलभूत ढाँचे के विकास में अपूर्व वृद्धि करने और प्रमुख परियोजनाओं को तेज गति से पूरा करने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। ■



वलसाड स्थित क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान की दीक्षांत परेड का निरीक्षण



वलसाड स्थित क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान में रेल सुरक्षा बल के जवान के 97 वें बैच के 7 फरवरी को आयोजित दीक्षांत समारोह के अवसर पर दीक्षांत परेड का मुख्य अतिथि पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता ने निरीक्षण कर मार्च पास्ट की सलामी ली।(फोटो)। इस परेड में कठिन परिश्रम के बाद पास आउट होने वाले 36 जवानों ने भाग लिया। श्री गुप्ता ने जवानों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशंसा की तथा उन्होंने रेल सुरक्षा बल को यात्री सुरक्षा के संबंध में समर्पण और तत्परता से कार्य करने की सलाह दी। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे के रेल सुरक्षा बल के महानिरीक्षक सह प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त ए.के. सिंह, मुंबई सेंट्रल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक सुनील कुमार, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त एस.आर. गांधी तथा विभिन्न मंडलों के अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं निरीक्षक उपस्थित थे। ■

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा स्तन कैंसर एवं एनीमिया जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन एवं पश्चिम रेलवे के कार्मिक विभाग के संयुक्त तत्वावधान में प्रधान कार्यालय की महिला कर्मियों हेतु 19 फरवरी को स्तन कैंसर एवं एनीमिया के विषय पर जगजीवन राम अस्पताल की वरिष्ठ मंडल चिकित्सा अधिकारी डॉ. सविता गांगुर्डे द्वारा एक शिक्षाप्रद कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती अर्चना गुप्ता एवं कार्यकारिणी सदस्याएँ भी उपस्थित थीं। इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी महिला कर्मियों को डॉ. सविता द्वारा प्रस्तुतीकरण देकर उनका ज्ञानवर्द्धन किया गया, क्योंकि यह विषय उन महिलाओं से काफी हद तक सम्बंधित है, जो निरंतर ऐसी स्थितियों का सामना करती हैं और इससे सम्बंधित ज्ञानवर्द्धन से कोई भी महिला सम्बंधित कमियों एवं असामान्यता से समय रहते निपट सकती हैं। ■



कार्य समीक्षा बैठक का आयोजन

पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक राजीव अग्रवाल की अध्यक्षता में रेल परियोजनाओं की कार्य समीक्षा बैठक 28 जनवरी, को महाप्रबंधक बैठक कक्ष, गोरखपुर में आयोजित की गई। बैठक में अपर महाप्रबंधक आनंद प्रकाश, सभी प्रमुख विभागाध्यक्ष, वाराणसी एवं इज्जतनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक, लखनऊ मंडल के अपर मंडल रेल प्रबंधक तथा वरिष्ठ मंडलीय अधिकारी उपस्थित थे। संगोष्ठी को संबोधित करते हुये महाप्रबंधक ने कहा कि वित्त वर्ष 2018-19 में आबंटित बजट के अनुरूप निर्माण परियोजनाओं का कार्य निर्धारित समय पर पूरा कर लिया जाय। उन्होंने कहा कि निर्माण परियोजनाओं के वे सभी कार्य जो अंतिम चरण में हैं, उसे 31 मार्च से पूर्व पूरा कर लें। महाप्रबंधक ने कहा कि संरक्षा एवं यात्री सुविधा से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करें। उन्होंने समपारों पर भूतपूर्व सैनिकों की गेट मित्र के रूप में तैनाती तथा स्वीकृत सीमित ऊँचाई के सब-वे के निर्माण में तेजी लाने हेतु दिशा-निर्देश दिया। तीनों मंडलों के मंडल रेल प्रबंधकों ने अपने-अपने मंडलों में निर्माण परियोजनाओं में हुई प्रगति



से महाप्रबंधक को अवगत कराया तथा कार्य के दौरान आने वाली बाधाओं को दूर करने हेतु महाप्रबंधक के दिशा-निर्देश प्राप्त किये। मुख्य प्लानिंग एवं डिजाइन इंजीनियर संजय मिश्र ने बैठक का संचालन करते हुये रेल परियोजनाओं पर मदवार धन की उपलब्धता तथा कार्य में हुई प्रगति का ब्यौरा प्रस्तुत किया। ■

आरसीएफ कर्मियों हेतु विशेष स्वास्थ्य जांच अभियान

आरसीएफ के कर्मचारियों की स्वास्थ्य की जांच को लेकर एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। यह अभियान रेल मंत्रालय के निर्देशों के अनुसार आरसीएफ के चीफ मेडिकल ऑफिसर डॉ. एसपीएस सचदेवा और एसिस्टेंट चीफ मेडिकल ऑफिसर डॉ. सुरेश चन्द के मार्गदर्शन में चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत आरसीएफ वर्कशॉप में फर्स्ट एड पोस्ट पर तथा कर्मचारियों के कार्य स्थल पर जाकर



उनके स्वास्थ्य की जांच की जा रही है। आरसीएफ के प्रशासनिक कार्यालय में कर्मचारियों के स्वास्थ्य को जांचने के लिए मेडिकल टीम ने डॉ. पुनीत गंभीर की अगुवाई में 250 से अधिक कर्मचारियों के स्वास्थ्य जांच की गई। इस अभियान के तहत आरसीएफ के सभी कर्मचारियों की जांच की जायेगी, और रोगी कर्मचारियों को स्वास्थ्य के लिए परामर्श दिया जायेगा। ■

पूर्व तट रेलवे अस्पताल में दुर्लभ सर्जरी

पूर्व तट रेलवे सेन्ट्रल हॉस्पिटल में पैर की जन्मजात वक्रता से जुड़ी एक दुर्लभ सर्जरी सफलतापूर्वक संपन्न की गयी। अतिरिक्त मुख्य स्वास्थ्य निदेशक (सर्जन) डॉ. जे. जेना के नेतृत्व में कंसल्टेन्ट डॉ. देवाशिष मिश्रा, कंसल्टेन्ट डॉ. एस. त्रिपाठी तथा अतिरिक्त मुख्य स्वास्थ्य निदेशक (एनेस्थेसिया) डॉ एस.के. सिराजुद्दीन की टीम ने इस सर्जरी को सफलतापूर्वक संपन्न किया। इस सर्जरी में 24 वर्षीय एक युवती के दाहिने पांव की सर्जरी की गयी, जो कि स्काइलाइन डीफॉर्मिटी से पीड़ित





थी। साधारणतया इस तरह की सर्जरी अतिविशिष्ट दक्षता वाले चिकित्सा महाविद्यालयों या बड़े कॉरपोरेट अस्पतालों में की जाती है। भुवनेश्वर के कई नामी अस्पतालों ने भी इस ऑपरेशन की जटिलता के कारण इस सर्जरी को करने में अपनी अक्षमता जतायी थी। पूर्व तट रेलवे के मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ. एस.के. महांति एवं सेन्ट्रल हॉस्पिटल की चिकित्सा निदेशक डॉ एस.के. सेनापति ने इस सफल सर्जरी के लिए चिकित्सक दल को बधाई दी है। ■





अध्यक्ष, मध्य रेल खेलकूद संघ व प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक, मध्य रेल, शैलेंद्र कुमार एवं वरिष्ठ उप महाप्रबंधक, मध्य रेल एवं अध्यक्ष, मध्य रेल अधिकारी संघ, एस.के. पंकज, अध्यक्षा, मध्य रेल महिला कल्याण संगठन, श्रीमती ममता शर्मा, श्रीमती किरन शर्मा, श्रीमती तनुजा पंकज, उप महाप्रबंधक एवं सचिव मध्य रेल अधिकारी संघ, दिनेश वशिष्ठ तथा अन्य सदस्ययों की उपस्थिति में वार्षिक स्पोर्टस मीट समारोह-2019 का उद्घाटन करते हुए (बाएं) एवं छत्रपति शिवाजी स्टेशन पर हेरिटेज गली फेज-II का उद्घाटन करते हुए महाप्रबंधक, मध्य रेल, डी.के. शर्मा (दाएं)

महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे द्वारा आगरा मंडल का वार्षिक निरीक्षण

27 फरवरी को महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, राजीव चौधरी द्वारा आगरा मंडल के आगरा कैंट-पलवल खंड का वार्षिक निरीक्षण किया गया। महाप्रबंधक ने एक मेजर कर्व, दो लेवल क्रॉसिंग, दो गैंग, पांच स्टेशनों (आगरा कैंट, कीथम, मथुरा जं., वृन्दावन एवं शोलाका) एवं रेलवे कॉलोनी (शोलाका), एक मेजर ब्रिज, यार्ड, टर्न ऑउट, यूएसएफडी टीम आदि का निरीक्षण किया।



महाप्रबंधक ने आगरा कैंट स्टेशन पर वेटिंग रूम का निरीक्षण करते हुए वहां पर्यटन स्थलों की सुंदर तस्वीरें लगाने के निर्देश दिए। इसके उपरांत उन्होंने खाने के स्टॉल और वाटर वेंडिंग स्टाल भी देखे। उन्होंने वहाँ से एक गिलास पानी खरीदकर स्टॉल पर पानी की गुणवत्ता को जांचा।

मथुरा जंक्शन का निरीक्षण करते समय श्री चौधरी ने संरक्षा बढ़ाने के लिए रोलिंग इन-रोलिंग आउट परीक्षा के लिए सीसीटीवी व्यवस्था का उद्घाटन किया। मालगाड़ियों के अंडर गियर्स की जांच के लिए उन्हें रोबोटिक मॉडल भी दिखाये गये। महाप्रबंधक ने रेनोवेट किए गए विश्रामालयों और डिजिटल रेल संग्रहालय को देखने के बाद गार्ड और ड्राइवर रनिंग रूम और क्रू लॉबी का भी दौरा किया और वहां सुविधाओं में आवश्यक सुधार हेतु सुझाव भी दिए।

महाप्रबंधक के साथ प्रमुख विभागाध्यक्ष, मंडल रेल प्रबंधक आगरा एवं आए अधिकारियों की टीम ने सभी पांच स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं, प्लेटफॉर्मों, शौचालयों, पीआरएस, बुकिंग ऑफिस, साफ-सफाई आदि का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान महाप्रबंधक ने आगरा कैंट से पलवल मार्ग पर ट्रैक पैरामीटर की, समपार पर सड़क की सतह की जांच की साथ ही ट्रैक अनुरक्षण से जुड़े उपकरणों को भी देखा। इस दौरान महाप्रबंधक द्वारा कर्मियों को उनके कार्य के प्रति समर्पण, ज्ञान एवं प्रदर्शन के लिये व्यक्तिगत/ग्रुप नकद पुरस्कार प्रदान किये गये। उन्होंने शोलाका रेलवे कालोनी में पौधारोपण भी किया। उन्होंने कहा कि रोलिंग इन-रोलिंग आउट हट पर सीसीटीवी की व्यवस्था निश्चित रूप से ट्रेन संचालन को और अधिक संरक्षित बनाएगी। ■

गुवाहाटी में महिला रेलवे सुरक्षा बल जयमती वाहिनी दस्ते की शुरुआत

लामडिंग मंडल के रेलवे सुरक्षा बल ने 19 जनवरी को पूर्वोत्तर क्षेत्र में महिलाओं की सुरक्षा में एक और महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है। पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के महानिरीक्षक सह-प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त बी.बी. मिश्रा ने कामाख्या रेलवे स्टेशन पर वीरांगना रानी जयमती के नाम पर 'जयमती वाहिनी' नामक महिला दस्ता, जिसमें रेलवे सुरक्षा बल की महिला सब इंस्पेक्टर तथा कांस्टेबल शामिल हैं, का आधिकारिक शुभारंभ किया। 'जयमती वाहिनी' का मुख्य उद्देश्य गुवाहाटी क्षेत्र के आसपास रेलवे परिसर एवं ट्रेनों के अंदर महिला सुरक्षा को मजबूत करना है। 'जयमती वाहिनी' ने गुवाहाटी एवं कामाख्या रेलवे स्टेशन में महिला यात्रियों से बातचीत कर, अपने कार्य का प्रारंभ किया। ट्रेन अथवा प्लेटफॉर्म में किसी भी तरह की आपातकाल में यात्रियों को अविलंब 182 डायल करने को भी कहा गया। इस अवसर पर रेलवे सुरक्षा बल के वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त रघुवीर चूका ने वर्ष 2018 के दौरान रेलवे सुरक्षा बल ने बताया कि लामडिंग मंडल में रेलवे सुरक्षा बल द्वारा कम से कम 301 महिलाओं तथा बच्चों को सहायता प्रदान की गई। ■

आरडीएसओ में गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस पर जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

भंडार निदेशालय आरडीएसओ, लखनऊ द्वारा गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (जीईएम) राष्ट्रीय मिशन हेतु, सूचना, शिक्षा, एवं संवाद कार्यशाला का आयोजन 11 फरवरी को आरडीएसओ कॉन्फ्रेंस हॉल में किया गया। यह कार्यशाला मुख्य रूप से जेम के माध्यम से सर्विसेज के क्रय पर केंद्रित थी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आरडीएसओ महानिदेशक वीरेन्द्र कुमार ने गवर्नमेंट ई-मार्केट प्लेस की मुख्य विशेषताओं के बारे में विस्तृत रूप से बताया कि यह सरकारी विभागों की सामान्य प्रयोग की मदों तथा सेवाओं की ऑनलाइन खरीद पूर्ण करने वाला विशाल प्लेटफार्म है। जेम का मुख्य उद्देश्य सरकारी खरीद में पारदर्शिता, क्षमता और गति को बढ़ाना है। उन्होंने अधिकारियों को आरडीएसओ में सामान्य प्रयोग की सभी मदों तथा सेवाओं के लिये जेम पोर्टल का प्रयोग करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक, भंडार एस.के. गुप्ता ने सभी प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि जेम एक ऐसा ई-पोर्टल है जहाँ सभी खरीददार, विक्रेता, आपूर्तिकर्ता



और वेंडर एक ही प्लेटफार्म पर उपलब्ध होते हैं। इस कार्यशाला में प्रदीप कुमार, जेम सलाहकार एवं प्रकाश मीरानी एडीशनल सीईओ, जेम एवं उनकी टीम द्वारा प्रजेंटेशन दिया गया, जिसके अंतर्गत जेम से क्रय के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। सेमिनार में आरडीएसओ के अधिकारी, कर्मचारी तथा वेंडर्स ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में प्रश्नोत्तर के दौरान आरडीएसओ तथा जेम के प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिभागियों की शंकाओं का निवारण किया गया। कार्यक्रम का संचालन एस. के. वर्मा निदेशक, भंडार आरडीएसओ द्वारा किया गया। ■

आरडीएसओ में प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

13 फरवरी को आरडीएसओ में मशीनों की उत्पादन, रख-रखाव व स्पेयर पार्ट्स की आपूर्ति के लिए एस. सी. श्रीवास्तव, कार्यकारी निदेशक, ट्रैक मशीन, आरडीएसओ के नेतृत्व में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें रेलवे बोर्ड से निदेशक ट्रैक मशीन, आरडीएसओ के ट्रैक मशीन के साथ उत्तर रेलवे, उत्तर मध्य रेलवे, उत्तर पूर्व रेलवे, पूर्व मध्य रेलवे के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ-साथ लगभग 25 औद्योगिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें छोटी मशीनों की खरीद, उनके रखरखाव, स्पेयर्स आदि पर चर्चा की गयी। औद्योगिक प्रतिनिधियों ने रेलपथ के रखरखाव हेतु सम्भावित अन्य नई मशीनों के बारे में बताया जो हल्की व चलाने में आसान हैं। इससे रेलपथ का रखरखाव सुगमता पूर्वक



किया जा सकेगा और रेल यात्रा को सुरक्षित, सुगम व समयबद्ध किया जा सकेगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में महानिदेशक, आरडीएसओ, वीरेन्द्र कुमार ने भाग लिया। ■

आरडीएसओ कर्मियों के प्रशिक्षण हेतु क्षमता निर्माण केंद्र की स्थापना

आईआईटी, कानपुर के सहयोग से क्षमता निर्माण केंद्र (सीबीसी)/आरडीएसओ में 18 से 21 फरवरी तक 'थ्री फेज प्रोपल्शन सिस्टम' पर एक लघु पाठ्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 20 प्रतिभागियों ने आरडीएसओ से भाग लिया। महानिदेशक, आरडीएसओ, वीरेन्द्र कुमार और एडीजी (एल.टी.आर.आर), ए.के. मिश्रा ने इस अवसर पर उपस्थित आईआईटी, कानपुर संकाय एवं प्रतिभागियों को संबोधित किया। प्रोफेसर संदीप आनंद, विभागाध्यक्ष, इलेक्ट्रिकल



इंजी., आईआईटी कानपुर और प्रो.ए. आर. हरीश, विभागाध्यक्ष, इलेक्ट्रिकल इंजी., आईआईटी, कानपुर ने भी उपस्थित प्रतिभागियों को अपना संबोधन दिया। यह पाठ्यक्रम आईआईटी, कानपुर प्रयोगशाला में प्रतिभागियों की प्रयोगशाला यात्रा के साथ सफलतापूर्वक समाप्त हो गया। निकट भविष्य में इस क्षमता निर्माण केंद्र (सीबीसी) से आरडीएसओ और भारतीय रेल के लिए खुद को एक 'वर्ल्ड क्लास आरएंडडी ट्रेनिंग सेंटर' के रूप में विकसित करने की उम्मीद है। ■

मेट्रो रेल में 28वें वार्षिक खेलकूद का आयोजन



मेट्रो रेलवे, कोलकाता में 15 फरवरी को 28वें वार्षिक खेलकूद का उद्घाटन महाप्रबंधक, मेट्रो रेलवे, कोलकाता, पी.सी. शर्मा द्वारा किया गया। मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक और अन्य अधिकारियों ने विभिन्न कार्यक्रमों के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

रेलवे सुरक्षा बल ने सिक्योरिटी हेल्पलाइन 182 के प्रचार हेतु ग्रीन मैराथन में भाग लिया



24 फरवरी को ईको पार्क, राजेरहाट में आयोजित ग्रीन मैराथन में मेट्रो रेलवे के 117 रेलवे सुरक्षा कर्मियों ने भाग लिया। इस दौरान बल कर्मियों ने यात्रियों को जागरूक करने के लिए अखिल भारतीय सुरक्षा सहायता नंबर 182 को प्रदर्शित करने वाली टी शर्ट पहनी हुई थी, ताकि मेट्रो परिसर में यात्रियों को सुरक्षित माहौल प्रदान किया जा सके

तिरुप्परंकुंड्रम स्थित यांत्रिक विभाग प्रशिक्षण केंद्र में वीडियो पाठ्यक्रम

तकनीशीयन कर्मचारियों को, एलएचबी कोच सीबीसी की लॉकिंग व्यवस्था और लोको सीबीसी की, एलएचबी सीबीसी के साथ सही कप्लिंग सुनिश्चित करने के लिए तिरुप्परंकुन्ड्रम के यांत्रिक प्रशिक्षण केंद्र में वीडियो पाठ्यक्रम शुरू किया गया है ताकि कर्मचारी व्यवहारिक ज्ञान जैसे ही सैद्धांतिक ज्ञान पाएँ।

20 फरवरी को इस पद्धति के वीडियों को तमिल और हिंदी में भी तैयार किया गया और वहाँ के अनुदेशक/इंस्ट्रक्टर शंकरलिंगम, वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर, यांत्रिक जितिन नेलसन, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर, मदुरै मंडल, दक्षिण रेलवे ने हिंदी और तमिल पाठ के डीवीडी प्रदान किये। इस शुभ अवसर पर विवेक शर्मा, मंडल यांत्रिक इंजीनियर, मदुरै मंडल, पद्मनाभन, मंडल बिजली इंजीनियर, परिचालन, मदुरै मंडल, ए. श्रीनिवासन, राजभाषा अधिकारी, मदुरै मंडल उपस्थित थे।



आशा है कि इससे तकनीशियन अपने काम को अच्छी तरह समझेंगे। उल्लेखनीय है कि विरुदुनगर के यातायात विभाग की संपूर्ण प्रशिक्षण सामग्री को हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी में हाल ही में परिवर्तित किया गया है। ■

आप को यह अंक कैसा लगा : हमें जरूर बतायें

फोन, व्हाट्सऐप, एस.एम.एस. : 9717641075 या 9909909966

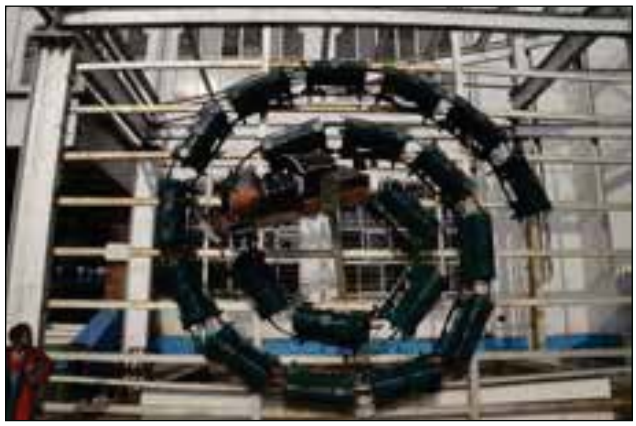
ईमेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें : संपादक, भारतीय रेल, 337-बी, रेल भवन, रेल मंत्रालय, नई दिल्ली-110001





वडोदरा मंडल विशेषांक









भारतीय रेल में विकास की ओर अग्रसर वडोदरा मंडल

देवेन्द्र कुमार
मंडल रेल प्रबंधक, वडोदरा मंडल



पश्चिम रेलवे का वडोदरा मंडल भारतीय रेल के व्यस्ततम रूटों में से एक दिल्ली-मुंबई व अहमदाबाद-मुंबई मार्ग पर स्थित होने की वजह से अपनी अलग पहचान व उपयोगिता दर्शाता है। एक नजरिये से देखें तो रोज मंडल में तकरीबन 223 ट्रेनों व 164 मालगाड़ियों का इंटरचेंज होता है। मंडल के अकेले वडोदरा रेलवे स्टेशन से रोज लगभग 90 हजार पैसेंजरों का आवागमन भी होता है। गायकवाड़ बरोड़ा स्टेट रेलवे द्वारा स्थापित कभी नैरो गेज गाड़ियों का हब कहे जाने वाला वडोदरा मंडल वर्तमान में एक असाधारण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। मंडल के प्रमुख वडोदरा स्टेशन के समीप हाई स्पीड रेल के आने के चलते स्टेशन की महत्ता बढ़ेगी। वहीं दूसरी तरफ सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा स्टेच्यू ऑफ यूनिटी को रेल कनेक्टिविटी मिलने के बाद वडोदरा मंडल के विकास के लिये के नये आयाम भी खुलेंगे।

मंडल का भौगोलिक परिदृश्य

वडोदरा मंडल का गठन बाम्बे बरोड़ा एंड सेंट्रल इंडिया रेलवे ने 1 अगस्त, 1956 में किया। 1 अप्रैल, 2003 को वडोदरा मंडल से अलग होकर अहमदाबाद के रूप में नये मंडल का सृजन हुआ। वर्तमान में मंडल 1295 रूट किमी के अंतर्गत ताप्ती नदी के उत्तरी छोर पर उत्राण स्टेशन से गेरतपुर स्टेशन तथा मुंबई-दिल्ली मार्ग के गोधरा तक विस्तारित है। पश्चिम रेलवे का वडोदरा मंडल गुजरात के 10 जिले- वडोदरा, सूरत, नर्मदा, खेड़ा, भरुच, आनंद, अहमदाबाद, साबरकांठा, पंचमहल एवं छोटा उदेपुर को कवर करता है। मंडल में ब्रॉडगेज की 799.65 रूट किमी तथा नैरोगेज की 156.86 रूट किमी पर लाइनें बिछी हुई हैं, जिसके अंतर्गत 173 रेलवे स्टेशन आते हैं। इनमें वडोदरा, भरुच, आनंद, नडियाद, अंकलेश्वर व गोधरा स्टेशन प्रमुख हैं।

वित्तीय वर्ष में मंडल द्वारा अर्जित आय

चालू वित्तीय वर्ष 2018-19 में नवंबर महीने तक वडोदरा मंडल की उद्गमीत आय रु. 1589.69 करोड़ रही, जो कि पश्चिम रेलवे की कुल आय का 13.99 प्रतिशत है। मंडल ने चालू वित्तीय वर्ष के नवंबर महीने तक पिछले वर्ष की तुलना में 18.46 प्रतिशत बढ़ोतरी दर्ज की, जो रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित लक्ष्य से 12.18 प्रतिशत अधिक है।

वडोदरा प्रतिदिन सबसे अधिक औसतन रैक (709 वैगनों प्रतिदिन) लोडिंग करने वाला मंडल है। जल्द ही पिलोल मे एचपीसीएल की साईडिंग के शुरू होने से मंडल का पश्चिम रेलवे के मालभाड़ा आय में अतिरिक्त योगदान होगा। निकट भविष्य मे कंटेनर कॉरपोरेशन द्वारा वरनामा में प्राइवेट फ्रेट टर्मिनल बनाया जायेगा जिससे मंडल के माल भाड़ा में और अधिक बढ़ोतरी दर्ज होने की अपेक्षा है।

आधारभूत संरचना व नई परियोजनाएं

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी को रेल कनेक्टिविटी

15 दिसम्बर, 2018 के केवड़िया के नये अत्याधुनिक रेलवे स्टेशन की शिलान्यास पट्टिका का अनावरण तथा केवड़िया के प्रस्तावित निर्माण स्थल पर भूमिपूजन किया गया। प्रस्तावित केवड़िया स्टेशन की इमारत का कार्य डभोई-चांदोद (18 किमी) की गेज रूपांतरण परियोजना सहित केवड़िया तक 32 किमी की नई लाइन के रूप में विस्तार परियोजना के अंतर्गत होगा। प्रस्तावित केवड़िया स्टेशन भवन का निर्माण 20 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से किया जायेगा और इसे पूर्ण करने की लक्ष्य तारीख 4 सितम्बर, 2019 रखी गई है। इस तरह इस प्रोजेक्ट के निर्माण के बाद केवड़िया से कुछ ही दूर स्थित भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की दुनिया की सबसे ऊँची मूर्ति - स्टैच्यू ऑफ यूनिटी भारतीय रेल प्रणाली के मानचित्र पर अंकित हो जायेगी। स्टेशन निर्माण के शुरुआत से ही यह ग्रीन बिल्डिंग प्रमाणन के साथ भारत का पहला रेलवे स्टेशन होगा और स्टेशन में इमारत के डिजाइन में एकीकृत सर्वोत्तम प्रौद्योगिकियों, पर्यावरण चेतना और मनभावन घटकों का समावेश होगा।

नई रेल परियोजना के प्रमुख फायदे

बेहतर रेल कनेक्टिविटी के जरिये क्षेत्र के समग्र विकास को बढ़ावा, किफायती परिवहन का नया साधन, मुंबई-दिल्ली मेन लाइन वाया वडोदरा के साथ ब्रॉड गेज रेल कनेक्टिविटी के जरिये स्थानीय व्यापार एवं उद्योगों को बढ़ावा, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन को बढ़ावा।

छोटा उदेपुर-धार नई बड़ी लाइन

1347.26 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाली 157 किमी लंबी छोटा उदेपुर-धार नई बड़ी लाइन मोटी सादली तक पूर्ण हो चुकी है मोटी सादली से अलीराजपुर तक कार्य पूर्ण हो चुका है। हाल ही में मंडल की ट्रेन सं. 59121/59120 प्रतापनगर-छोटा उदेपुर पैसेंजर को मोटी सादली तक विस्तारित

करने का निर्णय लिया गया है। विस्तारित मार्ग पर इस ट्रेन को पडालिया रोड स्टेशन पर ठहराव प्रदान किया जायेगा।

फायदे

- यह परियोजना मध्य प्रदेश और गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों के विकास को गति प्रदान करेगी।
- इंदौर-धार के बीच नई बड़ी लाइन बनने से इंदौर और वडोदरा के बीच एक वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध होगा, जिसके फलस्वरूप इंदौर-उज्जैन-रतलाम-वडोदरा रेल मार्ग की तुलना में 109 किमी तक की दूरी कम हो जायेगी।
- नागदा-वडोदरा के बीच राजधानी मार्ग पर यातायात का दबाब कम होगा।
- यह परियोजना अलीराजपुर जिले और जोबट तालुका (मध्य प्रदेश) के बीच रेल सम्बद्धता प्रदान करेगी।

वडोदरा का सैटेलाइट टर्मिनल के रूप में छायापुरी स्टेशन का विकास

छायापुरी को 4 लाइनें एवं 2 प्लेटफॉर्म वाले सैटेलाइट स्टेशन के रूप में नेशनल हाई स्पीड रेल कॉरपोरशन लिमिटेड की वित्तीय सहायता से लगभग 40 करोड़ की लागत से विकसित किया जा रहा है। स्टेशन बिल्डिंग का निर्माण कार्य पूर्ण करने का लक्ष्य मार्च, 2019 तक प्रस्तावित है। नये स्टेशन बिल्डिंग के निर्माण के अलावा कई पैसेंजर सुविधाओं के कार्य भी किए जाएंगे।

छायापुरी सैटेलाइट स्टेशन निर्माण के फायदे

- अहमदाबाद के लिये दिल्ली व मध्य प्रदेश से आने वाली लगभग 6-7 ट्रेनें वडोदरा स्टेशन न आकर छायापुरी से डाइवर्ट हो जायेगी, इसके फलस्वरूप वडोदरा स्टेशन पर ट्रेनों का भार कम हो जायेगा व यात्रियों का समय भी बचेगा।
- वडोदरा स्टेशन पर यात्रियों की भीड़ भी कम हो जायेगी। इसके अलावा वडोदरा व सूरत के बीच ट्रेनों की समय पालनता में भी सुधार आयेगा।

वडोदरा यार्ड में अहमदाबाद और रतलाम के यातायात का सेग्रीगेशन (पृथक्करण)

वर्तमान में गोधरा और अहमदाबाद से आने वाली गाड़ियाँ वडोदरा डी केबिन पर आकर मिलती है। जिसके कारण वडोदरा आरआरआई में संचालन की समस्याएं पैदा होती हैं सेग्रीगेशन के बाद दोनों तरफ अप-डाउन के लिये अलग-अलग मेन लाइन हो जायेगी इससे ट्रेनों की स्पीड बढ़ेंगी एवं भीड़ भी कम हो जायेगी। वडोदरा सी व डी केबिन के वडोदरा यार्ड आरआरआई के साथ मर्ज होने के बाद ट्रेन ऑपरेशन स्मूथ हो जायेगा। करचिया में भी नयी सुविधा बन जायेगी यह कार्य वडोदरा-गोधरा व वडोदरा-अहमदाबाद के बीच ट्रेनों की गति बढ़ाने के लिये किया जा रहा है।

बजट 2017-18 में प्रस्तावित 692.26 करोड़ लागत से बनने वाला 70.80 किमी आनंद-गोधरा डबलिंग कार्य की मंजूरी हाल में ही मिल चुकी है।

वडोदरा रेलवे स्टेशन का रि-डेवलपमेंट

स्टेशन पर आने वाले यात्रियों की यात्रा को यादगार बनाने लिये स्टेशन रि-डेवलपमेंट किया जा रहा है। इस प्रोजेक्ट में लगभग 17.99 करोड़ रुपए की लागत आयेगी, जिसमें निम्नलिखित कार्य किये जायेगें।

- अग्र भाग का नवीनीकरण।
- स्टेशन के एंट्री व एग्जिट गेट का ब्यूटीफिकेशन।
- एंट्री गेट से कोनकोर्स व नामित पार्किंग एरिया में जाने वाले रास्ते को यात्रियों के लिये कवर किया जायेगा।
- पैसेंजर सूचना के लिये इनफॉर्मेशन गैलरी की सुविधा।
- दिव्यांग फ्रेंडली सुविधायें।
- कोनकोर्स व प्लेटफार्म के एरिये को सुन्दर बनाने के लिये ग्रेनाईट फ्लोरिंग व फाल्स सीलिंग की जायेगी।
- वेटिंग हॉल रेनोवेशन व पैसेंजर सुविधाओं में भी बढ़ोतरी की जायेगी जैसे - वाटर पॉइंट, टॉयलेट आदि।
- वेटिंग रूम के साथ एक्सक्लूसिव फूड कोर्ट।
- वडोदरा की प्रसिद्ध लोकल आर्ट व सेल्फी पॉइंट का डिस्प्ले किया जायेगा।

मंडल की उपलब्धियां (अप्रैल से दिसंबर, 2018 तक)

- बिछड़े बच्चों को मिलाने के लिए वडोदरा रेलवे स्टेशन पर चाइल्ड लाइन 1098 पर 24 घंटे चलने वाली चाइल्ड हेल्प डेस्क की शुरुआत बच्चों द्वारा की गई। भारतीय रेल में चाइल्ड हेल्प डेस्क लगाने वाला वडोदरा 97वां स्टेशन बना।



- 12 कोचों की शुरू की गई।
- पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'प्लास्टिक प्रदूषण को हरायें' थीम पर रेड्यूस, रियूज एवं रिसाइकल के संकल्प के साथ वडोदरा रेलवे स्टेशन पर बोटल क्रशिंग मशीन लगाई गई।
- गाँधी जयंती के अवसर पर मंडल के भरुच स्टेशन पर ओएनजीसी द्वारा सीएसआर के तहत लगायी नम्मा टॉयलेट व

वात्सल्य फाउंडेशन की सेनेटरी नैपकिन वेडिंग मशीन लगाई गई।

- प्रताप नगर स्थित रेलवे ऑडीटोरियम में बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट अवधारणा पर भारत स्काउट गाइड की पाँच दिवसीय रीजनल लेवेल वोकेशनल हैंडीक्राफ्ट कोर्स के ग्रांड कैंप फायर के मौके पर प्रदर्शनी लगायी गई।
- विश्वामित्री रेलवे पर नवनिर्मित फुट ओवर ब्रिज का प्रारंभ।
- वडोदरा रेलवे स्टेशन पर स्टेशन के रि-डेवलपमेंट का भूमि पूजन व नवनिर्मित लेडीज वेटिंग रूम का उद्घाटन किया गया।
- पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के अंतर्गत केवड़िया में रखी गई अत्याधुनिक रेलवे स्टेशन की आधारशिला
- यात्रियों की सहूलियत व ओवरचार्ज से छुटकारा पाने के लिये वडोदरा मंडल ने नई पहल कर वडोदरा स्टेशन पर रेलवे सहायकों को रेट कार्ड प्रदान किये।
- वडोदरा मंडल के वडोदरा रेलवे स्टेशन पर हाल में ही एस्केलेटर व रैंप का उद्घाटन किया।
- भारतीय रेल फरवरी, 2019 को विरासत माह के रूप में मना रहा है। इस अवसर पर वडोदरा मंडल के तत्वावधान में भारतीय रेल के विरासत मूल्यों की ग्लोरी को दिखाने के लिये भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी (नायर) स्थित प्रताप विलास पैलेस से शुरू की हेरिटेज वॉक रेलवे म्यूजियम तक चली। नायर के डायरेक्टर जनरल प्रदीप कुमार तथा मंडल रेल प्रबंधक देवेन्द्र कुमार की अगुवाई में इस हेरिटेज वॉक में मंडल अधिकारी व उनकी फैमिली, फेकल्टी, एनआरटीए स्टूडेंट व अन्य लोगों ने भी हिस्सा लिया। विरासत माह के अवसर पर वडोदरा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म न. 6 पर विरासत प्रदर्शनी भी लगाई गई।



संरक्षा सेमिनार और कर्मचारी शिकायत कैम्प

1) वडोदरा मंडल में आयोजित संरक्षा सेमिनार और कर्मचारी शिकायत कैम्प में सभी विभागों के अधिकारी और कर्मचारी नियमित रूप से भाग लेते हैं।

2) संरक्षा सेमिनार और कर्मचारी शिकायत कैम्प प्रत्येक महीने में मंडल स्तर पर दो बार आयोजित किया जाता है। इसमें सभी संबंधित विभाग के अधिकारी भाग लेते हैं। यह सेमिनार



और कैम्प बड़े स्टेशनों जैसे ए-1, ए और यार्ड, क्रू व गार्ड लॉबी, लोको शेड, मेमू शेड और क्षेत्रीय प्रशिक्षण स्कूलों में मनाया जाता है। इसमें सभी विभागों के कर्मचारी भाग लेते हैं और उन्हें अपने-अपने विचारों को रखने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाता है। इससे क्षेत्रीय समस्याओं को समझने और उसके निराकरण करने में सुविधा होती है। संरक्षा सेमिनार और कर्मचारी शिकायत कैम्पों में भाग लेने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहित भी किया जाता है।

3) प्रत्येक सोमवार को सभी शाखा अधिकारियों की बैठक में संरक्षा के प्रति सजग होकर काम करने वाले कर्मचारियों को उनके अच्छे कार्यों के लिए प्रशस्ति पत्र के साथ-साथ नगद पुरस्कार से सम्मानित भी किया जाता है।

4) संरक्षा सेमिनार और कर्मचारी शिकायत के कैम्प को एक साथ रखने से कर्मचारियों की जो भी शिकायतें प्राप्त होती हैं, जैसे कर्मचारियों के सेवा रिकार्ड में इन्द्राज को अद्यतन करना, रेल सेवा में होने वाली परेशानी की जानकारी देना आदि सभी समस्याओं के निराकरण तुरंत कैम्प के दौरान ही कर दिया जाता है।

5) रात्रि निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर और वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त के साथ पेट्रोलिंगमेन के साथ मिलकर फील्ड में होने वाली उनकी समस्याओं का निराकरण किया जाता है।

स्वच्छता अभियान

1) वडोदरा मंडल पर स्वच्छता अभियान के दौरान विभिन्न स्टेशनों पर वडोदरा क्षेत्र के विशिष्ट नागरिकों ने भी उपस्थित रहकर इस अभियान को सफल बनाने में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया है। इस अवसर पर वडोदरा मंडल के सभी अधिकारी और एनजीओ संगठनों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया है।

2) वर्ष 2017-18 के दौरान वडोदरा मंडल के सभी ए-1



और ए स्टेशनों पर स्वच्छता अभियान को आगे बढ़ाने में अच्छी प्रगति हुई है।

3) वडोदरा मंडल पर निम्नानुसार स्वच्छता अभियान में निरन्तर वृद्धि हो रही है

स्टेशन	वर्ष 2017-18	वर्ष 2018-19	वृद्धि प्रतिशत
वडोदरा	15	25	10
अंकलेश्वर	28	63	35
भरुच	67	164	97
आणंद	91	179	79
नडियाद	75	114	39

मंडल के नये इनोवेशन

इ-ओप प्रोजेक्ट

प्रोजेक्ट ई-ओप लाइन बॉक्स को पूरी तरह से खत्म करने का प्रयास करता है। एलपी / गार्ड द्वारा किए उपयोग किये जाने वाले सामानों के वजन को कम करना, इसका मुख्य उद्देश्य है। मंडल की समस्त मेल/एक्सप्रेस, पैसेंजर एवं मेमू ट्रेनों का संचालन बिना लाइन बॉक्स के किया जा रहा है। वडोदरा मंडल द्वारा किये इनोवेशन प्रोजेक्ट ई-ओप वर्ष 2017-18 के लिए आईआर में तीसरी सर्वश्रेष्ठ नवाचार परियोजना का पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। उपरोक्त प्रोजेक्ट के सफलतापूर्वक संचालन के पश्चात् तत्कालीन अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड द्वारा पुरस्कार स्वरूप 50,000 रुपए की नगद राशि देकर सम्मानित किया गया।

- **फायदे**

i) बॉक्स के चढ़ाने और उतारने की आवश्यकता नहीं रहने के कारण गाड़ियों का अनावश्यक अविलंबन से बचा जा सकेगा।

ii) लाईन बॉक्स हटने के कारण प्लेटफॉर्म साफ-सुथरा दिखाई देगा, जिसके कारण यात्रियों का आसानी से आवागमन संभव रह सकेगा।

iii) लाईन बॉक्स उतारने तथा चढ़ाने हेतु बॉक्स बॉय की आवश्यकता नहीं रहेगी, जिससे प्रत्येक वर्ष वित्तीय बचत होगी।

iv) लाईन बॉक्स नहीं होने से खतरे के सिग्नल को पास करने की सम्भावना नहीं रहेगी, क्योकि ऐसा देखा गया है कि लोको पायलट गंतव्य स्टेशन आने पर अपना लाईन बॉक्स बंद करने में तथा प्रस्थान स्टेशन पर लाईन बॉक्स खोलने हेतु व्यस्त हो जाते है।

एन्वायरमेंट फ्रेंडली बायोटेक वेर्मी कम्पोस्टिंग प्लांट की शुरुआत

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के समापन समारोह के अंतर्गत स्वच्छ भारत - स्वच्छ रेल के तहत एक नयी पहल करते हुए प्रतापनगर रेलवे कॉलोनी में खाद तैयार करने के लिये एन्वायरमेंट फ्रेंडली बायोटेक वेर्मी कम्पोस्टिंग प्लांट की शुरुआत की गई।

अभी हाल में ही रेलवे बोर्ड स्तर के बेस्ट इनोवेशन अवार्ड के लिए वडोदरा मंडल द्वारा 3 इनोवेशनों का प्रोपोजल भेजा गया है।

1) वडोदरा शेड में यात्री इंजन में टूल बॉक्स की व्यवस्था। (Provision of Tool Box in passenger Locos of BRC Shed)

2) बिना इंजन उठाये उसी स्थिति में डब्ल्यूएपी5टीएम सपोर्ट आर्म का प्रतिस्थापन (In-Position replacement of WAP5 TM Support Arm without lifting of Loco)

3) टीएम हर्थ कपलिंग स्लीव का उसी स्थिति में बिना डब्ल्यूएपी5 लोको उठाए प्रतिस्थापना। (In-Position replacement of TM Hurth Coupling. Sleeve of WAP5 Loco without lifting of the Loco) ■



वडोदरा मंडल में पर्यटन के अवसर एवं विकास

प्रमोद गद्रे
अपर मंडल रेल प्रबंधक, वडोदरा मंडल



ऐतिहासिक पुष्ठभूमि

वडोदरा का इतिहास 3000 वर्ष से भी अधिक पुराना है। प्रारंभ में विशवित्री नदी के तट पर पहली बार बसी मानव बस्ती शनैः शनैः बढ़ती गई और बस्ती के किनारे की यह नदी शहर के बीचों बीच बहने लगी। वडोदरा मूलतः वट + उदरा = वडोदरा। इन दो शब्दों का संयोजन है अर्थात् जिसके उदर से वट वृक्षों की उत्पत्ति हुई वह स्थान वडोदरा कहलाया, जो अब बदलकर बड़ोदा कहलाने लगा। वडोदरा की भूमि वट वृक्षों के अनुकूल है फलतः अन्य नगरों की तुलना में यहां पर सबसे ज्यादा वट वृक्ष हैं। ऐतिहासिक कबीर वट इसकी प्रमाणिकता को और भी ज्यादा पुष्ट करता है। कालांतर में यही वडोदरा से पडोदरा उसके बाद बड़ौदा और अब कुछ लोग अंग्रेजी उच्चारण्रा व वर्तनी के प्रभाव से इसे बरोडा भी कहने लगे हैं। गायकवाड़ के शासन में बड़ौदा राज्य फलने फूलने लगा और इसकी सीमाएं सौराष्ट्र क्षेत्र के अमरेली जैसे दूरस्थ स्थानों तक फैली। लेकिन इसका वास्तविक वैभव लगभग 158 वर्ष पूर्व शुरू हुआ, जब दिव्य दृष्टा शासक एवं श्रेष्ठ संरक्षक श्री सर सयाजीराव गायकवाड़ (3) ने 1876 में शासन की बागडोर अपने हाथ में ली।

इस नगर के महल, बगीचे, मध्य युगीन किले आकर्षक सार्वजनिक भवन और संग्रहालय सयाजीराव गायकवाड़ (3) की दूरदर्शिता के ही परिणाम है। वडोदरा की संगीत, ललित कला और शिक्षा की अपनी एक सुंदर परंपरा है। जब सयाजीराव ने 14 वर्ष की तरुण अवस्था में शासन की बागडोर संभाली तब उन्होंने इन क्षेत्रों में बहुत ही रूचि दिखाई। उन्होंने न केवल लड़कियों के लिए प्राइमरी शिक्षा अनिवार्य कर दी, बल्कि सन् 1857 में बड़ौदा कॉलेज की नींव भी रखी। उस समय उनकी आयु मात्र 18 वर्ष की थी। आज वही कॉलेज अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है, जहां अनेक संकाय हैं जो अध्ययन एवं अध्यापन में कार्यरत हैं, बड़ी संख्या में विद्यार्थियों को अनेकों प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हो रही है। इस विश्वविद्यालय के शानदार गुंबज वाले भवनों तथा ललित कला संकाय आदि ने अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों को भी प्रेरित किया है।

छोटी लाइन का शुभारंभ

1879 में चली थी बापू गाड़ी : जानकारी के अनुसार डभोई-गोयागेट (प्रतापनगर) से भी डेढ़ वर्ष पूर्व डभोई-चांणोद बापूगाड़ी शुरू हुई थी। प्रथम बापूगाड़ी इस ट्रैक पर डभोई-मियाग्राम के लिए 8 अप्रैल, 1873 में पूर्व महाराजा मल्हारराव गायकवाड़ की ओर से शुरू की गई थी। सामाजिक व्यापार की दृष्टि से अच्छा प्रतिसाद मिलने से अप्रैल, 1879 में तत्कालीन महाराजा सयाजीराव तृतीय ने डभोई-चांणोद के बीच बापूगाड़ी शुरू की थी। डेढ़ वर्ष बाद जुलाई, 1880 में डभोई-गोयागेट (प्रतापनगर) का नैरोगेज रेलवे ट्रैक शुरू किया गया।

बैल खींचते थे ट्रेन : सूत्रों के अनुसार भूतकाल से लेकर वर्तमान तक चार प्रकार की ट्रेन दौड़ीं, जिनमें सन् 1863 में इंजन की जगह बैल ट्रेन खींचते थे। इसके बाद स्टीम इंजन आए, जो कोयले एवं पानी से चलते थे। कोयले की कमी को पूरा करने के लिए मिनि डीजल इंजन शुरू किए गए और अब ब्रॉडगेज होने से डीजल इंजनों से ट्रेन दौड़ेंगी।

डभोई - मियाग्राम नैरोगेज लाइन : एशिया द्वीप की पहली नेरोगेज लाइन जो गुजरात के डभोई और मियाग्राम के बीच हुआ करती थी। परंतु अब इस लाइन को बड़ी लाइन में परिवर्तित किए जाने का कार्य चल रहा है। भारत में कुछ हिल रेलवेज को छोड़कर विश्व में नेरोगेज लाइनों में पर गाड़ियों का वाणिज्यिक दृष्टि से संचालन कुछ नहीं है। रेलवे का यह प्रयास रहा है कि उन्हें बनाया रखा जाए। गुजरात में सभी लाइनें कुल 204 किमी हैं, जो मूलरूप से गायकवाड़ बरोड़ा स्टेट रेलवे की स्वामित्व वाली हैं। वडोदरा मंडल पर तीन छोटी ब्रांच लाइनों को छोड़कर सभी नेरोगेज लाइनों को वड़ी लाइन में परिवर्तित करने का कार्य प्रगति पर है।

तथापि अब इन छोटी ब्रांच लाइनों को संरक्षित करने पर सहमति हुई है:

1) मियाग्राम-चोरंदा-मालसर सेक्शन 38 किमी
2) चोरंदा-मोटीकोरल सेक्शन 19 किमी
3) बिलीमोरा-वघई सेक्शन (मुंबई मंडल) 63 किमी



वडोदरा मंडल पर प्रमुख पर्यटन स्थल : स्टेच्यू ऑफ यूनिटी : विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' न केवल भारतीय पर्यटकों बल्कि पूरे विश्व के पर्यटकों में काफी लोकप्रिय हुई है। इसकी उंचाई 182

मीटर है। वर्तमान में यहां पहुंचने के लिए सड़क मार्ग का ही सहारा लिया जा सकता है। जिसकी दूरी वडोदरा से लगभग 90 किमी है।

1) **प्रस्तावित केवड़िया रेलवे स्टेशन :** 15 दिसम्बर, 2018 को केवड़िया रेलवे स्टेशन का शिलान्यास किया।

इन नई परियोजना के मुख्य लाभ निम्नानुसार हैं:

- सुधारित रेल कनेक्टिविटी से क्षेत्र का संपूर्ण विकास
- मुंबई दिल्ली मुख्य लाइन वाया वडोदरा ब्रॉड गेज रेल कनेक्टिविटी के कारण स्थानीय व्यापार एवं उद्योगों में वृद्धि
- किफायती परिवहन का एक नया साधन
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन को बढ़ाया
- रोजगार के नए अवसर
- स्टेच्यू ऑफ यूनिटी तक रेल कनेक्टिविटी होगी

लक्ष्मी विलास महल : वडोदरा का लक्ष्मी विलास महल देश के सबसे आलीशान भवनों में से एक है। यह लंदन स्थित बकिंघम पैलेस से चार गुना बड़ा है। यह महल 500 एकड़ से ज्यादा क्षेत्रफल में फैला हुआ है।



हजीरा मकबरा : यह मकबरा हजीरा के नाम से जाना जाता है। इसमें कुत्बुद्दीन मुहम्मद खान, जो अकबर के पुत्र और उत्तराधिकारी सलीम के शिक्षक थे, तथा उनके पुत्र नौरंगखान, जो गुजरात में अकबर के शासनकाल में महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्त थे, की कब्रें हैं।



भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी : इस अकादमी को पूर्व में स्टाफ कॉलेज वडोदरा के नाम से जाना जाता था। वडोदरा में वर्ष 1952 में राजसी हरे-भरे परिवेश में स्थापित किया गया था। यह अकादमी प्रताप विलास पैलेस (1914 में निर्मित) में संचालित है तथा 55 एकड़ क्षेत्र में फैली हुई है जिसमें बगीचे, जंगल, मोर तथा प्रवासी पक्षियों का कोलाहल शामिल है।



राष्ट्रीय रेल तथा परिवहन संस्थान : यह संस्थान देश का पहला रेल विश्वविद्यालय है, जो वडोदरा शहर में भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी के परिसर में स्थित है।

सुरसागर झील : वडोदरा शहर के बीच में यह सुरसागर झील है जिसमें भगवान शिवजी की 120 फीट ऊंची मूर्ति है वर्तमान में इस झील का सौंदर्यीकरण का कार्य चल रहा है।



डाकोर : आणंद-गोधरा बड़ी रेल लाइन मार्ग पर स्थित डाकोर का रणछोड़जी मंदिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है। जहां भगवान श्रीकृष्ण ने शरण ली थी। वडोदरा से डाकोर की सड़क मार्ग दूरी लगभग 62 किमी है।



अरंविदो आश्रम : यह आश्रम 'अरविंद निवास', 'ओरो निवास' के नाम से जाना जाता है। यह महान भारतीय दार्शनिक का निवास स्थान है। इसमें 23 कमरें हैं यहां पुस्तकालय भी है।

कीर्ति मंदिर : इसे वर्ष 1936 में महाराज सयाजीराव गायकवाड़-III द्वारा बनवाया गया था। यहां महाभारत को दर्शाती राजा रवि वर्मा की पेन्टिंग देखने लायक हैं।

ईएमई मंदिर : यह मंदिर इलैक्ट्रिकल तथा मैकेनिकल विभाग को दर्शाता है। इस मंदिर को दक्षिणामूर्ति नाम सें भी जाना जाता है।

वडोदरा संग्रहालय एवं चित्रशाला : इसका निर्माण 1894 में कराया गया था, पुरातत्व और भूमिज्ञान से जुड़ी कई अहम और रोचक चीजें प्रदर्शित की गई हैं।

सयाजी बाग : यह बाग 45 हेक्टर क्षेत्रफल में फैला हुआ है, देश के सबसे बड़े बागों में से एक है।

चांपाने-पावागढ़ आर्कियोलॉजिकल पार्क : यह गुजरात का एक विश्व धरोहर स्थल है। यह वडोदरा से 50 किमी दूर है। यहां से आस-पास के काफी सुंदर नजारे देखे जा सकते हैं।

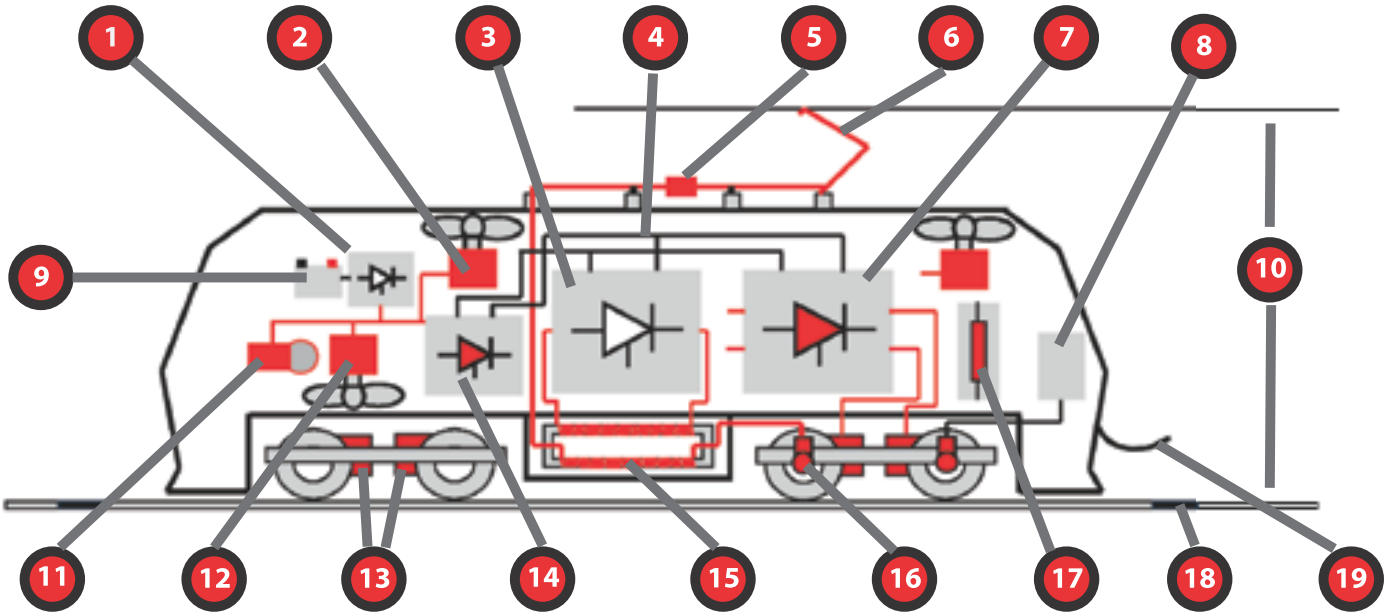
निमेटा बाग : निमेटा, वडोदरा शहर से 15 किमी दूरी पर एक गांव है, जहां महानगरपालिका का वाटर फिल्टर स्टेशन भी है। यहां एक सुंदर बगीचा और गेस्ट हाऊस भी है। निमेटा एक बहुत ही लोकप्रिय पर्यटन स्थल है।

सचमुच, वडोदरा मंडल पर पर्यटन के लिए भरमार है।■

Megger

Power on

रेलवे और सबस्टेशन अनुप्रयोगों के लिए विद्युत परीक्षण और मापन समाधान



Electrical testing application points for locomotive engines:

1. Auxiliary Rectifier
2. Loco Cooling fan
3. Main Rectifier
4. DC Link
5. Circuit Breaker
6. Pantograph
7. Main Inverter
8. Signalling Equipment
9. Battery
10. Cable Height
11. Compressor
12. Motor Blowers
13. Traction Motors
14. Auxiliary Inverter
15. Traction Transformer
16. Axel Brush
17. Breaking Resistor
18. Rail Bond
19. Inter Car Cables

To book a demo, email us at Marcomms.India@megger.com and get a 32 gb USB Drive.



Insulation Resistance Testing • Protection Relay Testing • Circuit Breaker

Battery Impedance Testing • Cable Diagnosis • Low Resistance Ohmmeter

Megger

Power on

Electrical test and measurement solutions for Railway and substation applications.





Railway and Substation electrical test and measurement solutions

Dealership Enquiries Solicited. Reach us at
Marcomms.India@megger.com

r Testers • Power Quality Analysers • Cable Height Meter • Oil Test Sets
rs • Transformer Testing • Cable Fault Location • General Electrical Testing

वडोदरा मंडल परिचालन विभाग – नवप्रवर्तन में अग्रणी



दीपक मूलचन्दानी
वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक, वडोदरा मंडल

वडोदरा मंडल मेल/एक्सप्रेस एवं माल भाड़ा यातायात के सम्बंध में पश्चिम रेलवे के महत्त्वपूर्ण मंडलों में से एक है। यह अति महत्त्वपूर्ण दिल्ली–मुंबई और अहमदाबाद–मुंबई मार्ग पर स्थित है। इसे 1956 में बी.बी एंड सी रेलवे द्वारा स्थापित किया गया था। एक समय इसे नैरो गेज गाड़ियों के हब के रूप में जाना जाता था। आज वडोदरा मंडल नवप्रवर्तन और निष्पादन के दृष्टिकोण से भारतीय रेल का प्रमुख मंडल है।

हाल के दिनों में, वडोदरा मंडल का कुल मार्ग किमी 797 (जिसमें सूरत–गोधरा से राजधानी मार्ग के 202 किमी) है। इसमें कुल 130 स्टेशन हैं और यह गुजरात राज्य के 10 जिलों को सेवा प्रदान करता है। इसमें दैनिक औसतन 223.6 मेल एक्सप्रेस / पैसेंजर ट्रेनों और 164 मालगाड़ियों का इंटरचेंज होता है।

समयबद्धता निष्पादन

वर्तमान वित्तीय वर्ष 2017–18 (नवंबर तक) में औसत समयबद्धता निष्पादन 85.6% है, जो कि गत वित्तीय वर्ष 2016–17 (नवंबर तक) की तुलना में 1.1% की गिरावट है। इसी तरह पैसेंजर गाड़ियों की समयबद्धता 2016–17 में 88.5% से घटकर 2017–18 में 84.4% हो गई। समयबद्धता के गिरने का मुख्य कारण ज्यादा से ज्यादा मेंटेनेंस ब्लॉक देना, रिपोर्टिंग पैटर्न में परिवर्तन, जिसमें वडोदरा मंडल पर गलत फीडिंग को बिलकुल रोक दिया जाना, मालगाड़ी इंटरचेंज में बढ़ोतरी (11% तक) और हॉलिडे स्पेशल (4.3% तक) की बढ़ोतरी होना, साथ ही अहमदाबाद एवं गोधरा से वडोदरा की ओर आने वाली गाड़ियों हेतु पथ के पृथक्करण के कारण अत्यधिक ब्लॉक देना शामिल है। क्रिटिकल सेक्शन के बीच लाइन क्षमता उपयोगिता जैसे कि वडोदरा–सूरत में 120 से ऊपर है और वडोदरा–गैरतपुर में 110 से ऊपर है।

मंडल ने इन समयपालन के आंकड़ों में सुधार के कदम उठाए हैं। ई.आई. (इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग) 4 स्टेशनों (नडियाद, गोधरा, छोटा उदेपुर एवं प्रतापनगर) में किया गया है। इसके बाद रनोली, बाजवा, पेटलाद एवं खम्भात में इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग का कार्य स्वीकृत है। इस वर्ष 8 स्थायी गति प्रतिबंध हटा दिए गए हैं और 2 को हटाने की योजना है। वडोदरा स्टेशन की भीड़भाड़ को कम करने के लिए प्रतापनगर एवं छायापुरी स्टेशन को सैटेलाइट स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है। भीड़भाड़ को कम करने के लिए रैक लिंक को तर्कसंगत बनाया जा रहा है और 6 स्टेशनों पर प्रथम लूप को यात्री गाड़ियों के संचलन हेतु योग्य किया गया है और अन्य 4 स्टेशनों का कार्य चल रहा है। परंपरागत रैक को एम.ई.एम.यू./डी.ई.एम.यू. द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है।

मालभाड़ा – प्रारंभिक लोडिंग

वडोदरा मंडल माल ढुलाई लोडिंग के मामले में पश्चिम रेलवे के प्रमुख मंडलों में से एक है। इसमें विविध प्रकार की वस्तु सामग्री है जिसमें उर्वरक, पी.ओ.एल, कंटेनर, स्टील, जिप्सम, कोयला और बॉक्साइट शामिल है। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के बाद वडोदरा मंडल प्रतिदिन सबसे अधिक औसतन रैक (709 वैगन प्रतिदिन) लोडिंग करने वाला मंडल है। यहाँ निजी साइडिंग, पी.एफ.टी. (निजी माल ढुलाई टर्मिनल) और गुड्स शेड का मिश्रण है, जहाँ से रैक लोड होते हैं। यहां 2 बंदरगाह यानि हजीरा और दहेज बंदरगाह के साथ लेन–देन है। उर्वरक की कुल लोडिंग के 29.1% के साथ मंडल अभी भी अधिकतम लोडिंग में आगे है।

मंडल ने नवंबर, 2018 के महीने में एक उपलब्धि हासिल की जब प्रारम्भिक लदान में 32% वाय.ओ.वाय. की वृद्धि दर्ज की गयी। चालू वर्ष (नवंबर तक) के दौरान वडोदरा मंडल ने मूल लदान में 10.1 मिलियन टन पंजीकृत किया जो कि इसी अवधि में पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 26.6% अधिक है। पी.ओ.एल लदान में कमी (पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 22.8% की कमी) के बावजूद यह वृद्धि हासिल की गयी है। मंडल ने कोयला (63%) और जिप्सम (59.4%) लोडिंग और इस्पात और आयातित चूना पत्थर से उत्पन्न नए यातायात में प्रभावशाली वृद्धि देखी है।



पिलोल में एक नई एच.पी.सी.एल. साइडिंग आ रही है जिसके परिणामस्वरूप

मार्च, 2019 के बाद प्रतिदिन पी.ओ.एल. के कम से कम 2 रैक लोड होंगे। इसके अलावा, आने वाले समय में ओ.पी.ए. एल, प्लासर और टी.बी.ई.ए. और कॉनकोर के पी.एफ.टी. के आने से भविष्य में लदान में और अधिक वृद्धि होगी।

प्रमुख परियोजनाएं

वडोदरा मंडल अब बुनियादी ढांचे की संपत्ति के निर्माण के मामले में असाधारण परिवर्तन से गुजर रहा है। वडोदरा स्टेशन के समीप हाई स्पीड रेल के गठन किए जाने से वडोदरा जंक्शन पर विशेष बदलाव से परिचालन में और उसकी महत्ता में वृद्धि होगी।

वडोदरा यार्ड में अहमदाबाद और रतलाम के यातायात का पृथक्करण

वर्तमान में गोधरा और अहमदाबाद से आने वाली गाड़ियां वडोदरा डी केबिन पर मिलती हैं। इस कारण वडोदरा आर. आर.आई. में संचालन की समस्याएं पैदा होती हैं और स्टेशन पर गाड़ियों का जमाव हो जाता है, खासकर तब, जब मेल एक्सप्रेस गाड़ियां अपने समय से नहीं आती हैं। दोनों दिशाओं (गोधरा और अहमदाबाद) से अप और डाउन लाइन पर गाड़ियों के संचलन से लाइन की गति में वृद्धि और जमाव में कमी आएगी।

वडोदरा के सैटेलाइट टर्मिनल के रूप में छायापुरी स्टेशन का विकास

छायापुरी को 4 लाइनों एवं 2 प्लेटफॉर्म वाले सैटेलाइट स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है। वडोदरा में इंजन रिवर्सल करके चलने वाली सभी ट्रेनें यहाँ से चलाई जाएंगी, जिसके कारण वडोदरा में गाड़ी जमाव में काफी कमी आएगी। यह वडोदरा में होने वाले वाले रिवर्सल समय में 30-45 मिनट वृद्धि करेगी और अन्य गाड़ियां, जो क्रॉस मूवमेंट के कारण बाहर खड़ी रहती हैं, के समय पालन में वृद्धि करेगी। इस कार्य को पूर्ण करने का लक्ष्य मार्च, 2019 तय किया गया है।

डभोई-चांदोद का गेज रूपांतरण और चांदोद से केवड़िया कॉलोनी तक नई लाइन

'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के उद्घाटन के मद्देनजर, केवड़िया अब पर्यटकों के लिए महत्त्वपूर्ण केंद्र बन जाएगा। इस संबंध में, डभोई से चांदोद स्टेशन तक गेज रूपांतरण स्वीकृत किया गया है। 15 दिसंबर, 2018 को राष्ट्रपति के द्वारा केवड़िया कॉलोनी में नए स्टेशन के निर्माण कार्य का उद्घाटन किया गया।

इनके अलावा, नई एचपीसीएल साइडिंग पिलोल स्टेशन पर, ओपीएल साइडिंग दहेज में, कॉनकोर का आईसीडी टर्मिनल वरनामा में और टीबीइए पीएफटी मियागाम स्टेशन पर बन रहा है।

ऑपरेटिंग डिपार्टमेंट के कर्मचारी कल्याण पहल

ऑपरेटिंग विभाग यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि इसके कर्मचारी, जो कि फ्रंटलाइन स्टाफ भी हैं, उनकी अच्छी तरह से देखभाल की जाए। हाल के दिनों में निम्नलिखित कदम उठाये गए हैं :

- ग्रुप 'डी' कर्मचारियों को 'जहाँ है वहीं पर' पदोन्नत करना।
- स्टेशन मास्टर और गार्ड कैडर में सभी रिक्तियों को भरना।
- ऑपरेटिंग विभाग के तहत रनिंग रूम की एयर कंडीशनिंग।
- अनावश्यक फॉर्म, रजिस्टरों आदि को खत्म करना।
- रोड साइड स्टेशनों पर कांटेवाला के लिए ड्यूटी हट का प्रावधान।
- 7 स्टेशनों पर ई-टी.एस.आर का प्रावधान किया गया है जिससे नियंत्रकों का कार्यभार कम हो गया है।
- परिचालन शाखा का नवीकरण किया गया है एवं नियंत्रण कार्यालय का नवीनीकरण और विस्तार किया जा रहा है।
- गोधरा और वडोदरा में नई सुविधायुक्त लॉबी का निर्माण।
- सभी नियुक्तियाँ, स्थानांतरण एवं पदोन्नति के आदेशों को ऑनलाइन कर दिया गया है।
- गोधरा-वडोदरा खंड में दूसरे स्टेशन मास्टर का प्रावधान किया जा रहा है।
- कर्मचारियों का स्वैच्छिक स्थानांतरण एवं समय पर पदोन्नति।
- मंडल प्रशिक्षण संस्थान में ट्रेनिंग तकनीक में सुधार।
- स्टेशनों के दोनों छोर पर उपकरण बॉक्स प्रदान किये गए हैं, जिसमें क्लैंप, सुरक्षा जंजीर इत्यादि रखे गए हैं।
- अधिक खुली जगहों के साथ स्टेशन भवनों का आधुनिक डिजाइन, लगे हुए शौचालय और भंडार कक्ष, जिसमें सभी उपस्कर को दीवार के अंदरूनी भाग में रखने योग्य बनाया गया है।

वडोदरा परिचालन शाखा में नव प्रवर्तन

समय के साथ बदलते पर्यावरण से साथ कदम मिलाकर चलते हुए अप्रचलित प्रक्रिया, अनावश्यकता और कार्य दक्षता में बढ़ोतरी करने पर जोर दिया गया है। सीमित संसाधनों के साथ, परिवर्तन नवाचारों को बाजार में उपलब्ध मौजूदा प्रौद्योगिकियों को अपना कर ही पूरा किया जा सकता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए, वडोदरा परिचालन विभाग ने आईटी प्रौद्योगिकी का उपयोग कर कई नव प्रवर्तन विशेषत: प्रोजेक्ट ई-ओप, लाइन बॉक्स उन्मूलन और ब्लॉक प्रबंधन प्रणाली करके भारतीय रेल में अपना नाम किया है।

प्रोजेक्ट ई-ओप (वर्ष 2017-18 के लिए आईआर में तीसरी सर्वश्रेष्ठ नवाचार परियोजना)

प्रोजेक्ट ई-ओप लाइन बॉक्स को पूरी तरह से खत्म करने

का प्रयास करता है। एलपी / गार्ड द्वारा उपयोग किये जाने वाले सामानों के वजन को कम करना, इसका मुख्य उद्देश्य है। इनको निम्नलिखित द्वारा प्राप्त किया गया है:

1. मैनुअल, डब्ल्यूटीटी इत्यादि की हार्ड कॉपी जैसे दस्तावेजों को डिजिटलीकृत संस्करणों के साथ टैबलेट में प्रतिस्थापित किया गया है।
2. भारी एचएस लैंप, टेल लैंप, प्राथमिक चिकित्सा किट को हल्के वजन (और मात्रा) संस्करण से बदला गया है।
3. सभी इंजनों / डी.ई.एम.यू / एम.ई.एम.यू के ड्राइविंग कैब में उपकरण रखने के लिए एक टूलबॉक्स लगाया गया है जो लोको पायलट द्वारा उपकरण ले जाने की आवश्यकता को दूर कर देगा।
4. लाइन बक्से के बदले ट्रॉली बैग प्रदान किया गया है।

ये कदम एल.पी / गार्ड द्वारा लगभग 4-5 किलो तक ले जाने वाली वस्तुओं के वजन को कम कर देगा।

विलंब के सटीक कारण और प्रकृति को निर्धारित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले रफ जर्नल अब ई-ओप के माध्यम से डिजिटलीकृत किए गए हैं, जिनको क्लाउड सर्वर के माध्यम से देखा जा सकता है।

लाभ

वित्तीय रूप से, ई-ओप परियोजना लाइन बक्से को संभालने पर व्यय को खत्म कर देगी। अधिकारियों द्वारा केंद्रीय रूप से उपयोग किए जाने वाले ई-रफ जर्नल उन्हें विलम्ब की प्रकृति पर सटीक जानकारी का विश्लेषण करने में सहायता कर सकते हैं, जिससे ट्रेनों की समयबद्धता और गतिशीलता में सुधार हो सकेगा। एक अनुमान के अनुसार इस परियोजना में प्रति एलपी / गार्ड प्रति वर्ष लगभग ₹25,000 की बचत होगी।

ई-ओप की विशेषताएं

सभी दस्तावेज (मैनुअल, डब्ल्यूटीटी इत्यादि) क्लाउड पर संग्रहीत किए जाएंगे। इन्हें केवल व्यवस्थापक अधिकारों वाले उपयोगकर्ताओं द्वारा अपडेट किया जा सकता है।

जब भी किसी भी मैनुअल में सुधार पर्ची जारी किया जाना हो, तो इसी मैनुअल को क्लाउड पर बदल दिया जाता है और सभी ई-ओप उपयोगकर्ताओं को ईमेल भेज दिया जाता है।

प्रत्येक उपयोगकर्ता के पास निम्नलिखित सुविधाओं के साथ ई-रफ जर्नल होगा। यह उपयोगकर्ता को ई-ओप सिस्टम से अपनी ट्रेन का निर्धारित समय प्राप्त करने की अनुमति देगा और जब वह ट्रेन पर काम कर रहा होगा, तो वह ई-रफ जर्नल अपडेट कर सकता है। ट्रेन चलाने के विश्लेषण के लिए यह ई-रफ जर्नल देखा जा सकता है। ई-रफ जर्नल का बैकअप क्लाउड में 1 साल की अवधि के लिए संग्रहीत रहता है।



गार्ड द्वारा उपयोग किए जाने वाले ई-ओप रफ जर्नल का नमूना।



गार्ड के लिए उपलब्ध ई-मैनुअल का नमूना टैबलेट पर



परियोजना ई-ओप का उद्घाटन



ट्राली बैग और टैबलेट के साथ गार्ड

ब्लॉक प्रबंधन प्रणाली (बीएमएस) को 25 सर्वश्रेष्ठ अच्छे कार्यों के अंतर्गत चुना गया

बी.एम.एस. के तहत, ब्लॉकों को एक सप्ताह पहले ही योजित कर लिया जाता है। गूगल शीट का उपयोग करके कॉमन ऑनलाइन क्लाउड शेयरिंग प्लेटफॉर्म पर ब्लॉक की योजना बनाई जाती है और चर्चा की जाती है। सभी संबंधित विभाग यानी इंजीनियरिंग, एस.एंड.टी और टी.आर.डी विभाग बुधवार को बी.एम.एस. में लेने वाले ब्लॉकों की आवश्यकता देते हैं। गुरुवार के दिन ऑपरेटिंग अधिकारियों के साथ सभी संबंधित अधिकारी बी.एम.एस. में दर्ज ब्लॉक की समीक्षा और चर्चा करते हैं। इंजीनियरिंग कार्य का महत्त्व, ई.ए., एस.एंड.टी गैंग की उपलब्धता इत्यादि के आधार पर ब्लॉक तय किए जाते हैं। इसने विभिन्न विभागों की बाधाओं और उनके बीच बेहतर समन्वय की बेहतर समझ को जन्म दिया है। इसके बाद ब्लॉक को तय सप्ताह के विशेष दिनों के साथ दिशात्मक ब्लॉक के रूप में तय किया जाता है। उदाहरण: सूरत और गेरतपुर खंड में - रवि, मंगल, और गुरुवार अप दिशा में और बुध, शुक्र और शनि को डाउन दिशा में ब्लॉक दिए जाते हैं।

चर्चा के बाद ब्लॉक दिया जाना तय होता है और फिर बी.एम.एस. में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। ब्लॉक योजना को ईमेल द्वारा सभी संबंधित अधिकारियों और फील्ड कर्मचारियों को भेजा जाता है।

लाभ

1. अग्रिम ब्लॉक योजना के कारण, ब्लॉक के देने की क्षमता में वृद्धि हुई है। इसने संसाधनों को संगठित करने में मदद की है और उत्पादन में सुधार हुआ है।
2 अग्रिम योजना ने ब्लॉक के मिलने न मिलने की अनिश्चितता से जुड़ी चिंताओं में काफी कमी लाई है।
3. मेंटेनेंस ब्लॉक में अन्य सम्बंधित विभागों की आवश्यकताओं और सीमाओं की समझ बेहतर हुई है।
4. यातायात की बेहतर योजना में सी.टी.एन.एल. को मदद मिली है। यह जानकारी आस-पास के मंडलों को भी भेजी जाती है जिससे वे अपने यातायात और ब्लॉक की योजना बना सकें।
5. यात्रियों को भी ब्लॉक के बारे में पता रहता है क्योंकि उनकी ट्रेन निश्चित दिनों पर नियमन की जाती है।

सिस्टम को निष्पादित करने के लिए, ऑनलाइन क्लाउड संचालित तकनीक का उपयोग कर स्मार्ट पेपरलेस सिस्टम यानी गूगल ड्राइव का उपयोग किया जाता है। इससे सभी उपयोगकर्ताओं को एक ही मंच पर ब्लॉक की योजना बनाने की सुविधा मिली और ब्लॉक की योजनाओं में लगने वाले समय कम करने में मदद मिली है।

ई-ऑफिस - पेपर रहित कार्यालय

परिचालन विभाग द्वारा त्वरित सूचना, काम के दोहराव को कम करने और पेपरलेस कामकाज को बढ़ाने के उद्देश्य से, ई-ऑफिस मॉड्यूल को शुरू किया गया है। इसके दो भाग हैं



1. संशोधित ई-डाक प्रणाली 2. ई-नियंत्रण प्रणाली

पारंपरिक डाक प्रणाली में डाक का व्यक्तिगत रूप से लाना ले जाना शामिल है। पश्चिम रेलवे द्वारा विकसित ई-डाक मॉड्यूल मुख्यालय एवं मंडल और मंडल के विभिन्न विभागों के बीच डाक को व्यक्तिगत रूप से लाना व ले जाना डिजिटलीकृत किया गया है। हालांकि, विभाग के भीतर सूचना प्रवाह पेपर प्रिंट आउट के माध्यम से जारी है। इन प्रयासों में सूचना का दोहरीकरण, अनावश्यक प्रिंटआउट, कभी-कभी डाक निर्देशों का गुम हो जाना, भ्रम और देरी होना भी शामिल था।

नई संशोधित ई-डाक प्रणाली के तहत, सभी अधिकारियों और पर्यवेक्षकों के लिए रेल नेट ईमेल-आईडी बनाए गए हैं। संबंधित डाक कई बहुस्तरीय हस्तक्षेप परतों को छोड़कर सीधे ही संबंधित व्यक्तियों के बीच इलेक्ट्रॉनिक रूप से पहुंचायी जाती है, जो कि तेज, भरोसेमंद, कागज रहित और सुरक्षित है। इसके परिणामस्वरूप समय बचाया गया है, स्मार्ट फोन पर भी डाक को देखा जा सकता है, कम से कम दोहराव, अलग-अलग फोल्डर्स में लॉजिकल वितरण, भविष्य के संदर्भ के रूप में इलेक्ट्रॉनिक उपलब्धता और कागज रहित भी है।

इसी तरह वडोदरा मंडल ने ई-कंट्रोल ऑफिस मॉड्यूल शुरू किया है, जिसमें सभी विभाग के कंट्रोलरों के लिए आधिकारिक रेलनेट ईमेल आईडी बनाई गई है। इन ईमेल आईडी को विभागीय कंट्रोलरों के अनुसार बनाया गया है, जो व्यक्ति विशेष के लिए नहीं है, बल्कि सभी पारियों में शिफ्ट-इंचार्ज द्वारा उपयोग की जाती है। सभी अंतर-विभागीय संचार केवल इन ईमेल के माध्यम से किया जाता है। चूंकि ईमेल को संचार का स्वीकृत माध्यम माना जाता है, इसलिए एक बार ईमेल भेजे जाने पर, यह माना जाता है कि संदेश वितरित हो चुका है। पहले, इस उत्तरदायित्व को प्राप्तकर्ता से लिखित में 'प्राप्त' लिखवाकर सुनिश्चित किया जाता था, जिसमें अधिक कागज और बहुमूल्य मनुष्य-घंटे की बर्बादी होती थी।

इन सभी उपलब्धियों को हासिल करना किसी एक व्यक्ति से संभव नहीं हुआ अपितु परिचालन विभाग व अन्य विभागों के कर्मचारियों व अधिकारियों के संयुक्त प्रयास व कोशिशों व सुझाव से संभव हुआ है। वडोदरा मंडल का परिचालन विभाग, भविष्य में भी, इसी तरह के नए-नए नवप्रवर्तन करके गाड़ी संचलन में समयपालनता, संरक्षा और सुरक्षा पर सुधार की ओर तथा नए-नए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अग्रसर रहेगा।

रेल आय एवं यात्री सुविधाओं में निरंतर बढ़ोतरी के लिए प्रतिबद्ध – वाणिज्य विभाग



डॉ. जीनीया गुप्ता
वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, वडोदरा मंडल

वडोदरा मंडल का गठन पूर्ववर्ती गायकवाड़ बड़ौदा स्टेट रेलवे से हुआ था, जिसमें 1295.3 किमी रेल मार्ग समायोजित है। यह ताप्ती नदी के उत्तरी छोर उत्राण स्टेशन से शुरू होकर गैरतपुर स्टेशन तक तथा मुंबई–दिल्ली मार्ग के गोधरा स्टेशन तक अवस्थित है।

वडोदरा मंडल में कुल 173 स्टेशन हैं, जिनमें एनएसजी–2 श्रेणी का 1, एनएसजी–3 के 4, एनएसजी–4 के 4, एनएसजी–5 के 6, एनएसजी–6 के 63, एचएसजी–1 का 1, एचएसजी–2 के 9 तथा एचएसजी–3 के 85 स्टेशन सम्मिलित हैं। मंडल में 11 आरक्षण कार्यालय, 28 यूटीएस सह आरक्षण कार्यालय तथा 48 केवल यूटीएस, 13 एसटीबीए, 6 जेटीबीएस तथा 8 सीओटीवीएम हैं, जिनके द्वारा यात्रियों को टिकट जारी किए जाते हैं। वडोदरा मंडल पश्चिम रेलवे की संपूर्ण आय का प्रमुख स्रोत है। चालू वित्तीय वर्ष (नवम्बर 2018 तक) में इस मंडल की उद्गमित आय रु. 1589.69 करोड़ है, जो कि पश्चिम रेलवे की कुल आय का 13.99 प्रतिशत है।

माल भाड़ा आय : वडोदरा मंडल ने चालू वित्तीय वर्ष (नवम्बर '18 तक) में पिछले वर्ष की तुलना में 18.46 प्रतिशत बढ़ोतरी दर्ज की है जो कि रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित लक्ष्य से 12.18 प्रतिशत अधिक है। जल्द ही पिलोल में एचपीसीएल की साईडिंग के शुरू होने से वडोदरा मंडल का पश्चिम रेलवे के माल भाड़ा आय में अतिरिक्त योगदान होगा। निकट भविष्य में कंटेनर कॉरपोरेशन द्वारा वरनामा में प्राइवेट फ्रेट टर्मिनल बनाया जायेगा, जिससे मंडल की माल भाड़ा आय में और अधिक बढ़ोतरी दर्ज होने की अपेक्षा है।

यात्री सुविधाएं : वडोदरा स्टेशन पर अधिक गाड़ियों के संचालन को और सुगम करने के उद्देश्य से, छायापुरी एवं विश्वामित्री स्टेशनों को सैटेलाइट टर्मिनल स्टेशन के रूप में विकसित करने की योजना कार्यान्वित है। छायापुरी स्टेशन वडोदरा शहर की उत्तर पश्चिम दिशा में अवस्थित है। यहां से अहमदाबाद से गोधरा की तरफ आने–जाने वाली गाड़ियों का अलग से संचालन होगा, जिससे वडोदरा स्टेशन पर गाड़ियों के संचालन का बोझ कम हो जाएगा एवं गाड़ियों के समय पालन में सुधार होगा।

प्लास्टिक के उपयोग को कम, पुनः उपयोग तथा पुनः चक्र के संकल्प के साथ ओएनजीसी द्वारा कॉरपोरेट सोशल दायित्व के अंतर्गत 'बोतल क्रशिंग मशीन' की वडोदरा स्टेशन पर 5 जून, 2018 से शुरुआत की गई है। ओएनजीसी द्वारा ही कॉरपोरेट सोशल दायित्व के अंतर्गत वडोदरा स्टेशन के



सामान्य एवं वातानुकूलित प्रतीक्षालय में सेनेटरी नेपकिन वेंडिंग मशीन एवं यूज्ड नेपकिन को नष्ट करने वाली मशीन लगाई गई है।

कॉरपोरेट सोशल दायित्व के ही अंतर्गत वडोदरा स्टेशन पर गुजरात अल्कलाइन द्वारा प्रायोजित पर्यावरण के अनुकूल नमा मॉड्यूलर टॉयलेट ब्लॉक की स्थापना 5 जून, 2018 को की गई है। भरुच एवं अंकलेश्वर स्टेशनों पर भी नमा मॉड्यूलर





टॉयलेट ब्लॉक, सेनेटरी नेपकिन वेंडिंग मशीन एवं यूज्ड नेपकिन को नष्ट करने वाली मशीन का शुभारंभ 2 अक्टूबर, 2018 को किया गया है। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुये 14 मई, 2018 से आनंद-खंभात एवं आनंद-अहमदाबाद के बीच चलने वाली मेमू/डेमू ट्रेन स्थायी रूप से 12 कोच वाली (1400 एचपी) की गई है। 2 जुलाई, 2018 से प्रभावी 12 कोच वाली मेमू भरुच-आनंद-भरुच यात्री गाड़ी प्रारम्भ की गई है, जिसकी वहन क्षमता 530 से बढ़कर 1200 अर्थात् 670 सीट बढ़ गई है।

जरदोश की सांसद क्षेत्रीय विकास निधि (एमपीएलएडी फंड) के तहत उत्राण स्टेशन पर सीमेंट की 10 बेंच लगाई गई हैं। आनंद स्टेशन पर लायन क्लब द्वारा प्लेटफॉर्म नं. 4 पर 20 स्टेनलेस स्टील की 4 सीटोंवाली बेंच लगाई गई हैं। 27 जून, 2018 को लायन क्लब द्वारा ऊपरी पैदल पुल, लिफ्ट की दीवारों को चित्रांकित कर सौंदर्यीकृत किया गया। 13 जुलाई, 2018 को यात्रियों की सुविधा के लिए विश्वामित्री स्टेशन पर अतिरिक्त पैदल पुल का शुभारंभ किया गया।

आफत में पड़े बच्चों की सहायता के लिए तथा घर से भागे हुये बच्चों को उनके परिवारजनों से पुनर्मिलन हेतु वडोदरा स्टेशन पर 25 अप्रैल, 2018 को 'चाइल्ड हेल्प डेस्क' का शुभारंभ किया गया। मंडल के वडोदरा, अंकलेश्वर, भरुच, कोसम्भा, दभोई, आनंद इत्यादि स्टेशनों की दीवारों को रंग कर सौंदर्यीकरण किया गया है, जिससे स्टेशन भवनों की सुंदरता में वृद्धि हुई है। 5 नवम्बर, 2018 को वडोदरा स्टेशन पर नव-निर्मित महिला प्रतीक्षालय का शुभारंभ किया गया।

नई परियोजनाएं : दभोई-मियागाम खंड और दभोई-चांदोद-केवड़िया खंड की बड़ी लाइन गेज परिवर्तन परियोजनाओं का कार्य गतिशील है। दभोई-मियागाम खंड मंडल परिचालन के उद्देश्य से काफी महत्त्वपूर्ण खंड है तथा दभोई-चांदोद-केवड़िया खंड का महत्त्व 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' की स्थापना के कारण और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है। ■

With Best Compliments from

INDUS FIRE SAFETY

INDUS FIRE SAFETY PVT.LTD

(The Largest manpower supplier in INDIA in the field of Fire & Safety)

INDUS FIRE SAFETY PVT.LTD
Vadodara (Gujarat)
Ph: 0265-2343441/442, 0265-2341633
e-mails : firesafetyin@yahoo.com/
info@indusfiresafety.com

INDUS FIRE SAFETY ACADEMY
Bajunda Village, Chittorgarh
(Rajasthan) M: 8058515220
e-mail: principal.ifsacor@gmail.com
bency@indusfire.com

INDUS EMERGENCY VEHICLES
(Fabricators of Fire & Rescue Vehicles)
Dashrath, Vadodara (Gujarat)
Ph: 0265-2240024, e-mail:indusemergencyvehicle@gmail.com

विद्युत लोको शेड, वडोदरा प्रगति के पथ पर अग्रसर

हरिकेश मीना
वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (टीआरएस)





विद्युत लोको शेड, वडोदरा पश्चिम रेलवे वडोदरा मंडल की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। इसकी स्थापना 25 मार्च, 1973 को पश्चिम रेलवे के प्रथम विद्युत लोको शेड के रूप में 6 डब्ल्यूएएम4 लोको के साथ हुई। आज वडोदरा लोको शेड चार विभिन्न प्रकार के 215 लोको (डब्ल्यूएपी5-66, डब्ल्यूएपी7-31, डब्ल्यूएपी4-72, डब्ल्यूएजी5-46) जिनमें 169 पैसेंजर लोको (97 आधुनिक तकनीक के 3 फेज लोको) एवं 46 गुड्स लोको शामिल हैं, का अनुरक्षण करके भारतीय रेल के यात्रियों एवं मालसामान को अनवरत सुरक्षित तथा समय पर अपने गंतव्य तक पहुंचाने का कार्य 24 घंटे कर रहा है। ये लोको भारतीय रेल में अत्यंत महत्त्वपूर्ण गाड़ियों जैसे कि राजधानी, शताब्दी, दुरन्तो एक्सप्रेस आदि का सुरक्षित एवं सुचारु रूप से संचालन कर रहे हैं। वडोदरा लोको शेड के 27 डब्ल्यूएपी7 होटल लोड लोको इन महत्त्वपूर्ण गाड़ियों के संचालन के साथ-साथ कोच में विद्युत ऊर्जा भी प्रदान करते हैं, जो कोच में एसी एवं लाइट चलाने के काम आती है। इसके कारण गाड़ी में अतिरिक्त पॉवर कार लगाने की आवश्यकता नहीं होती है। इससे न केवल डीजल की खपत कम होती है अपितु कार्बन का उत्सर्जन कम करके पर्यावरण को बचाते हुए रेलवे को वित्तीय फायदा पहुंचाते हैं।

लोको शेड वडोदरा की प्रमुख गतिविधियाँ

वडोदरा लोको शेड में गाड़ियों के सुरक्षित संचालन हेतु विद्युत लोको का अनुरक्षण किया जाता है। इसके अंतर्गत समयानुसार लोको का माइनर शेड्यूल इन्स्पेक्शन (IA/IB2/IC), मेजर शेड्यूल ओवरहॉल (TOH/IOH) एवं अन-शेड्यूल लोको का आरडीएसओ द्वारा जारी एसएमआई/एमएस/टीसी/आरएपी और ओईएम मैनुअल में दिये गए निर्देशों का कड़ाई से पालन करते हुये अनुरक्षण किया जाता है। आरडीएसओ द्वारा जारी एवं लोको विफलता पर आधारित विश्वसनीयता कार्य योजना (आरएपी) के अनुसार लोको का अनुरक्षण करने के बाद ही लोको को शेड आउट किया जाता है। शेड में आए हुए प्रत्येक लोको के सेफ्टी आइटम को चेक करके सही पाये जाने के बाद सुपरवाइजर अथवा ऑफिसर द्वारा लोको का सुपर चेक किया जाता है जिससे लोको की गुणवत्ता में सुधार आया है। इसके अलावा मौसम के अनुरूप पहले से ही ऐहतियातन कार्यवाही आरडीएसओ के निर्देशों के अनुसार की जाती है। गत् वर्ष (2017-18) में वडोदरा लोको शेड ने निर्धारित मेजर शेड्यूल ओवरहॉल (TOH/IOH) समयानुसार करके लाइन पर कोई भी ओवरड्यू लोको का संचालन नहीं किया। वडोदरा लोको शेड ने अनवरत प्रयास करते हुये 3 फेज होल्डिंग वाले कोचिंग लोको शेड में गत् वर्ष की तरह इस वर्ष भी समयपालन में प्रथम स्थान बनाये रखा है।

स्टाफ ट्रेनिंग : लोको शेड वडोदरा कार्यरत् कर्मचारियों की कार्यकुशलता बढ़ाने हेतु समय-समय पर क्षेत्रीय विद्युत प्रशिक्षण केंद्र (जो कि शेड की ही एक इकाई है) तथा सीएलडब्ल्यू/ओईएम इत्यादि में भी ट्रेनिंग के लिए भेजा जाता है। चालू वर्ष के दौरान रेलवे बोर्ड द्वारा शुरू किए गए 'प्रोजेक्ट सक्षम' के अंतर्गत दिये गए लक्ष्य को निर्धारित समय में पूरा करके शेड के सभी कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। वडोदरा लोको शेड द्वारा अपने कर्मचारियों की कार्यकुशलता बढ़ाने हेतु कार्य के दौरान प्रतिदिन 15-30 मिनट तक सभी सेक्शन में विशेष अभ्यास/संवाद सत्र चलाकर आरडीएसओ द्वारा जारी एसएमई/टीसी/एमएस/आरएपी और मैनुअल संबंधित कर्मचारियों को सुपरवाइजर एवं अधिकारियों द्वारा समझाए जाते हैं। क्षेत्रीय विद्युत प्रशिक्षण केंद्र के सहयोग से 3 फेस लोको के बड़े उपकरण जैसे कि मैन कंप्रेसर/टीबीयू-पीबीयू इत्यादि के ओवरहॉलिंग तरीकों का वीडियो ओईएम के मैनुअल के अनुसार बनाया गया है, जो कि ओईएम के द्वारा सत्यापित है। इससे संबंधित कर्मचारियों को इन उपकरणों की कार्यप्रणाली एवं ओवरहॉलिंग के समय की जाने वाली कार्यवाही समझने में मदद मिलती है। समय-समय पर लोको से संबंधित संशोधनों के कार्यान्वयन हेतु नियमित अंतराल से फर्म के प्रतिनिधियों को बुलाकर भी कर्मचारियों को ऑन जॉब प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

स्टोर : लोको शेड वडोदरा में स्थित भंडार डिपो लोको के मेंटेनेंस में लगने वाले 1489 स्टॉक एवं नॉन-स्टॉक आइटम

की उपलब्धता को सुनिश्चित करता है। वडोदरा लोको शेड द्वारा स्टॉक आइटम का समय-समय पर पुनरावलोकन (जैसे कि कार्ड क्लोज / एसी में कमी / खरीद पर रोक इत्यादि) किया जाता है। स्क्रैप के निपटान हेतु समय-समय पर विशेष अभियान चलाकर वडोदरा लोको शेड को स्क्रैप फ्री एवं साफ-सुथरा बनाया गया है।

शेड ऑग्यूमेंटशन कार्य : वडोदरा लोको शेड की होल्डिंग क्षमता 150 लोको से 175 लोको तक बढ़ाने का कार्य पूरा कर लिया गया है तथा शेड की होल्डिंग क्षमता 175 लोको से 200 लोको तक बढ़ाने का कार्य प्रगति पर है, जिसे इस वित्तीय वर्ष में लगभग 60% तक पूरा करके अगले वित्तीय वर्ष में पूर्ण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

लोको पायलट बॉक्स : वडोदरा लोको शेड ने भारतीय रेल में सर्वप्रथम सभी पैसेंजर लोको में लोको पायलट बॉक्स लगाने का कार्य पूर्ण किया है। इस इनोवेशन को भारतीय रेल में बेस्ट इनोवेशन में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।



पुशपुल ऑपरेशन : पुश-पुल ऑपरेशन में एक लोको गाड़ी के आगे व दूसरा लोको गाड़ी के पीछे लगाकर लीडिंग लोको द्वारा ही केवल एक कर्मीदल द्वारा दोनों लोको का संचालन किया जाता है। इसके तहत आरडीएसओ/सीएलडब्ल्यू द्वारा लोको व एलएचबी डिब्बों की वायरिंग में परिवर्तन के लिए मॉडिफिकेशन स्कीम जारी की गई। 18 एलएचबी डिब्बों के साथ बांद्रा टर्मिनल से हजरत निजामुद्दीन के बीच इसका सफलतापूर्वक सीओसीआर ट्रायल करने के बाद रेलवे बोर्ड द्वारा इसका अनुमोदन करके 12952/12951 एवं 12954/12953 को चलाने की अनुमति दे दी गई है। इसके अनुपालन में लोको से संबन्धित वायरिंग परिवर्तन एवं परीक्षण वडोदरा लोको शेड द्वारा 8 लोको में सफलतापूर्वक कर लिया गया है।

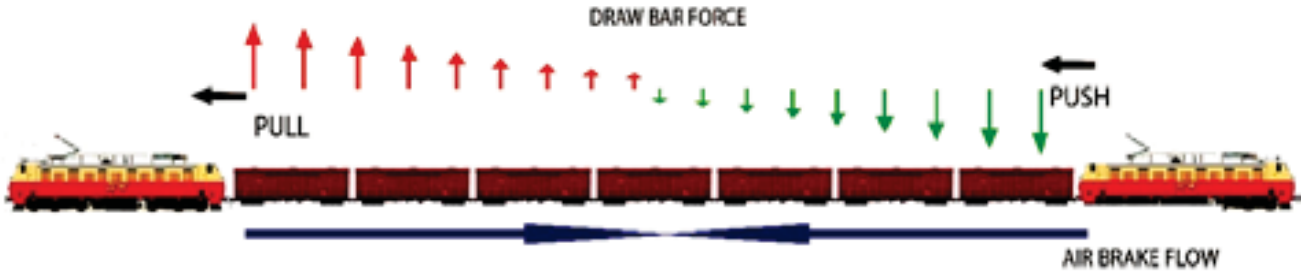
डब्ल्यूएपी-5 लोको के व्हील सेट की गियर केस के साथ टेस्टिंग हेतु टेस्ट बैंच



इस टेस्ट बैंच से लगभग 48 मानव कार्य घंटे की बचत होने के साथ-साथ 2500 यूनिट/लोको ऊर्जा की बचत हुई है। इसके द्वारा अलग-अलग व्हिल सेट को गेयर केस के साथ टेस्ट कर सकते हैं, गियर केस और ट्रैक्शन मोटर की हर्थ कपलिंग की गुणवत्ता बढ़ जाती हैं।

स्टाफ वेल्फेयर : वडोदरा लोको शेड द्वारा कर्मचारियों की सुविधा के लिए स्टाफ कैंटीन का पुनरुद्धार करके उन्हें 24 घंटे स्वास्थ्यकर भोजन एवं नाश्ता उपलब्ध कराने हेतु आउटसोर्सिंग की गयी है। लोको शेड में कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों को पीने के लिए शुद्ध पानी की व्यवस्था हेतु दो औद्योगिक आरओ प्लांट लगाए गये हैं। जिनकी क्षमता

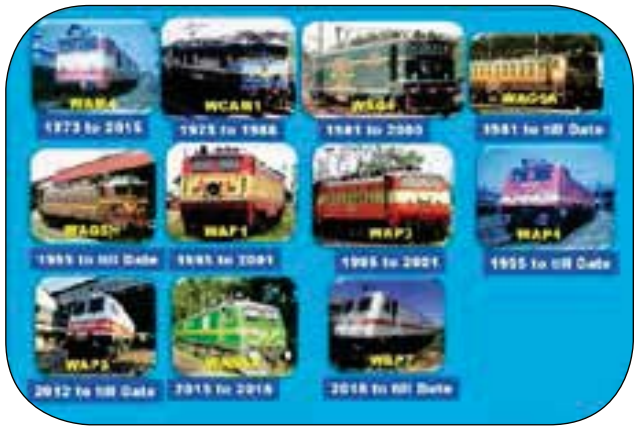




250 लीटर प्रति घंटा है। लोको के अंदर कर्मचारियों को कार्य करने के लिए उचित प्रकाश की व्यवस्था हेतु सभी को बैटरी से जलने वाले एलईडी युक्त हेड लैंप दिये गए हैं। जिससे कर्मचारियों को कार्य में सुविधा के साथ-साथ उनके द्वारा लोको में किए गये कार्य की गुणवत्ता भी अच्छी हो गई है। शेड के सभी कर्मचारियों को कार्य के दौरान सुरक्षा हेतु सेफ्टी शूज एवं हेलमेट प्रदान किए गए हैं।

सदस्य कर्षण का दौरा : घनश्याम सिंह सदस्य कर्षण, रेलवे बोर्ड ने 4 मई, 2018 को लोको शेड का निरीक्षण किया। शेड द्वारा लोको की गुणवत्ता सुधारने के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्यों एवं शेड में स्वच्छता से प्रभावित होकर 1,00,000 रुपए का पुरस्कार घोषित किया।





लोको शेड, वडोदरा ने अपनी 45 वर्ष की यात्रा के दौरान लोको की गुणवत्ता, रखरखाव के तरीकों में सुधार, कर्मचारियों के स्वास्थ्य / कल्याण तथा पर्यावरण आदि क्षेत्रों में निरंतर उत्कृष्ट कार्य करके भारतीय रेल में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है।

पर्यावरण : लोको शेड वडोदरा में विश्व पर्यावरण दिवस/ विश्व योग दिवस / स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा इत्यादि मनाया जाता है। इस अवसर पर शेड के कर्मचारी एवं अधिकारी मिलकर श्रमदान / वृक्षारोपण / योग करते हैं। इस दौरान शेड संकुल, पिट लाइंस एवं सभी सेक्शन इत्यादि को साफ किया जाता है और वृक्षारोपण किया जाता है।



क्षेत्रीय विद्युत प्रशिक्षण केंद्र वडोदरा : पश्चिम रेलवे पर विद्युतीकरण की शुरुआत के साथ वर्ष 1973 में लोको पायलट एवं सहायक लोको पायलटों को प्रशिक्षण देने हेतु 5 क्लास रूम के साथ विद्युत प्रशिक्षण केंद्र वडोदरा की स्थापना हुई। वर्ष 1988 में कर्षण वितरण, लोको अनुरक्षण, सामान्य सेवा, एयरकन्डीशिनंग व ट्रेन लाइटिंग के साथ एवं लोको ऑपरेशन से संबन्धित ग्रुप 'सी' एवं 'डी' स्टाफ के लिए इसे प्रोन्नत करके क्षेत्रीय विद्युत प्रशिक्षण केंद्र बना दिया गया। समय के साथ उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए आज यहाँ पर 16 क्लास रूम, तीन मॉडल रूम, सिम्युलेटर प्रशिक्षण केंद्र एवं 5 हॉस्टल हैं। एक समय में विभिन्न संकाय के लगभग 351 प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इस प्रशिक्षण केंद्र में कुल 82 विभिन्न कोर्स चलाये जाते हैं, जिनमें रनिंग स्टाफ के लिए लोको एवं मेमू के 33 कोर्स, कर्षण वितरण स्टाफ के लिए 18 कोर्स, लोको एवं मेमू के अनुरक्षण स्टाफ के लिए 15 कोर्स, सामान्य सेवा के लिए 16 कोर्स एवं सिम्युलेटर के 9 कोर्स शामिल हैं। प्रशिक्षण में आने वाले कर्मचारियों की सुविधा हेतु 254 प्रशिक्षुओं की क्षमता वाले 5 हॉस्टल बनाए गए हैं, जिनमें एक समय में लगभग 100 प्रशिक्षुओं के खाने की सुविधा वाली को-ऑपरेटिव मेस उपलब्ध है। प्रशिक्षुओं के स्वास्थ्य एवं मनोरंजन हेतु पत्रिकाएँ, न्यूज पेपर, टेलीविजन, इंडोर तथा आउटडोर गेम उपलब्ध हैं, साथ ही प्रशिक्षुओं को मानसिक रूप से स्वस्थ रखने हेतु प्रतिदिन योग कराया जाता है। क्षेत्रीय विद्युत प्रशिक्षण केंद्र वडोदरा में लाइब्रेरी में विभिन्न विषयों की लगभग 401 अँग्रेजी एवं 1513 हिन्दी की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्लास रूम में स्मार्ट बोर्ड/ प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रशिक्षण की आधुनिक तकनीकों जैसे कि पॉवर पॉइंट प्रजेंटेशन, शॉर्ट वीडियो क्लिप एवं एनिमेटेड सर्किट का उपयोग करके प्रभावी तरीके से प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण केंद्र के द्वारा एसपीएडी को रोकने के लिए सिग्नलों को कॉल-आउट करने हेतु एक वीडियो बनाया गया है। साथ ही प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने और लोको फेलियर कम करने के लिए विभिन्न विषयों पर अन्य 5 वीडियो (व्हील स्किड से बचाव, लोको को लुढ़कने से बचाने हेतु लोको में लगे विभिन्न प्रकार के



हैंड-ब्रेक का ऑपरेशन, लोको इनरजाइज करना, एच-टाइप कप्लर और एयर-फ्लो इंडिकेटर की कार्यप्रणाली) बनाकर प्रशिक्षण में शामिल किया गया है। लोको के विभिन्न फेलियर का अन्वेषण कर लोको की टीएसडी में समय-समय पर सुधार कर, अच्छे एवं खराब दोष निवारण को विभिन्न कोर्सेस में सम्मिलित करने के साथ-साथ एक मासिक पत्रिका 'ई-चालक पत्रिका' का प्रकाशन पिछले दो वर्ष से किया जा रहा है।

सिम्युलेटर : सिम्युलेटर में इस वर्ष नियमित कोर्सेस के अलावा सहायक चालकों/ सह लोको पायलट को एसपीएडी बचाने हेतु प्रशिक्षण देने के लिए एक विशेष कोर्स (आरएस वाल्व ऑपरेशन) चलाकर पश्चिम रेलवे के सहायक चालकों एवं हाई-स्पीड गाड़ियों पर काम करने वाले सह-लोको पायलटों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। ■

पुरस्कार



प्रिंसिपल मुख्य बिजली इंजीनियर, पश्चिम रेलवे द्वारा विद्युत लोको शेड, वडोदरा को वर्ष 2017-2018 के लिए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए दक्षता शील्ड प्रदान की गई

WITH BEST
COMPLIMENTS
FROM

M.S. Khatik

(Mahendra Sohanlal Khatik)

- All Type of Civil Works
- Water Proofing
- Painting of Buildings

S. Ram Park Soc., Alvanaka, GIDC Road, Vadodara-390 010
M : 8141656828, 8347363569
e-mail : mahendrasanwar@gmail.com

वडोदरा मंडल में ऊर्जा संरक्षण व ऊर्जा दक्षता के कार्य

शकील अहमद
वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर, पॉवर, वडोदरा मंडल





भरुच स्टेशन परिसर

वडोदरा मंडल में कुल 127 स्टेशन कार्यरत् हैं, जिनमें से एक एनएसजी2 (पूर्व ए1 कैटेगरी) एवं चार एनएसजी3 (पूर्व ए कैटेगरी) के स्टेशन हैं। वडोदरा मंडल के सभी स्टेशनों पर लगी समस्त परंपरागत लाईटों को वर्ष 2018 में अत्याधुनिक एवं ऊर्जा दक्ष एलईडी लाईटों से परिवर्तित कर दिया गया है। यह कार्य कुछ स्टेशनों पर कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर) के अंतर्गत पूरा किया गया है जिसमें खर्च हुई राशि कॉनकोर, ओएनजीसी एवं आनंद विद्यानगर करमसाद शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर) के अंतर्गत प्रदान की गई हैं। कुछ छोटे स्टेशनों पर विभागीय कार्य द्वारा एलईडी लाईटें लगाई गई हैं तथा बचे हुए सभी स्टेशनों को ऊर्जा मंत्रालय की सहायक कंपनी एनर्जी एफिशियन्सी सर्विसिस लिमिटेड (ईईएसएल), के सहयोग से ईएससीओ (ESCO) मॉडल के अंतर्गत पूरा किया गया है।

ईएससीओ मॉडल अपने आप में एक बहुत ही अनूठा मॉडल है, जिसकी शुरुआत पश्चिम रेलवे द्वारा दिसम्बर, 2016 में की गई। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम मुंबई मंडल के वसई रोड स्टेशन पर यह मॉडल लागू करने हेतु चुना गया था।

इस मॉडल में सभी परंपरागत लाईट्स, पंखों तथा एयर कंडीशन्स को रेलवे द्वारा बिना किसी पूंजी निवेश के अत्याधुनिक व ऊर्जा दक्ष एलईडी लाईटों, पंखों तथा फाइव स्टार एयर कंडीशनरों से परिवर्तित किया गया है। उपरोक्त सभी उपकरणों को खरीदने तथा लगाने का कार्य ऊर्जा सेवा कंपनी ईएससीओ अर्थात् ईईएसएल द्वारा स्वयं का पूंजी निवेश करके किया गया है। इस मॉडल के अंतर्गत परंपरागत उपकरणों को ऊर्जा दक्ष उपकरणों से बदलने के कारण हुई ऊर्जा बचत के फलस्वरूप धनराशि में जो बचत होती है, उस बचत का हिस्सा ऊर्जा सेवा कंपनी व रेलवे के द्वारा एक पहले से निर्धारित किए गये अनुपात में बांट लिया जाता है तथा ऊर्जा सेवा कंपनी को तिमाही किस्तों में भुगतान तब तक किया जाता है, जब तक ऊर्जा सेवा कंपनी द्वारा किये गये पूंजी निवेश तथा उस पर पहले से निर्धारित की गई लाभ की राशि ऊर्जा सेवा कंपनी को प्राप्त नहीं हो जाती है। उपरोक्त प्रणाली को निम्नलिखित उदाहरण से अधिक स्पष्टता से समझा जा सकता है :

क्र. सं.	विवरण	एबीसीडी
1.	परंपरागत उपकरणों के द्वारा की जा रही वार्षिक बिजली खपत	5,00,000 यूनिट
2.	ऊर्जा दक्ष उपकरणों के लगाने के बाद हो रही वार्षिक बिजली खपत	3,25,000 यूनिट
3.	बिजली खपत में हुई वार्षिक बचत (1-2)	1,75,000 यूनिट
4.	प्रति यूनिट बिजली की औसत दर	7 रुपए प्रति यूनिट
5.	कुल बिजली खपत भुगतान में वार्षिक बचत (3X4)	12,25,000 रुपए प्रति वर्ष
6.	ऊर्जा सेवा कंपनी द्वारा किया गया कुल पूंजी निवेश	20,00,000 रुपए
7.	ऊर्जा सेवा कंपनी द्वारा ली गई कंसलटेंसी फीस (पूंजी निवेश का 9.25%)	1,85,000 रुपए
8.	प्रोजेक्ट की कुल अनुमानित लागत (6+7)	21,85,000 रुपए
9.	प्रोजेक्ट की अवधि	3 वर्ष
10.	कुल अनुमानित लागत का इक्विटी का हिस्सा (20%)	4,37,000 रुपए
11.	इक्विटी निवेश पर लाभ (23.76%)	1,85,920 रुपए
12.	कुल अनुमानित लागत का ऋण का हिस्सा (80%)	17,48,000 रुपए
13.	ऋण के हिस्से पर ब्याज (11% प्रति वर्ष की दर से)	3,27,976 रुपए
14.	ऊर्जा सेवा कंपनी को दिया जाने वाला कुल अनुमानित भुगतान (10+11+12+13)	26,98,896 रुपए
15.	ऊर्जा सेवा कंपनी को दिया जाने वाला वार्षिक भुगतान (14/9)	899632 रुपए
16.	रेलवे की वार्षिक बचत (5-15)	325368 रुपए
17.	ऊर्जा सेवा कंपनी का हिस्सा	73.40%
18.	रेलवे का हिस्सा	26.60%

सारणी से स्पष्ट है कि ऊर्जा सेवा कंपनी द्वारा किए गए पूंजी निवेश का लाभ सहित व प्रोजेक्ट मैनेजमेंट कंसलटेंसी फीस सहित पूरा भुगतान ऊर्जा सेवा कंपनी को 12 तिमाही किस्तों में किया जाना है जो बिजली बचत के कारण हो रही पूंजी का मात्र 73.40% है। इस बचत की 26.40% राशि रेलवे के पास ही रहेगी। तीन वर्ष के बाद ऊर्जा सेवा कंपनी को कोई भी भुगतान रेलवे द्वारा नहीं किया जाएगा तथा इन तीन वर्षो के दौरान ऊर्जा सेवा कंपनी ही उसके द्वारा लगाए गए उपकरणों का रखरखाव करेगी एवं तीन वर्षो के उपरांत ये सभी उपकरण रेलवे को हस्तांतरित कर दिये जाएंगे। अत: इस मॉडल के अंतर्गत रेलवे द्वारा बिना किसी पूंजी निवेश के उसके सभी परंपरागत बिजली उपकरणों को ऊर्जा दक्ष उपकरणों से बदला जा सकता है।



आनंद स्टेशन के वातानुकूलित प्रतीक्षा कक्ष का दृश्य

ईएससीओ मॉडल वडोदरा मंडल पर निम्न प्रकार लागू किया गया है –

क्र. सं.	वडोदरा मंडल के एनएसजी 2 एवं एनएसजी 3 कैटेगरी स्टेशन एवं सभी सर्विस बिल्डिंग	
1.	परंपरागत उपकरणों के द्वारा की जा रही वार्षिक बिजली खपत	41,62,913 यूनिट
2.	ऊर्जा दक्ष उपकरणों के लगाने के बाद हो रही वार्षिक बिजली खपत	22,83,866 यूनिट
3.	कुल वार्षिक अनुमानित ऊर्जा बचत (1-2)	18,79,047 यूनिट
4.	प्रति यूनिट बिजली की औसत दर	7 रुपए प्रति यूनिट
5.	कुल वार्षिक अनुमानित बचत (3X4)	1,31,53,336 रुपए
6.	ऊर्जा सेवा कंपनी को किया जाने वाला वार्षिक भुगतान	88,17,046 रुपए
7.	रेलवे की वार्षिक बचत	43,36,290 रुपए
8.	प्रोजेक्ट की अवधि	5 वर्ष

उपरोक्त मॉडल के वसई रोड स्टेशन पर सफलतापूर्वक लागू होने के उपरांत रेलवे बोर्ड द्वारा पहले भारतीय रेल के सभी A1, A व B कैटेगरी के स्टेशनों पर तथा तदुपरांत बची हुई भारतीय रेल के सभी स्टेशनों एवं सर्विस भवनों पर लागू किया गया है। ■

With Best Compliments from

Rakesh S. Kadam

305, 3rd Floor, Sai Samruddhi Flat, Goyagate-22,
R.V. Desai Road, Vadodara

Mobile : 9925821870

कर्षण परिचालन अभिनव प्रयोगों के साथ अग्रसर

विनय कुमार
वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (टीआरओ)



लोको पायलट एवं गार्ड के लाइन बॉक्स का निष्कासन

इस पॉयलट प्रोजेक्ट का शुभारम्भ 28 मार्च, 2018 को गाड़ी संख्या 20903 (महामना एक्सप्रेस) के क्रू मेम्बर को ट्राली बैग एवं टेबलेट्स प्रदान करके, लोको संख्या 22667/ वडोदरा में टूल बॉक्स लगाने के पश्चात् किया गया। उपरोक्त शुभारम्भ के पश्चात् समस्त मेल/एक्सप्रेस, पैसेंजर एवं मेमू ट्रेनों का संचालन बिना लाइन बॉक्स के किया जा रहा है। 7 अप्रैल, 2018 को मंडल कार्यालय, वडोदरा में उपरोक्त प्रोजेक्ट के सफलतापूर्वक संचालन के तत्कालीन अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड द्वारा पुरस्कार स्वरूप 50,000 रुपए की नगद राशि देकर सम्मानित किया गया।

फायदे

- बॉक्स को चढ़ाने और उतारने की आवश्यकता नहीं रहने के कारण गाड़ियों के अनावश्यक अविलंबन से बचा जा सकेगा।
- लाईन बॉक्स हटने के कारण प्लेटफॉर्म साफ-सुथरा दिखाई देगा, जिसके कारण यात्रियों का आसानी से आवागमन संभव रह सकेगा।
- लाईन बॉक्स उतारने तथा चढ़ाने हेतु बॉक्स बॉय की आवश्यकता नहीं रहेगी, जिससे प्रत्येक वर्ष वित्तीय बचत होगी।
- लाईन बॉक्स नहीं होने से खतरे के सिग्नल को पास करने की सम्भावना नहीं रहेगी, क्योंकि ऐसा देखा गया है कि लोको पायलट गंतव्य स्टेशन आने पर अपना लाईन बॉक्स बंद करने में तथा प्रस्थान स्टेशन पर लाईन बॉक्स खोलने हेतु व्यस्त हो जाते हैं।





खतरा रोक संकेत से बचने हेतु उठाए गए कदम

ब्लैक बोर्ड तथा घंटी का ऑन ड्यूटी के समय उपयोग – प्रत्येक लॉबी पर घंटी के साथ उसके निकट लगाए गए ब्लैक बोर्ड पर लोको पायलट ऑन ड्यूटी से पहले नो स्पाड (NO SPAD) शब्द को लिखकर पास लगी घंटी को बजाकर सुरक्षित संचालन की शपथ लेते हैं। यह कार्य करने से वह प्रफुल्लित मन से गाड़ी पर जाकर सकारात्मक मन से गाड़ी का संचालन करते हैं।



आरएस वाल्व का प्रतिरूप लॉबी पर लगाकर प्रशिक्षण प्रदान करना – प्रत्येक सहायक लोको पायलट ऑन ड्यूटी से पहले लॉबी पर लगे उपरोक्त मॉडल को ऑपरेट कर उसकी आदत बनाता है ताकि विषम परिस्थिति में लोको पर लगे आरएस वाल्व को ऑपरेट कर गाड़ी को नियंत्रित कर खतरा रोक संकेत पार करने की घटना से बचा जा सके।

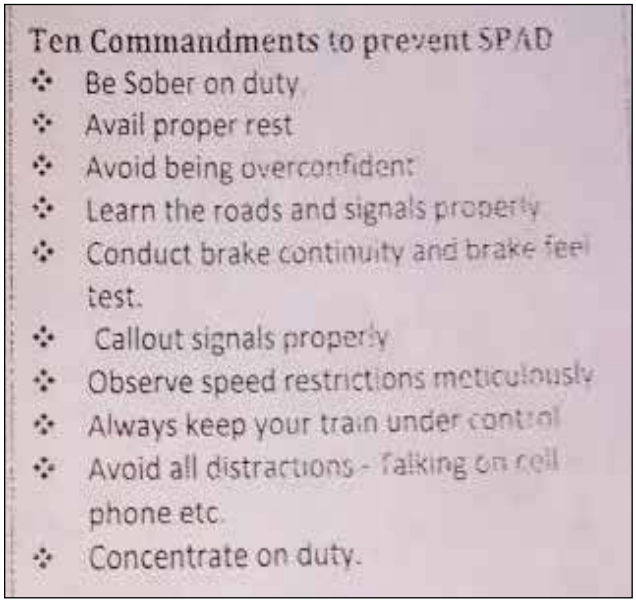


सिग्नल लोकेशन बुक का प्रकाशन – वडोदरा मंडल कर्षण परिचालन विभाग द्वारा वडोदरा मंडल में कार्यरत् समस्त लोको पायलट तथा, सहायक लोको पायलट को उपरोक्त पुस्तिका को प्रकाशित कर वितरित किया गया। इस पुस्तिका में समस्त सिग्नलों की विस्तृत जानकारी, समस्त सेक्शनों के ग्रेडिएंट, स्थायी गति प्रतिबन्ध, दाहिनी ओर लगे रोक सिग्नल, समस्त न्यूट्रल सेक्शनों, मेजर यार्डों का सिग्नल फ्लो चार्ट इत्यादि का समावेश किया गया है। जिसे देखकर लोको पायलट को इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हो जाती है। सुरक्षा तथा संरक्षा की दृष्टि से यह अत्यंत सार्थक पुस्तिका है। महाप्रबंधक द्वारा इस पुस्तिका का अनावरण 24 जनवरी, 2018 को किया गया था।



खतरा रोक संकेत से बचने हेतु महत्त्वपूर्ण 10 बातें– प्रत्येक लोको पायलट को अपनी लोको पायलट डायरी पर लगाने हेतु एक स्टीकर प्रदान किया गया। इस स्टीकर में खतरा रोक संकेत से बचने हेतु जिन महत्त्वपूर्ण 10 बातों का ध्यान रखना चाहिए, उसका उल्लेख किया गया है।

सिग्नल काल आउट का तरीका – सहायक लोको पायलट, सिग्नल जहाँ से दिखाई देता है, वहां से सिग्नल के संकेत के अनुसार सिग्नल की ओर उंगली दिखाते हुए सिग्नल काल आउट करता है। लोको पायलट द्वारा उन्हीं शब्दों में ऊँची आवाज में पावती दी जाती है। सिग्नल का संकेत लाल होने पर सहायक लोको पायलट अपना एक हाथ आर.एस.



वाल्व पर रखकर गाड़ी को नियंत्रित करने हेतु सदैव तत्पर रहता है।

थ्री फेज लोकोमोटिव ट्रेनिंग कंसोल

थ्री फेज लोकोमोटिव में दोष निवारण को ध्यान में रखकर उपरोक्त ट्रेनिंग कंसोल विभागीय कर्मचारियों द्वारा ही तैयार किया गया है। इस पर लोको पायलट प्रशिक्षण प्राप्त कर लोको में दोष आने पर उसका उचित समय में निवारण कर समय की बचत करने के साथ-साथ लोको का फेलियर भी बचाते हैं। 24 मार्च, 2018 को मंडल रेल प्रबंधक, वडोदरा द्वारा इस ट्रेनिंग कंसोल का अनावरण किया गया तथा पुरस्कार स्वरूप 3000 रुपए की राशि स्वीकृत की गई।



ऊर्जा बचत पत्र

वडोदरा मंडल में विभिन्न सेक्शनों में चलने वाली मालगाड़ियों (लोडेड/खाली), मेल, एक्सप्रेस, पैसेंजर तथा मेमू ट्रेनों में कितनी ऊर्जा का उपयोग होता है, उसको ध्यान में रखकर एनर्जी बेंच मार्क जारी किया गया है। इस एनर्जी बेंच मार्क को देखकर लोको पायलट को पूर्व में ही पता होता हैं कि इस गाड़ी के गंतव्य तक संचालन करने में यह कितनी ऊर्जा का व्यय करेगा। लोको पायलट द्वारा ग्रेडिएंट के अनुसार



कास्टिंग करने पर, सही तरीके से गाड़ी को रवाना कर, उचित ब्रेकिंग कर तथा कम लोड होने पर मल्टीपल लोको में से एक लोको को बंद कर इत्यादि के द्वारा ऊर्जा की बचत की जा सकती है। लोको पायलट उसे प्रदान किए गए ऊर्जा बचत पत्र में खर्च की गई ऊर्जा को दर्ज करता है। माह के अंत में समस्त लोको पायलट द्वारा जमा किए गए ऊर्जा बचत पत्र के द्वारा लोको निरीक्षक तुलनात्मक अध्ययन कर रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं। जिस लोको पायलट ने कम ऊर्जा का उपयोग कर ऊर्जा की बचत की है उसे उस माह का 'मैन ऑफ द मंथ' घोषित किया जाता है।

जैव निम्नकरणीय खाद का उत्पादन

गोधरा रनिंग रूम में जो कचरा और अनुपयोगी (बचा हुआ) खाना जो पहले ऐसे ही फेंक दिया जाता था, अब उसको एक टैंक में सही तरीके से संग्रहीत किया जाता है जो कुछ दिनों के पश्चात् खाद में परिवर्तित हो जाता है। जिसका उपयोग वहां पर लगे पेड़ पौधों में किया जाता है।





जिसकी वजह से वहां लगे पेड़ पौधे अच्छी तरह से विकसित हो रहे हैं। इस प्रकार बॉयो वेस्ट का सही उपयोग किया जा रहा है।

फेसबुक पर सीक्रेट ग्रुप बनाकर रनिंग स्टाफ को विभिन्न जानकारी प्रदान करना

वडोदरा तथा गोधरा मुख्यालय के समस्त रनिंग स्टाफ को इस फेसबुक ग्रुप में जोड़ा गया है। सी.टी.सी.सी द्वारा नियमित स्वीकृत किए गए अवकाश की जानकारी, तैयार किए



पास, पी.टी.ओ की जानकारी, मंडल कार्यालय, प्रधान कार्यालय अथवा रेलवे बोर्ड द्वारा जारी किए गए विशेष सर्कुलर/आदेशों से भी रनिंग स्टाफ को इस माध्यम के द्वारा अवगत कराया जाता है। किसी भी प्रकार की पदोन्नति की सूचना भी इस ग्रुप के द्वारा रनिंग स्टाफ को तुरंत दी जाती है।

वडोदरा यार्ड में ट्रिप इंस्पेक्शन शेड के निकट लाइन संख्या 20 का विद्युतीकरण

ट्रिप इंस्पेक्शन शेड के निकट वडोदरा यार्ड में लाइन संख्या 20 का विद्युतीकरण करवाया गया, जिसके फलस्वरूप लोको को शेड में लाने तथा ले जाने में बहुत सुविधा हो गई है। पूर्व में शेड से बाहर लाने तथा ले जाने का कार्य एक ही दिशा से (अहमदाबाद की ओर से) किया जाता था, जिसकी वजह से अधिक समय लगता था। उपरोक्त लाइन का विद्युतीकरण करने से दोनों ओर अर्थात् वडोदरा प्लेटफॉर्म एवं अहमदाबाद दोनों तरफ से लोको को लाया तथा ले जाया जा सकता है। फलस्वरूप लोको को लाने ले जाने का समय





काफी कम हो गया है। पहले कुल 15 मैन्युअल पॉइंट्स को ऑपरेट करने पर लोको को लाया/ले जाया जा सकता था परन्तु अब सिर्फ 8 पॉइंट्स को ऑपरेट कर लोको को लाया / ले जाया जा सकता है। अब लोको को रन राउंड करने की भी आवश्यकता नहीं होती है।

सेफ्टी सेमिनार का आयोजन

सेफ्टी सेमिनार का आयोजन वडोदरा, गोधरा लॉबी पर प्रत्येक माह में किया जाता है। इस दौरान रनिंग स्टाफ को संरक्षा विभाग द्वारा जारी किए गए मासिक संरक्षा नियम एवं संरक्षा बुलेटिन, खतरा सिग्नल पास के रोकथाम के उपाय, चढ़ाई सेक्शन में ट्रेन के स्टलिंग के रोकथाम के उपाय, बाढ़



के दौरान सावधानीपूर्वक संचालन तथा मंडल कार्यालय, प्रधान कार्यालय एवं रेलवे बोर्ड द्वारा जारी किए गए सर्कुलर / आदेशों की जानकारी दी जाती है। क्षे.वि.प्र. केंद्र वडोदरा यार्ड द्वारा प्रत्येक माह में जारी किए जाने वाले ई चालक पत्र, नियमावलियों में जारी किए गए संशोधन पत्र, दोष निवारण निर्देशिका संशोधन पत्र इत्यादि की भी जानकारी दी जाती है।

फैमिली सेमिनार का आयोजन

वडोदरा तथा गोधरा मुख्यालय पर वर्ष में 2 से 3 बार फैमिली सेमिनार का आयोजन किया जाता है। फैमिली सेमिनार के दौरान रनिंग कर्मचारी तथा उनके परिवारजनों के साथ निम्नलिखित विषयों पर बातचीत की जाती है।



1. रनिंग स्टाफ को घर पर विश्राम करते समय किसी भी तरह का व्यवधान न हो, इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि पुन: नौकरी पर जाने पर वह गाड़ी का संरक्षित संचालन कर सकें।
2. लोको पायलट द्वारा की जाने वाली ड्यूटी से उनके परिवारजन को अवगत कराया जाता है ताकि परिवारजन उसकी महत्ता को समझकर उन्हें सहयोग दें, ताकि रनिंग कर्मचारी तनाव रहित होकर ड्यूटी कर सकें।
3. रनिंग कर्मचारी के खान-पान पर विशेष ध्यान देने हेतु उनके परिवारजनों को समझाया जाता है, ताकि रनिंग कर्मचारियों को रक्तचाप, मधुमेह इत्यादि बीमारियों से बचाया जा सके।

कर्मीदल सतर्कता परिक्षण एवं अनुवीक्षण प्रणाली

"कर्मीदल सतर्कता परीक्षण एवं अनुवीक्षण प्रणाली" नवीनतम नवीनीकरण का पश्चिम रेलवे/भारतीय रेल में सर्वप्रथम वडोदरा मंडल की गोधरा लॉबी में विकसित किया गया है। इसकी सहायता से स्पाड (SPAD) जैसी घटनाओं से बचा जा सकेगा। इस प्रणाली के तहत, कर्मीदल को सिग्नलों की विभिन्न अवस्थाओं को दिखाने के पश्चात्, लोको इंस्पेक्टर द्वारा उनकी सतर्कता और प्रतिक्रिया समय का आकलन किया जाता है। इसके अलावा, इस प्रणाली में एक ओएचई मास्ट (OHE MAST) पर लोकेशन संख्या का सिग्नल के सन्दर्भ में ऑटोमेटिक सिग्नल प्रणाली के तहत प्रावधान किया गया है जिसकी सहायता से सिग्नल दूरी के सन्दर्भ में लोको पायलट का परीक्षण एवं अनुवीक्षण किया जाता है। इस प्रणाली की सहायता से, लोको पायलट की चालन तकनीक में बेहतर निपुणता एवं सुधार होगा एवं स्पाड (SPAD) से भी बचा जा सकेगा। ■



अनुरक्षण से रक्षण : यांत्रिक विभाग, वडोदरा

बी.वी.एस. प्रसाद
वरिष्ठ मंडल यांत्रिक अभियन्ता, वडोदरा मंडल



वडोदरा मंडल मुम्बई से नई दिल्ली/अहमदाबाद की ओर जाने वाले रेल मार्गों के मध्य स्थित है, जो इसे महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है। दक्षिणी भारत से उत्तरी भारत व राजस्थान की ओर तथा पश्चिमी तट से होकर जाने वाला रेल यातायात वडोदरा से होकर गुजरता है, जो इसे एक महत्त्वपूर्ण मंडल बनाता है। यह मंडल ब्रॉड गेज के लगभग 822 किमी तथा नैरो गेज के लगभग 105 किमी के मार्ग पर सेवा प्रदान करता है। वडोदरा रेलवे स्टेशन अन्य मंडल/रेलवे से होकर आने वाली सवारी गाड़ियों में तकनीकी समस्या निवारण के साथ-साथ यात्री सुविधाएँ प्रदान करने हेतु एक महत्त्वपूर्ण बिंदु है। यहाँ पर 'बी' क्लास ए.आर.टी. एवं स्केल 'I' एसपीएआरएमवी मौजूद है। वडोदरा माल ढुलाई सेवाओं के लिए भी एक महत्त्वपूर्ण मंडल है। यहाँ स्थित टैंक वैगन डिपो करचीया (बीटीपीएन) तथा वैगन डिपो वडोदरा यार्ड (विभिन्न एयर ब्रेक रैक) द्वारा औसतन प्रतिमाह 40 सीसी रैक एवं 64 प्रीमियम रैक समेत 166 रेकों का परीक्षण किया जाता है। कोच केयर सेंटर प्रतापनगर, 4 मेल एक्सप्रेस तथा 7 पैसेंजर ट्रेनों के साथ कुल 11 रेकों का प्राथमिक अनुरक्षण करता है। मियागाम करजन डिपो द्वारा मियागाम-मोतीकोरल-चोरांदा-मालसर अनुभागों के मध्य 57 किमी के रेल मार्ग चलने वाले 4 नैरो गेज ट्रेनों का प्राथमिक अनुरक्षण किया जाता है। आणंद डिपो द्वारा मिल्क टैंकर वैगनों का रख-रखाव किया जाता है। कवास डिपो में एलपीजी रैकों का गहन परीक्षण एवं ओएनजीसी साइडिंग में बीटीपीएन तथा एलपीजी रैकों की लोडिंग की जाती है। इनके अतिरिक्त गोधरा, भरुच, प्रतापनगर एवं आणंद स्टेशनों पर प्लेटफॉर्म ड्यूटी पॉइंट्स कार्यरत् हैं। सर्वप्रथम ईएनएचएम विंग ने सितंबर, 2016 से वडोदरा मंडल में प्रायोगिक आधार पर काम करना शुरू किया। पहले चरण में, वडोदरा मंडल के 'ए 1' तथा 'ए' श्रेणी के स्टेशनों की मशीनीकृत सफाई कांट्रैक्ट की गतिविधियों की निगरानी तथा अनुपालन ईएनएचएम विंग द्वारा लिया गया। मंडल यांत्रिक इंजीनियर, प्रतापनगर को मंडल पर्यावरण और हाउसकीपिंग प्रबंधक के रूप में नामांकित किया गया है जो कि नवगठित ईएनएचएम विंग के कार्यों का निर्वहन करते हैं। वडोदरा रेलवे स्टेशन ने भारत के सबसे स्वच्छ रेलवे स्टेशनों की सूची में पिछले वर्ष के 45वें स्थान से आगे बढ़कर इस वर्ष 15वां स्थान प्राप्त किया है।

फ्रेट अनुरक्षण

टैंक वैगन डिपो करचिया : यह डिपो पेट्रोलियम रैकों के सीसी एवं प्रीमियम परीक्षण के लिए नामांकित है। इस डिपो के लिए 28 सीसी रैक नामांकित हैं। पेट्रोलियम रैक होने की वजह से रिफाइनरी में लोडिंग होने के पश्चात् हर रैक का आउटगोइंग परीक्षण भी किया जाता है। यहाँ की सिक लाइन में प्रतिदिन औसतन 5.6 वैगनों को रिपेअर किया जाता है। आरओएच शेड का आउट टर्न प्रतिमाह 50 बीटीपीएन वैगन का है। यहाँ एफएमएम के द्वारा ऑनलाइन बीपीसी जारी की जाती हैं।

वैगन डिपो वडोदरा यार्ड : यहाँ एयर ब्रेक स्टॉक जैसे, बीसीएन और बॉक्सएन के प्रीमियम रैक का परीक्षण किया जाता है। यार्ड में औसतन प्रतिदिन 25 वैगनों का वेल्डिंग संबंधित मरम्मत कार्य सहित औसतन 2.8 रेकों का गहन परीक्षण किया जाता है। इस डिपो के कर्मचारियों द्वारा निजी बीएलसी वैगनों के सीसी रैक का परीक्षण उनकी साइडिंग कृभको इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड, हजीरा में किया जाता है। प्रतिदिन औसतन 5.7 वैगनों का जनरल रिपेअर करने वाले इस डिपो में प्रतिमाह 45 बीटीपीएन वैगन का आरओएच किया जाता है। यहाँ पर 'बी' क्लास एआरटी भी मौजूद है।

यात्री गाड़ी अनुरक्षण

कोच केयर सेंटर प्रतापनगर : लगभग 125 कोच होल्डिंग वाला यह डिपो सितंबर, 2016 से कार्यरत् है। वडोदरा-वाराणसी महामना एक्सप्रेस के मॉडेल रैक सहित 4 मेल एक्सप्रेस तथा 7 पैसेंजर ट्रेनों के रैक का प्राइमरी अनुरक्षण इस डिपो द्वारा किया जाता है। इस डिपो से संलग्न नैरो गेज डिपो में प्रतापनगर-जंबुसर अनुभाग में चलने वाली 2 सवारी गाड़ियों के रैक्स का प्राथमिक अनुरक्षण किया जाता है। यहाँ स्थित विरासत संग्रहालय, नैरो गेज ट्रेनों के सुनहरे अतीत की झांकी को प्रदर्शित करता है एवं सामान्य जनता के लिए निःशुल्क है। रोलिंग स्टॉक पार्क में नैरो गेज के कोच, वैगन, क्रेन एवं विविध संयंत्रों को प्रदर्शित किया गया है।

महत्त्वपूर्ण कार्य

बीटीपीएन वैगनों का आरओएचः अक्टूबर, 2018 तक वडोदरा मंडल यांत्रिक विभाग ने पिछले वर्ष के आउट टर्न 603 बीटीपीएन वैगनों की तुलना में इस वर्ष 665 बीटीपीएन वैगनों का आरओएच किया है। इस वर्ष का प्रदर्शन पश्चिम रेलवे के मुख्यालय द्वारा दिए गए लक्ष्य (प्रति माह 95 वैगन (बीआरसीवाय में 45 बीटीपीएन और केआरसीए में 50 बीटीपीएन) के अनुरूप है।

वडोदरा के प्लेटफॉर्म नंबर 1 से 6 पर WiFi एनेवल्ड सीसीटीवी रोलिंग इन/आउट कैमरे: वडोदरा रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नं 1 से 6 के दोनों सिरों पर ट्रैक के दोनों तरफ, जहाँ कर्मचारी रोलिंग इन/आउट परीक्षा करते हैं, वहाँ मोशन डिटेक्टशन की सुविधा वाली क्लोज्ड सर्किट कैमरा प्रणाली लगाई गई है, जिसका लाइव प्रसारण एसएसई (सीएंडडब्ल्यू) के कार्यालय में होता है। किसी भी असामान्य घटना से बचने और मानव त्रुटियों को कम करने के लिए यह प्रणाली उपयोगी है।

बोल्स्टर स्प्रिंग्स हेतु ट्रॉली : कोच केयर सेंटर प्रतापनगर में डिपो के भीतर कोच के बोल्स्टर स्प्रिंग्स को लाने व ले जाने हेतु मिलराइट विभाग द्वारा एक ट्रॉली बनायी गयी है। बोल्स्टर स्प्रिंग का वजन लगभग 35 किग्रा होता है और इसे उठाने के लिये 2 व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। नई ट्रॉली की मदद से बोल्स्टर स्प्रिंग्स को एक कर्मचारी के द्वारा ही आसानी से एक जगह से दूसरी जगह तक ले जाया जा सकता है।



एलपीजी और ऑक्सीजन गैस कटिंग के उपकरणों के लिए पोर्टेबल ट्रॉली : गैस कटिंग उपकरण और एलपीजी तथा ऑक्सीजन के सिलेंडरों को लाने व ले जाने हेतु पोर्टेबल ट्रॉली वडोदरा मंडल के मैकेनिकल विभाग में कार्यरत् विभागीय कर्मचारियों द्वारा बनायी गयी है। इसे एआरटी/बीआरसीवाय में उपयोग के लिए विकसित की गयी है। इस उपकरण ट्रॉली का कुल वजन केवल 35 किलोग्राम (लगभग) है, जिसे 2 कर्मचारियों द्वारा आसानी से एक जगह से दूसरी जगह तक ले जाया जा सकता है। आपातकालीन स्थिति में इस उपकरण के द्वारा कटिंग का काम अत्यधिक शीघ्रता से शुरू किया जा सकता है। यह उपकरण 30 मिनट तक निरंतर गैस कटिंग कर सकता हैं। इस दौरान गैस कटिंग के अन्य साधनों को जुटाया जा सकता है।



SPARMV कोच में एलईडी लाइट्स : SPARMV/BRCP के सभी 3 कोचों में एलईडी लाइट लगायी गयी है। पूरे SPARMV में रोशनी प्रदान करने के लिए 9W क्षमता की 50 लाइट्स लगायी गयी हैं, जिससे बेहतर रोशनी तथा ऊर्जा की खपत और लागत में कमी होगी। इस कार्य में विभागीय संसाधनों का उपयोग किया गया है।

जैव शौचालय टैंक को नीचे उतारने के लिए गैजेट : मैकेनिकल विभाग के मिलराइट विभाग ने एआरटी/बीआरसीवाय और SPARMV/ BRCP के लिए दुर्घटना की साइट पर कोचों





के जैव शौचालय टैंक (bio- toilet tank) को अपनी जगह से डिटैच करके नीचे उतारने के लिए एक गैजेट विकसित किया है। रिमोट कंट्रोल जैक को छोड़कर उपकरण के सभी घटक विभागीय रूप से बनाये गये।

SPARMV में चार्ज करने के लिए सौर पॉवर पैक : सौर ऊर्जा पैक का उपयोग कर ऊर्जा के गैर-परंपरागत उत्पादन के लिए एक नई प्रणाली SPARMV/BRCP में मौजूद है। इस प्रणाली में 300W क्षमता की एक सौर ऊर्जा उत्पादन





प्रणाली के साथ 12V 150 एएच एसएमएफ मेंटेनेंस मुक्त बैटरी इकाई के साथ 350VA की इन्वर्टर इकाई उपलब्ध है जो कि वीएचएफ सेट चार्जिंग, मोबाइल चार्जिंग और एक्वागार्ड की बिजली की आवश्यकताओं के लिए उपयोग की जाती है।

SPARMV में अग्निशमन के लिए प्रावधान : वडोदरा रेलवे स्टेशन के एसपीएआरएमवी में एक वैकल्पिक अग्निशमन प्रणाली विकसित की गई है।

इस अग्निशमक प्रणाली में निम्नलिखित घटकों का समावेश है: 1) पानी के स्रोत के लिए एलएचबी कोच के दो 'अंडर स्लंग' एसएस टैंक (संयुक्त क्षमता 1370 लीटर) एसपीएआरएमवी के अंडर फ्रेम के नीचे लगाए गए हैं। 2) बिजली के स्रोत के लिए डीजल जनरेटर (4.8 एचपी, 3000 आरपीएम) जो कि 230वी एसी की बिजली प्रदान करता है, लगाया गया है। 3) सेनट्रीफ्यूगल मोनोसेट पंप जिसकी क्षमता 0.75 किलोवाट तथा हेड 19.5 मीटर है तथा वाटर गन जिसके आउटलेट पर एक नोजल जो कि पानी के अंतिम आउटलेट वेग को बढ़ाता है, लगाया गया है। सभी उपकरण क्विक कपलिंग से जुड़े हुए हैं, जिससे सभी उपस्करों को बिना किसी विशिष्ट कौशल के कम समय में आसानी से जोड़ा जा सकता है।

घटना स्थल पर आईसीएफ कोच के बोल्स्टर स्प्रिंग को बदलने के लिए गैजेट: आईसीएफ कोच के बोगियों की कॉइल स्प्रिंग्स के टूटने पर, कोच को पैसेंजर सेवा की अनुमति नहीं दी जा सकती है और कोच को डिटैच करना पड़ता है।



इस तरह के डिटैचमेंट से बचने के लिए, वडोदरा मंडल के सी-डब्ल्यू विंग ने एक गैजेट विकसित किया है, जो टूटी हुई स्प्रिंग्स को घटनास्थल पर ही बदलने में सक्षम बनाता है। यह गैजेट हाइड्रॉलिक जैक (एक 30 टन और दो 5 टन क्षमता) के संयोजन से काम करता है और 60 मिनट में स्प्रिंग बदलने का कार्य पूरा करने में सक्षम है। ■



सेनट्रीफ्यूगल मोनोसेट पंप



एसएस टैंक 'अंडर स्लंग'



फायर फाइटिंग ट्रायल

सुलभ, सुरक्षित, सुखद यात्रा की मार्गदर्शिका : संकेत एवं दूरसंचार विभाग



अमोल कुमार पिंगले
वरिष्ठ मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार अभियंता (सम.) वडोदरा

रेल अंतर्देशीय परिवहन का मुख्य माध्यम है। यह देश की जीवनधारा है, जो देशवासियों को सुगम यातायात सुविधाएं मुहैया करने के साथ-साथ कश्मीर से कन्याकुमारी एवं लेखापानी से ओखा तक देश की एकता एवं अखंडता को कायम रखने के साथ इसके सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है। यह दूरतम स्थान के लोगों को मिलाती है और व्यापार करना, दृश्यदर्शन, तीर्थ, शिक्षा इत्यादि को संभव बनाती है। इसके परिचालन में विभिन्न विभागों की अपनी- अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका है और ये सभी विभाग एक सूत्र में बंधकर यात्री सेवा से जुड़े हुए हैं। दिन-प्रतिदिन भारतीय रेल की बढ़ती हुई उपयोगिता को देखते हुए, रेलवे यात्रियों की सुविधा हेतु नित नए कदम उठा रही है।



पैनल इंटरलॉकिंग



एलईडी सिग्नल

अगर हम भारतीय रेल को एक शरीर के रूप में देखें तो सभी विभाग किसी न किसी महत्त्वपूर्ण अंग की भांति कार्य कर रहे हैं, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में संकेत इसकी आँख और दूरसंचार इसका मस्तिष्क है।

रेलगाड़ियों में सुरक्षा और व्यवस्थाओं को बेहतरीन बनाने के लिए आधुनिक सिग्नलिंग व्यवस्था जिसमें रूट रिले इंटरलॉकिंग, पैनल इंटरलॉकिंग, इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग एवं मल्टी एस्पेक्ट कलर लाइट सिग्नलिंग शामिल किये गये हैं, लाइन क्षमता को बढ़ाने तथा ऑटोमेटिक ब्लॉक सिग्नलिंग की शुरुआत की गयी है। लाइन क्षमता को बढ़ाने के लिए इंटरमीडिएट ब्लॉक सिग्नलिंग की व्यवस्था की गयी है, तथा इसकी गुणवत्ता को बढ़ाने के उद्देश्य से एलईडी सिग्नल लगाये जा रहे हैं। इसके अंतर्गत हमारे वडोदरा मंडल में 03 रूट रिले इंटरलॉकिंग, 35 इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग, 31 पैनल इंटरलॉकिंग, संपूर्ण मंडल में मल्टी एस्पेक्ट कलर लाइट सिग्नलिंग एवं वडोदरा से गोधरा के मध्य इंटरमीडिएट ब्लॉक सिग्नलिंग तथा उत्राण से वडोदरा एवं वडोदरा से गेरतपुर तक संपूर्ण ऑटोमेटिक ब्लॉक सिग्नलिंग कार्यरत् हैं। गोधरा एवं नडियाद जैसे महत्त्वपूर्ण स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग जैसा जटिल कार्य तय समय सीमा के अन्दर संपन्न किया गया।

करचिया यार्ड में परिचालन सम्बंधित बाधा को देखते हुए ट्रैक सर्किट संख्या 102 T को द्विविभाजित कर ट्रैक सर्किट संख्या 101 T के प्रावधान का कार्य विभागीय तौर पर किया गया। इस जटिल कार्य के अंतर्गत मंडल में पहली बार लॉजिक सर्किट में परिवर्तन का कार्य विभागीय तौर पर किया गया, जिससे कि कर्मचारियों की कार्य कुशलता तथा इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम की जानकारी में वृद्धि हुई और साथ ही धन की भी बचत की गयी है।

संकेत विभाग द्वारा 193 डाटा लॉगर्स लगाये गये हैं, डाटा लॉगर को रेलवे के ब्लैक बॉक्स के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि इसके माध्यम से सुदूर से भी इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग/पैनल इंटरलॉकिंग/रूट रिले इंटरलॉकिंग की मॉनिटरिंग की जा सकती है साथ ही, पॉइंट्स पर उपस्कर द्वारा किए गये ऑपरेशन की संख्या का पता लगाया जा सकता है, पॉइंट जोन पर ट्रेन की गति की गणना की जा सकती है। साथ ही मानवीय चूक का पता किया जा सकता है जैसे कि लोको पायलट्स अगर डेंजर सिग्नल पार करते हों। डाटा लॉगर की मदद से किसी भी तरह के विवादित/असामान्य घटना की इन्क्वायरी को आसानी से सुलझाया जा सकता है। साथ ही इसकी मदद से बोब्बिंग ऑफ सिग्नल्स/ट्रैक/पॉइंट /क्रैंक हैंडल प्रेक्षण आसानी से किया जा सकता है जो कि खुली



इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग



डाटा-लॉगर

आँखों से नहीं किया जा सकता है। वडोदरा मंडल में उपरोक्त मॉनिटरिंग के साथ, डाटालागर का प्रयोग कंट्रोलर को यार्ड की ऑनलाइन स्थिति तथा इंटरचेंज पॉइंट्स पर ट्रेनों के समय को कंट्रोल ऑफिस एप्लीकेशन में फीड करने हेतु भी किया जा रहा है।

दूरसंचार के माध्यम से हम ट्रेन संचालन के साथ-साथ यात्रियों को यात्रा योजना से लेकर, पूछताछ, आरक्षण, कोच नंबर, पीएनआर की जानकारी सम्बन्धित सभी सुविधाएं प्रदान करते हैं। अभी हाल में मंडल के सभी स्टेशनों पर 25 वाट वीएचएफ सेट के प्रतिस्थापन का कार्य किया गया ताकि इसकी क्षमता, गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता बनी रहे।

अभी मंडल के 12 स्टेशन में वाई-फाई की सुविधा रेलटेल कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (आरसीआइएल) द्वारा प्रदान की गई है, उसमें हमारे विभाग का पूर्ण सहयोग रहा है। अगर हम बात करें भारतीय रेल को अत्याधुनिक बनाने के लिए उठाये गये कदम की तो इसके लिए जो सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है, वह है हमारे विभाग द्वारा प्रदान की गयी रेलनेट की सुविधा, जिसके माध्यम से एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय में जो भी पत्र आदि कर्मचारी के हाथों से भेजने में घंटो या दिन लग जाते थे वो अभी चंद मिनटों में रेलनेट के जरिये भेजा जा सकता है। इसकी वजह से समय की बचत तो होती ही है साथ-साथ रेलवे को राजस्व की भी बचत होती है।



स्टेशन पर मुफ्त वाई-फाई

बात करें वडोदरा मंडल में यात्री सुविधाओं की तो दूरसंचार विभाग आपकी यात्रा प्लानिंग से लेकर आपको ट्रेन डिब्बे के अन्दर गंतव्य स्थान पर बैठने तक में सुगमता हेतु आवश्यक सूचनाएं प्रदान करता है। अगर कोई व्यक्ति टिकट काउंटर पर जाता है, तो ट्रेनों की जानकारी हेतु हमने नए बुकिंग कार्यालय परिसर में डायरेक्शन-वाइज स्क्रोलिंग टाइम टेबल डिस्पले सिस्टम लगा रखे हैं, जिसके माध्यम से वडोदरा स्टेशन से गुजरने वाली सभी गाड़ियों की समय सारणी की जानकारी मिलती है। यात्री टिकट निकालते समय अगर बुकिंग



25वी वीएचएफ सेट

क्लर्क के व्यवहार से संतुष्ट/असंतुष्ट है, तो हमारे द्वारा लगाये गये कस्टमर सैटिस्फैक्शन रेटिंग सिस्टम के जरिये अपना फीडबैक दे सकते हैं।



स्क्रॉलिंग टाइम टेबल डिस्प्ले सिस्टम



ग्राहक संतुष्टि मूल्यांकन प्रणाली

वडोदरा प्लेटफॉर्म के एनाउंसर केबिन में विभिन्न प्लेटफॉर्म पर चल रहे कोच गाइडेंस डिस्प्ले बोर्ड्स एवं अन्य बोर्ड्स को एक ही पीसी में एकीकृत कर एनाउंसर द्वारा डाटा एंट्री

की प्रक्रिया को सुगम किया गया है। यात्री अगर अपनी यात्रा की योजना बना रहा है तो इसके लिए हमने यात्रा प्लानर की सुविधा प्रदान की है, जहाँ विभिन्न प्रकार की गाड़ियों के चलने की तारीख समय इत्यादि की जानकारी मिलती है। आरक्षित टिकटों की बुकिंग में पारदर्शिता हेतु मंडल के वडोदरा, प्रतापनगर, आनंद, नडियाड, सीबीओ के आरक्षित बुकिंग केन्द्रों पर बायोमीट्रिक टोकन प्रणाली लगायी गयी है। बायोमीट्रिक टोकन प्रणाली के माध्यम से आरक्षित टिकट लेने के लिए अपने आये हुए क्रमानुसार टोकन प्राप्त करना होता है, और फिर टोकन क्रमांक के अनुसार टिकट खिड़की पर पहुंचकर टिकट ले सकते हैं, जिससे कि जो भी व्यक्ति जिस क्रम से पहुँचे हों उसी क्रम से उनको टिकट मिलती है विभिन्न डिस्प्ले बोर्ड्स के माध्यम से किसी भी यात्री को पूछताछ खिड़की पर लम्बी पंक्ति में खड़े होकर गाड़ी की जानकारी पता करने के झंझट से बचने के लिए डिस्प्ले यूनिट की व्यवस्था की गयी है जिसके माध्यम से यात्रियों को विभिन्न दिशाओं में जाने वाली गाड़ियों की प्लेटफॉर्म संख्या, गाड़ी की वर्तमान स्थिति का पता चल जाता है।

यूँ तो हम बहुत से माध्यमों से अपने पीएनआर की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जैसे इन्टरनेट, 139 पर बात करके या फिर सरल मोबाइल सन्देश भेजकर, लेकिन इन सबसे बहुत ही आसान माध्यम हमारे द्वारा स्टेशन परिसर में स्थापित की गयी टच कीओस्क मशीन है, जिससे यात्री अपने पीएनआर की जानकारी मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं। बात करें, चार्टिंग के बाद यात्री के टिकट की स्थिति जानने की तो ट्रेन चार्ट डिस्प्ले सिस्टम के माध्यम से चार्टिंग के बाद यात्रियों के टिकट की क्या स्थिति है, इससे अवगत कराया जाता है। इतना ही नहीं, आज का आरक्षण काउंटर पर लगे डिस्प्ले सिस्टम की मदद से उसी दिन चलने वाली गाड़ियों में सीट की उपलब्धता की जानकारी मिलती है। वडोदरा स्टेशन के नए बुकिंग कार्यालय परिसर में दिशा के अनुसार स्क्रॉलिंग टाइम टेबल डिस्पले लगाया गया है, जिसके माध्यम से वडोदरा स्टेशन से गुजरने वाली सभी गाड़ियों की समय सारणी की जानकारी मिलती है। समय सारणी दर्शाने के लिए टीवी का प्रयोग इस प्रकार प्रथम बार किया गया।

यात्रियों की सुविधा हेतु मुख्य हाल से लेकर प्लेटफॉर्म तक विभिन्न तरह के डिस्प्ले बोर्ड्स लगे हुए हैं। इसमें मल्टीलाइन डिस्प्ले बोर्ड, जो कि मुख्य हॉल में लगे हुए हैं, के माध्यम से एक साथ कई गाड़ियों का नंबर, नाम, अनुमानित समय, आगमन/प्रस्थान समय और उसकी प्लेटफॉर्म संख्या दर्शाते हैं। प्लेटफॉर्म डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से किसी निहित प्लेटफॉर्म पर आ रही गाड़ियों का पता चलता है। जब यात्री अपने गाड़ी के आने वाले प्लेटफॉर्म पर पहुँच जाते हैं तो उनके मन में जो सबसे बड़ी समस्या रहती है कि इस स्टेशन में गाड़ी 2 मिनट/5 मिनट या जिस किसी भी निहित समय के लिए रूकती है, उतनी देर में अपने कोच में, वांछित सीट पर कैसे पहुंचेंगे, तो इसके लिए दूरसंचार विभाग ने कोच गाइडेंस डिस्प्ले बोर्ड्स लगाये हैं। जिसके माध्यम से यात्री अपने कोच की स्थिति के अनुसार पहले से ही प्लेटफॉर्म पर खड़े होने का स्थान सुनिश्चित कर सकते हैं, इस तरह से किसी भी तरह की अफरा-तफरी या अनापेक्षित घटना की सम्भावना नहीं रह जाती है।

अगर कोई यात्री अपनी ट्रेन के समय से पहले स्टेशन परिसर में पहुँच जायें या यात्री समय पर पहुंचे हैं और उनकी गाड़ी किसी कारणवश विलंब से चल रही हो, तो यात्री प्रतीक्षालय में गाड़ी का इंतजार करते हैं और वहां जिस टेलीविजन की व्यवस्था की गयी है, उसके माध्यम से मनोरंजन तो होगा ही साथ ही गाड़ियों के आगमन / प्रस्थान की सूचना भी टेलीविजन और अनाउंसमेंट के माध्यम से दी जाती है। साथ ही प्लेटफॉर्म परिसर में लगाये गये विभिन्न टेलीविजनों पर समय-समय पर रेलवे बोर्ड या हेडक्वार्टर द्वारा निर्देशित ऑडियो/वीडियो चलाये जाते हैं।

आज के समय में किसी भी सार्वजनिक स्थल की सबसे ज्वलंत समस्या है, उस स्थान की सुरक्षा। इसके अभाव में उस स्थान की शांति व्यवस्था भंग हो सकती है। उन्हीं सार्वजनिक स्थलों में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है हमारा रेल परिसर एवं इसकी सुरक्षा व्यवस्था को सुनिश्चित करने हेतु दूरसंचार विभाग ने विभिन्न स्थानों पर सीसीटीवी कैमरों की व्यवस्था कर रखी है, जो चौबीसों घंटे इस परिसर की निगरानी करते हैं, जिससे रेल यात्री सुरक्षित महसूस करते हुए आगमन/प्रस्थान कर सकते हैं। साथ ही सीसीटीवी कैमरे की रिकॉर्डिंग की मदद से हम किसी असामाजिक और अराजक तत्व की पहचान भी आसानी से करने में सक्षम हैं। विगत कुछ दिनों में आरपीएफ विभाग ने सीसीटीवी फुटेज के माध्यम से कई केस का निपटारा भी किया है।



इस प्रकार हम पाते हैं कि यदि रेलवे में यात्रियों की सुरक्षा एवं सुविधा की बात करें तो निःसंदेह संकेत एवं दूरसंचार का योगदान परिचालन से लेकर यात्री सुविधाओं तक अतुलनीय है, और यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष की बात है कि हम अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक निर्वाह करते हुए नित-प्रति यात्रियों को बेहतर से बेहतर सुविधा प्रदान करने हेतु प्रयासरत हैं। ■

कर्षण वितरण संगठन – हमारी यातायात सेवा का भविष्य

सुनील कुमार गुप्ता
वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (टीआरडी)



वडोदरा मंडल में कर्षण वितरण प्रणाली विरार–साबरमती खंड के साथ 1972–73 में पहली बार विद्युतीकरण के साथ शुरू हुई।

मंडल में विद्युतीकरण

मंडल में बड़े सेक्शन का काल क्रमानुसार विद्युतीकरण निम्नानुसार सारणीबद्ध किया गया है।

क्र. सं.	सेक्शन	आरकेम	टीकेएम	प्रारंभ करने का वर्ष
1	गेरतपुर–वडोदरा	88	334.31	1972–73
2	वडोदरा–सूरत	128	372.96	1972–73
3	आणंद–गोधरा	76	126.58	1983–84
4	वडोदरा–गोधरा	70	163.53	1985
5	भरुच–दाहेच	62	86.80	2011–12

केन्द्र सरकार द्वारा दिए गए निर्देशानुसार 100% विद्युतीकरण प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। वडोदरा मंडल के शेष सेक्शनों पर भी योजना बनाई गई है, और विद्युतीकरण के लिए स्वीकृति प्रदान की गई है जिसे को द्वारा क्रियान्वित किया जाएगा। बड़े सेक्शनों का आगामी विद्युतीकरण विवरण निम्नानुसार है।

क्र.सं.	सेक्शन	टीकेएम
1	आणंद–खंभात	60
2	कणजरी वोरियाबी–वडताल	80
3	नडियाद–मोडासा	130
4	वासद–कठाणा	50
5	विश्वामित्री–छोटाउदेपुर	130
6	राजपीपला–अंकलेश्वर	75

स्वीचिंग स्टेशन

भरुच, लाकोद्रा, मकरपुरा, मेहमदाबाद, आणंद, समलाया, गोधरा एवं वाग्रा में ऊर्जा माँग को पूरा करने के लिए 8 कर्षण उपकेन्द्र कार्य कर रहे हैं। मंडल में 8 सेक्शनिंग पोस्ट और 24 सब–सेक्शनिंग पोस्ट कार्यरत है।

ओएचई डिपो एव रिमोट कन्ट्रोल सेंटर

कोसंबा, भरुच, समनी, विश्वामित्री, वडोदरा यार्ड, आणंद, डाकोर एवं गोधरा में नेमी अनुरक्षण और ब्रेकडाउन को अटेण्ड करने के लिए 8 ऊपरी उपस्कर कार्यरत हैं। एससीएडीए पर सभी परिचालन नियंत्रण के लिए प्रतापनगर में एक रिमोट कंट्रोल सेंटर आरम्भ किया गया है।

पीएसआई/सब स्टेशन डिपो

मंडल स्थित भरुच, विश्वामित्री, मेहमदाबाद और गोधरा में 4 पीएसआई/ एसएस डिपो हैं।

टावर वैगन

वर्तमान में 8 व्हील वाले तीन टावर वैगन और 4 व्हील वाले चार टावर वैगन हैं। सीनियर सेक्शन इंजीनियर (टीआरडी) वर्कशाप, विशवमित्री द्वारा विभागीय तौर पर सभी टावर वैगनों का अनुर क्षण किया जा रहा है।

ओएचई और पीएसआई परिसम्पतियों का थर्मो–विजन जाँच

कर्षण वितरण प्रणाली, थर्मोविजन कैमरा की विश्वसनीयता को बढ़ाने का कार्य ओ एच ई और पी एस आई परिसम्पतियों में किया जा रहा है, जो कि सिस्टम में असाधारण तापमान को रिकार्ड कर तदानुसार कार्यवाही करता है। वर्तमान में थर्मोविजन 6 माह में एक बार किया जा रहा है।

कर्षण ऊर्जा के लिए ओपेन एक्सेस

वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर (कर्षण विरण) वडोदरा को मुख्यालय के द्वारा गुजरात राज्य के लिए, ट्रैक्शन एनर्जी के ओपन एक्सेस हेतु नोडल आधिकारी नामित किया गया है, इस वर्ष प्रतिदिन शेड्यूलिंग को सही प्रकार से करने के कारण ट्रैक्शन सप्लाई में कोई भी अवरोध उत्पन्न नहीं हुआ है एवं लगभग 45 करोड़ की बचत दिसम्बर, 2018 तक वडोदरा मंडल को ट्रैक्शन एनर्जी बिल में हुई है।

वडोदरा मंडल के कर्षण वितरण विभाग द्वारा किये जा रहे कार्य

- वडोदरा यार्ड में अहमदाबाद–गोधरा लाइनों के पृथक्करण के संबंध में ओ एच ई सुधार कार्य।
- नेशनल हाई स्पीड रेल कॉरपोरेशन के संबंध में छायापुरी का विद्युतीकरण।
- पिलोल में नये हिंदुस्तान पेट्रोलियम साइडिंग का विद्युतीकरण।

- वरनामा में नई कॉनकोर साइडिंग का विद्युतीकाण।
- विश्वामित्री–प्रतापनगर सेक्शन का विद्युतीकरण।

कर्षण वितरण विभाग में उपलब्ध बड़े संशोधन

विभाग के पास एक यूटीवी और एक डीजल 5–टन क्रेन, जो कि बड़े कार्यों में पोर्टल्स/बूम्स/टीटसी को खड़ा करने के लिए उपयोग में लायी जा रही हैं। इसके अलावा दैनिक अनुरक्षा और खराबियों को सुधारने (अटेंडिंग ब्रेक डाउन) के लिए विभाग के पास 5 बड़े ट्रक और 3 आपातकालीन वैन्स उपलब्ध हैं।

कर्षण वितरण विभाग द्वारा किया गया सराहनीय कार्य

यह पाया गया कि पॉजिटिव रेल अर्थात सि. एवं दू.सं. विभाग की रेल के साथ ट्रैक्शन बांड स्पर्श होने के कारण ट्रैक सर्किट विफल हो गया। यह घटना ट्रैक्शन बांड्स इंसुलेटेड स्लीव के स्थान परिवर्तन के कारण घटी। वडोदरा मंडल के कर्षण वितरण विभाग द्वारा समस्या का विस्तृत अध्ययन किया गया और डीडब्ल्यूसी पाइड के एक छोटे भाग को ट्रैक्शन बांड में लगाया गया जिससे ट्रैक्शन बांड के लेखे पर ट्रैक सर्किट विफलता की संभावना को टाला गया। ■









क्रेन द्वारा बूम्स को खडा करना

कलम के धनी रेलकर्मियों एवं लेखकों से अपील

- आपकी उत्कृष्ट रचनाओं का 'भारतीय रेल' पत्रिका में स्वागत है।
- रेलों के सतरंगी कार्यक्षेत्र में जीवन के सभी पहलुओं के न जाने कितने रंग उभरते हैं, अपनी कलम उठाएं और उन्हें कागज पर प्रस्तुत कर डालिए।
- आपके कार्यक्षेत्र में न जाने कितना रोचक, लोमहर्षक अथवा प्रशंसनीय घटित हुआ हो सकता है, ऐसे प्रसंग हमें भेजिए, हम उन्हें सहर्ष प्रकाशित करना चाहेंगे।
- क्षेत्रीय रेलों, कारखानों, संस्थानों एवं मंडलों के उल्लेखनीय कार्यकलापों को भी हम प्रकाशित करना चाहेंगे। कृपया कार्यालय प्रमुख उपयुक्त फोटो सहित सामग्री प्रकाशित करने के लिए समय से रचनाएं भिजवाएं। विशेष आलेखों के साथ लेखक अपना संक्षिप्त परिचय भी भेजें।
- अपनी रचनाओं की मूल प्रति ही भेजें। लेख के साथ लेखक एक घोषणा पत्र भी संलग्न करें, जिसमें यह स्पष्ट किया गया हो कि '... शीर्षक से शुरू होने वाला लेख/कहानी/कविता आदि मौलिक एवं अप्रकाशित है, तथा इसमें दी गई सामग्री की जिम्मेदारी मेरी है। सामग्री या फोटो में किसी प्रकार कॉपीराईट का उल्लंघन नहीं है। इसके सम्पादन के अधिकार सम्पादक के पास होंगे।' प्रतिलिपि या अपठनीय रचनाएं स्वीकार्य नहीं होंगी।
- रचनाएं तथा छायाचित्र editorbhartiyarailrb@gmail.com पर ई–मेल द्वारा भी भेजे जा सकते हैं।

संपादक, भारतीय रेल, 9717641075

इस पत्रिका में नाम से छपे लेख एवं फोटो संबंधित लेखकों द्वारा उपलब्ध कराये जाते हैं। भविष्य में लेख तथा फोटो के कॉपीराइट को लेकर होने वाले विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। भारतीय रेल पत्रिका या रेल मंत्रालय किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं है। - संपादक



संरक्षा भारतीय रेल का स्पंदन

एच.एल. मीना
वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी, वडोदरा मंडल

भारतीय रेल 24X7 रात-दिन लगातार 16 अप्रैल, 1853 से देश की सेवा में उत्तरोत्तर कार्यरत है। लगभग 165 वर्षों से भारतीय रेल ने भौगोलिक, क्षेत्रीय, जलवायु की दृष्टि से अलग-अलग प्रान्तों को जोड़कर आधुनिक भारत के निर्माण में क्रांतिकारी योगदान दिया है। आज हमारे सड़क परिवहन, हवाई परिवहन की तुलना में भारतीय रेल ने सब से सुरक्षित परिवहन के रूप में अपना स्थान बनाया है, जिसके विश्वास पर लगभग 3 करोड़ यात्री दिन-रात अपने गंतव्य तक सुरक्षित पहुँचते हैं। यात्रियों को सुरक्षित लाने-ले जाने का कारण है रेलवे द्वारा संरक्षा को सर्वोपरि अपनाया जाना। भारतीय रेल का मूल मंत्र है संरक्षा, सुरक्षा एवं समयपालन। हम संरक्षा का अनुपालन गाड़ियों के परिचालन के दौरान करते हैं इसलिए रेलवे के यात्री एवं माल सामान सुरक्षित पहुँचते हैं।

संरक्षा का अनुपालन करना प्रत्येक रेल सेवक का सर्वोच्च कर्तव्य है चाहे वह किसी भी पद पर कार्यरत हो। गाड़ियों के परिचालन का कार्य मुख्यतौर पर इंजीनियरिंग, यांत्रिक, संकेत, बिजली तथा यातायात विभाग सीधे तौर पर करते हैं। इंजीनियरिंग विभाग के कार्य में रेलपथ का रख-रखाव, नवीनीकरण जिसमें पुलिया (आरओबी, आरयूबी) भी शामिल है तथा समपार फाटकों का रख-रखाव इत्यादि मुख्यरूप से शामिल हैं। रेलगाड़ियों के सुरक्षित परिचालन के लिए रेलपथ का फिट रहना अत्यंत आवश्यक है इसलिए रेलपथ की नियमित रूप से पेट्रोलिंग की जाती है।

विशेष कार्य जैसे कि रेलपथ का नवीनीकरण, पुलिया का निर्माण आदि कार्य विशेष सावधानी रखते हुए सक्षम इंजीनियरों, कर्मचारियों द्वारा किये जाते हैं। ऐसे कार्य जहाँ सामान्य गति के दौरान कार्य किया जाना संभव नहीं है, वहां आवश्यकतानुसार गति प्रतिबंध तथा इंजीनियरिंग फुल ब्लाक के दौरान किये जाते हैं। इस प्रकार के कार्यस्थलों का नियमानुसार इंजीनियरिंग इंडीकेटर्स, फ्लेगमेन तथा लुकआउट मेन द्वारा एवं हाथ संकेतों से बचाव किया जाता है जोकि गाड़ियों के परिचालन में संरक्षा को सुनिश्चित करता है। कुछ कार्य ऐसे भी किये जाते हैं, जहाँ रेलपथ के समीप मोटर व्हिकल का आना-जाना होता है इस तरह के कार्यस्थल का बचाव प्रभावी बेरिकेडिंग अथवा आवश्यक इंजीनियरिंग फुल ब्लाक के तहत किया जाता है ताकि रेलगाड़ियों को निर्बाध रूप से चलाया जा सके।

यांत्रिक विभाग द्वारा सवारी डिब्बों, मालगाड़ी के डिब्बों का निर्माण, रख-रखाव का कार्य किया जाता है ताकि रेलगाड़ी बिना किसी खराबी जैसे कि हॉट एक्सल, ब्रेक बाइंडिंग एवं अन्य यांत्रिक खराबी के सवारी एवं माल सामान को गंतव्य तक ले जा सके। गाड़ी परिचालन के दौरान यदि कोई खराबी आती है, उसकी रोकथाम के लिए रेलवे के सतर्क कर्मचारियों द्वारा अवलोकन करने पर आवश्यक कार्यवाही करके संभावित दुर्घटना को रोका जाता है।

रेलगाड़ियों के आधुनिकीकरण तथा भारी यातायात को सफल एवं सुरक्षित बनाने के लिए संकेत विभाग द्वारा आधुनिकतम, सुरक्षित संकेत प्रणाली को लगाया गया है जिसमें इंटरलॉकिंग के साथ-साथ संकेत जो कि किसी भी असुरक्षित स्थिति में स्वत: 'ऑन' (लाल) हो जाता है, जो कि संरक्षा की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है।

संकेतों एवं इंटरलॉकिंग की गुणवत्ता के कारण आज भारतीय रेल की गतिसीमा अधिकतम 160 केएमपीएच पर बढ़ाई जा सकी है तथा वर्तमान में भारतीय रेल द्वारा 180 केएमपीएच पर ट्रायल कर बढ़ाया जा रहा है। बिजली विभाग द्वारा ओएचई का निर्माण कार्य, रख-रखाव, इलेक्ट्रिक लोको का रख-रखाव एवं कर्षण परिचालन इत्यादि मुख्य कार्य हैं। संरक्षा की दृष्टि से 25000 वॉल्ट्स की लाइन का रख-रखाव अति संवेदनशील है। लोको परिचालन में लोको पायलट के द्वारा सुरक्षित गाड़ियों का आना-जाना, सतर्कतापूर्वक कार्य करना हमारे लोको पायलट की निष्ठा का एक शाश्वत प्रमाण है, जो अपनी ट्रेन में हजारों यात्रियों के भारतीय रेल पर भरोसे को और मजबूती प्रदान करता है।

भारतीय रेल की यातायात शाखा समस्त गतिविधियों को एक ऐसी श्रृंखला में समायोजित कर गाड़ियों का परिचालन करती है जोकि एक गाड़ी नियंत्रक, स्टेशन मास्टर, यार्ड मास्टर, केबिनमेन, लीवरमेन, पॉइंट्समेन, प्लेटफॉर्म पोर्टर, फाटक वाला तथा एक गार्ड के रूप में अपनी सेवा करके सभी विभागों से समन्वय रखते हुए गाड़ियों का परिचालन करती है जो कि प्रबंधकीय तौर पर पूरे विश्व में अपने आप में मिशाल है। भारतीय रेलों का परिचालन विश्व में अनुसंधान का एक विषय है यह हम सब को गौरवान्वित करता है। हालांकि संरक्षा सुनिश्चित करना शाखा एवं कार्य करने वाले समस्त कर्मचारियों का कार्य है लेकिन सभी विभागों में संरक्षा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है अथवा नहीं इस पर नजर रखने के उद्देश्य से भारतीय रेल में संरक्षा विभाग कार्यरत् है जो कि रेलवे बोर्ड, क्षेत्रीय रेलवे एवं मंडल स्तर पर कार्यरत् है। संरक्षा विभाग द्वारा विशेष अभियान, मासिक अभियान चलाये जाते हैं, जिससे संरक्षा अनुपालन के दौरान रेलगाड़ियों का सुरक्षित परिचालन किया जाता रहे।

संरक्षा विभाग द्वारा आपदा प्रबंधन योजना, रेलवे बोर्ड स्तर, जोनल स्तर पर एवं मंडल स्तर पर तैयार की गई हैं। इसका उद्देश्य आपदा के समय आवश्यकतानुसार मंत्रालय, सचिव, राज्य, जिला, स्थानीय प्रशासन एवं एनडीआरएफ, सुरक्षाबलों तथा पुलिस प्रशासन से संपर्क कर आपदा से निपटा जा सके। शिक्षा एवं जानकारी की दृष्टि से यह अति महत्त्वपूर्ण है। आपदा प्रबंधन अभ्यास हेतु रेलवे द्वारा मॉकड्रिल का आयोजन किया जाता है तथा इस अभ्यास में पायी गयी कमियों के निवारण हेतु उचित कदम उठाये जाते हैं, जो कि आपदा के दौरान निपटने में हमें सहायता करते हैं।

संरक्षा विभाग द्वारा सेफ्टी ऑडिट किये जाते हैं, संरक्षा सेमिनार आयोजित किये जाते हैं, कर्मचारियों की काउन्सिलिंग की जाती है एवं औचक निरिक्षण किया जाता है। कर्मचारियों का प्रशिक्षण, सावधिक चिकित्सा परीक्षण, सक्षमता प्रमाणपत्र इत्यादि नियमित रूप से हो रहा है यह भी सुनिश्चित किया जाता है। संरक्षा विभाग द्वारा संरक्षा के प्रति सजग एवं सतर्क कर्मचारियों को कार्यस्थल पर नगद पुरस्कार दे कर सम्मानित किया जाता है। अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, महाप्रबंधक, पश्चिम रेलवे एवं मंडल रेल प्रबंधक, वडोदरा द्वारा इनका सम्मान नियमित रूप से प्रशस्ति पत्र एवं नगद पुरस्कार देकर किया जाता है। आइये हम सब मिलकर ऐसे कर्मचारियों से प्रेरणा लें तथा भारतीय रेल को दुर्घटनारहित रेल बनाने में सहभागी बनें। ऐसा करने से रेल गाड़ियों के सुरक्षित परिचालन में आ रही कमियां दूर होती है और संरक्षा सुनिश्चित होती है जिससे हमारा लक्ष्य 'दुर्घटना रहित रेल गाड़ियों का परिचालन' केवल कल्पना या लक्ष्य नहीं बल्कि सत्य है इसे प्रतिपादित किया जा सके। इसीलिए भारतीय रेल का प्राण है 'संरक्षा' एवं स्पंदन है 'संरक्षा'। ■

कार्मिक विभाग – वडोदरा मंडल

उमेश त्रिवेदी
वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी



पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल पर 11900 कर्मचारी कार्यरत् हैं। कार्मिक अनुभाग का कार्य मानव शरीर में बहते रक्त के समान है जैसे शरीर के सभी अंग में रक्त पहुंचता है उसी तरह कार्मिक अनुभाग रेलवे के सभी अनुभाग में शुरू से अंत तक अपना दायित्व निभाता है।

किसी भी कर्मचारी की नियुक्ति से अंतिम निपटारा तक का सभी कार्य कार्मिक विभाग सुचारु रूप से करता है। रेल से सुरक्षित संचलन का जितना महत्त्व रेल प्रशासन का है उतना महत्त्व प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े कर्मचारी के हित में आवश्यक महत्त्वपूर्ण जानकारी को उपलब्ध कराना है। इस उद्देश्य से कल्याण/स्थापना विभाग सदैव समय-समय पर संपर्क अभियान चलाता है एवं विभिन्न शिकायतों का समाधान करता है इसमें कर्मचारी की सेवा-पंजिका, छुट्टी लेखा, वेतनवृद्धि, पदोन्नति, पदावनति, स्थानांतरण, शास्ति, प्रशंसापत्र इत्यादि की एन्ट्री को दिखाया जाता है। कर्मचारी को प्रदान किये जाने वाले विभिन्न भत्ते, प्रशासनिक नियम, छुट्टी नियम, कर्मचारी लाभ निधि जैसे जटिल विषय की सरल भाषा में जानकारी देता है। इससे छोटे स्टेशनों तथा दूर-दराज के क्षेत्र में कार्यरत् मंडल के सभी कर्मचारी को नियमों की जानकारी होती है।

कर्मचारी कल्याण विभाग समय-समय पर छोटे स्टेशनों तथा दूर-दराज के क्षेत्र में कार्यरत् मंडल के सभी कर्मचारी से संपर्क कर उनकी समस्या का समाधान करता है, कर्मचारियों को विभिन्न कर्मचारी लाभ निधि योजना की जानकारी प्रदान करता है। छात्रवृत्ति, चश्मे की प्रतिपूर्ति, दांत लगवाने की प्रतिपूर्ति, मेंन्टेनेन्स ग्रांट, कृत्रिम अंग, शिक्षा अनुदान, डिस्ट्रेस फंड, कर्मचारी शिविर, बाल शिविर आदि योजना की जानकारी देता है एवं सही कर्मचारी को उनका लाभ देने हेतु उचित कार्यवाही करता है। कर्मचारी की मृत्यु पर उनके परिवार को जरुरी लाभ देने एवं उनके आश्रित को अनुकंपा पर नियुक्ति देने हेतु सही मार्गदर्शन देता है।

स्थापना अनुभाग समय पर पदोन्नति, पदावनति, स्थानांतरण, अंतर मंडल/रेल स्थानांतरण, एमएसीपी, अनापत्ति प्रमाणपत्र, यूनियन/एमपी-एमएलए संबंधी पत्राचार, सेवा-पंजिका/छुट्टी लेखा का रख-रखाव करता है।

निपटारा अनुभाग सेवा-निवृत्त कर्मचारी का भविष्य निधि का भुगतान, सेवा-निवृत्ति उपदान, पेंशन का भुगतान, पेंशन का कोम्युटेशन, छुट्टी का नगदीकरण आदि का भुगतान सेवा निवृत्ति के दिन करता है। कर्मचारी को सेवा निवृत्ति प्रमाणपत्र, आरईएलएच कार्ड, गोल्ड मेडल भी उपलब्ध कराता है।

रेलवे बोर्ड एवं प्रधान कार्यालय से समय-समय पर जारी परिपत्र, नियमों को वडोदरा मंडल पर समयानुसार पारित किया जाता है। कर्मचारी को समय पर सुविधा देने हेतु कर्मचारी चार्टर का अनुपालन किया जाता है। ■

मंडल चिकित्सालय – स्वस्थ कर्मी हमारा उद्देश्य



डॉ. ब्रह्म प्रकाश
मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, वडोदरा मंडल

मंडल रेल चिकित्सालय, प्रतापनगर 99 बिस्तरों वाला चिकित्सालय है, जो वर्तमान में लगभग 13360 कर्मचारियों व लगभग 8867 सेवानिवृत रेलवे कर्मियों व उनके परिवार को सेवा दे रहा है, यह चिकित्सालय पूर्णरूप से शल्य चिकित्सा, प्रसूति विभाग व स्त्रीरोग, उदर रोग, बाल रोग चिकित्सा, नेत्र रोग चिकित्सा, जठरान्त्र चिकित्सा, विषज्ञान चिकित्सा, रोग विज्ञान के अतिरिक्त कुछ अधिक जटिल एवं विशिष्ट शल्य चिकित्सा लेप्रोस्कोपी यूरोलोजी की भी सुविधाएं उपलब्ध करा रहा है। इसी अस्पताल में घुटनों, कंधे, कोहनी एवं कमर के जोड़ों का प्रतिस्थापन किया जा रहा है।

बिस्तर अनुग्रहण अनुपात, इस चिकित्सालय में सामान्यत: 86 से 90% प्रतिशत से अधिक भी हो जाता है।



बाह्य चिकित्सा विभाग की सेवाएं इस अस्पताल में प्रतिदिन लगभग 350 से 400 लोग लेते हैं। यदि अन्य स्वास्थ्य इकाइयों को सम्मिलित कर लिया जाए तो लगभग 770 से 800 रोगियों को पूरे मंडल में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा रही हैं।

इस चिकित्सालय में 25 चिकित्सक अपनी सेवाएँ उपलब्ध करवा रहे हैं। पूरे मंडल में 36 परिचारिका के अलावा अन्य स्टाफ फार्मासिस्ट, रेडियोग्राफर, लेबोरेटरी तकनीशियन तथा वर्ग चार के स्टाफ अपनी सेवाएँ देने के लिए उपलब्ध हैं।

इस चिकित्सालय की तीन मुख्य सेवाएँ जैसे कि एम्ब्युलेन्स, हाउस कीपिंग, रसोई घर को तीन वर्षों के लिए बाहरी संस्था को ठेके पर दिया गया है, जिससे रेलवे को अनुमानत: 1.5 करोड़ रुपए प्रतिवर्ष की बचत हो रही है। सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार आने से मरीज अब अधिक संतुष्ट है।



महिला वार्ड का नवीनीकरण एवं वातानुकूलन किया गया है। इस चिकित्सालय के सभी वार्ड में स्थित सभी साधारण पलंग (बिस्तर) को बदलकर कर उनकी जगह पर मॉड्यूलर बेड उपलब्ध करा दिए गए हैं, और आइसीयू में भी सभी बेड रिमोट कंट्रोल वाले उपलब्ध करवा दिये गए हैं।

इस चिकित्सालय में महत्त्वपूर्ण स्थानों पर 48 सीसीटीवी कैमरा लगाए गए हैं, जो कि दिन-रात काम करते हैं। यह अपने आप में इस दिशा में पश्चिम रेलवे में उठाया गया पहला कदम है। सभी चिकित्सकों के कक्ष में, कार्यालय में, चिकित्सा भंडार कक्ष व औषधि वितरण कक्ष में वाई-फाई की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं।



यह चिकित्सालय पहली बार संपूर्ण भारतीय रेल में 'स्टेम सेल रिसर्च' एवं 'एकेडेमिक ट्रायल' पर कार्य करने वाला प्रथम चिकित्सालय है।



निम्नलिखित अस्पतालों से रेलवे कर्मचारियों के लाभार्थ अनुबंध किया गया है, जिसमें रेलवे कर्मचारियों का नि:शुल्क इलाज किया जाएगा।

- ट्राईकलर हॉस्पिटल, वडोदरा, रेडिओलोजिकल जांच हेतु
- यूनिपैथ स्पेशियलिटि लैब, वडोदरा, पैथोलोजी जांच हेतु
- संकल्प आई हॉस्पिटल, वडोदरा स्कैन व आँख की जांच हेतु
- सनशाईन ग्लोबल हॉस्पिटल, वडोदरा, मल्टीस्पेशियलिटी
- एम.पी. शाह कैंसर हॉस्पिटल, अहमदाबाद (जीसीआरआई)
- कैलाश कैंसर हॉस्पिटल, गोरज वडोदरा
- एचसीजी कैंसर हॉस्पिटल, वडोदरा
- स्टरलिंग कैंसर हॉस्पिटल, वडोदरा
- श्री हिमालया हॉस्पिटल व रिसर्च इंस्टीट्यूट वडोदरा, कैंसर के इलाज हेतु
- जायडस हॉस्पिटल व हेल्थकेयर रिसर्च, आणंद मल्टीस्पेशियलिटी।

यात्री सुरक्षा धर्म हमारा यात्री सुरक्षा कर्म हमारा



हेमंत कुमार
वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त, रेलवे सुरक्षा बल, वडोदरा मंडल

वडोदरा मंडल का कार्यक्षेत्र मुंबई–दिल्ली, अहमदाबाद प्रमुख रेल मार्ग होने के कारण अत्यधिक संवेदनशील एवं सुरक्षा की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है। देश के सभी ओर से गुजरात आने वाली प्रत्येक गाड़ियां वडोदरा मंडल से गुजरने के कारण रेल यातायात के सुचारु परिचालन हेतु वडोदरा मंडल में सुरक्षा के चाक–चौबंद प्रबंध का होना अत्यंत आवश्यक है।

वडोदरा मंडल में छह प्रमुख स्टेशन–अंकलेश्वर, भरुच, वडोदरा, गोधरा, आणंद एवं नडियाद हैं। सभी छह स्टेशनों पर सीसीटीवी कैमरे लगाये गए हैं। रेलवे सुरक्षा बल की जिम्मेदारियों में रेलवे संपत्ति की सुरक्षा के साथ–साथ रेल यात्रियों की सुरक्षा भी शामिल है हालांकि मामले के पंजीकरण एवं उसकी जांच के अधिकार अभी जीआरपी के पास हैं। बढ़ती जिम्मेदारियों एवं क्षेत्र की संवेदनशीलता को देखते हुए वडोदरा मंडल में सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न कदम उठाए गए हैं।

बल की तैनाती

स्टेशनों, यात्री गाड़ियों में यात्रियों को बेहतर सुरक्षा प्रदान करने हेतु वडोदरा मंडल में 575 रेलवे सुरक्षा बल स्टाफ तैनात/स्वीकृत हैं। मंडल में वर्तमान में 20 जोड़ी गाड़ियों में अनुरक्षण किया जा रहा है, जिसमें राजधानी जैसी लग्जरी गाड़ियां भी शामिल हैं।



साथ ही अपराध प्रभावित क्षेत्र में गाड़ियों में सुरक्षा हेतु विशेष दस्ते का गठन किया गया है। प्रभावी अनुरक्षण हेतु उच्च अधिकारियों द्वारा औचक चेकिंग कर निगरानी की जा रही है। सभी प्रमुख स्टेशनों, प्लेटफॉर्म, सर्कुलेटिंग एरिया, पार्किंग क्षेत्र एवं अन्य संवेदनशील स्थानों आदि की सुरक्षा हेतु 24x7 बल सदस्यों की तैनाती कर मजबूत सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है। वडोदरा मंडल के प्रशिक्षण प्राप्त कमांडो को भी गाड़ियों में अनुरक्षण दल के साथ तैनात किया जा रहा है।

मशीन, उपकरण, नवीनतम तकनीक

वडोदरा मंडल में रेल संपत्ति एवं यात्रियों की सुरक्षा हेतु नवीनतम सुरक्षा उपकरणों जैसे–आईबीएस हट में रखी रेल संपत्ति की चोरी की घटना को रोकने के लिए 'घुसपैठ की



निगरानी प्रणाली' स्थापित की गयी है। सुरक्षा नियंत्रण कक्ष में स्थापित सुरक्षा हेल्प लाइन 182 सिस्टम को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस किया गया है। 18 नग बॉडी वॉर्न कैमरा (हाई रेजोल्यूशन) की मदद से स्टेशन परिसर और गाड़ियों में जो सीसीटीवी के कवरेज में नहीं हैं, वहाँ आसानी से वीडियो रिकॉर्ड कराया जा रहा है एवं प्रतिष्ठित राजधानी गाड़ियों में अनुरक्षण दल के साथ उपयोग किया जा रहा है। इसके अलावा सीसीटीवी, डीएफएमडी, मेगा फोन, इत्यादि उपकरणों के उपयोग से सुरक्षा तंत्र को मजबूती मिली है। प्रशिक्षित श्वान दस्तों की सहायता से स्टेशन क्षेत्र व रेल गाड़ियों की सघन चेकिंग की जाती है ताकि रेल को आतंकी खतरों, विस्फोटकों, मादक पदार्थों की तस्करी से सुरक्षित रखा जा सके एवं यात्रियों में सुरक्षा के प्रति विश्वास बढ़े। रे.सु.ब. की सीमित संख्या के मद्देनजर वडोदरा मंडल में होमगार्ड की व्यवस्था की गई है, जो रेलवे सुरक्षा बल के पर्यवेक्षण में यात्रियों की सुरक्षा हेतु तत्पर हैं।

यात्री संबंधी अपराध पर नियंत्रण

यात्री संबंधी अपराध के अंतर्गत वर्ष 2018 में, कुल 37 यात्री सामानों की चोरी के आईपीसी मामलों में रेलवे सुरक्षा बल द्वारा 45 अपराधियों को पकड़कर आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए जीआरपी को सुपुर्द किया गया है। रेसुब और जीआरपी के साथ संयुक्त रूप से जांच कर 3 महत्त्वपूर्ण मामले (क्रमशः 2 करोड़, 14 लाख एवं 1.9 लाख के



मूल्य) में अपराधियों को गिरफ्तार कर मामलों को डिटेक्ट किया गया। उल्लेखनीय है कि यात्री सामान के अपराध की रोकथाम हेतु रेसुब-वडोदरा मंडल द्वारा लगातार प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। परिणामस्वरूप यात्री सामान की चोरी के मामलों में 53.85% की कमी आई है। वर्ष 2018 में 305 चोरी के मामले दर्ज हुए हैं जबकि 2017 में 661 मामले दर्ज किए गए थे।

रेल परिचालन, टिकट दलालों, अनाधिकृत वेंडरों पर नियंत्रण

वर्ष 2018 में विभिन्न अवधि के दौरान रेलवे सुरक्षा बल-वडोदरा मंडल द्वारा विशेष अभियान चलाए गए। जिसके अंतर्गत रेल टिकटों की कालाबाजारी करने वाले कुल 101 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ मामले दर्ज किए गए। ट्रेनों की समयपालना सुनिश्चित करने हेतु की गई कार्यवाही में अनाधिकृत रूप से चेन पुलिंग करने वाले कुल 322 व्यक्तियों को पकड़कर रेलवे अधिनियम की धारा 141 के तहत मुकदमा दर्ज किया गया और न्यायालय द्वारा उनसे रु.2,16,330 का जुर्माना वसूल किया गया। ट्रेनों एवं रेल परिसरों से कुल 4,824 अनाधिकृत फेरीवालों को पकड़कर रेलवे अधिनियम की धारा 144 (a) के तहत मामले दर्ज किए गए और उनसे न्यायालय द्वारा रु.12,62,080 का जुर्माना वसूला गया। अनाधिकृत हिजड़ों के खिलाफ की गई कार्यवाही के अंतर्गत कुल 372 अनधिकृत हिजड़ों को रेलवे अधिनियम की धारा 144 (इ) के तहत पकड़ा गया और न्यायालय द्वारा उनसे रु.1,35,960 का जुर्माना वसूला गया। विकलांग कोच में अनधिकृत यात्रा करने वाले कुल 1,295 यात्रियों को पकड़कर रेलवे अधिनियम की धारा 155(1) के अंतर्गत न्यायालय में प्रस्तुत कर उनसे कुल रु.2,20,750 रुपए जुर्माने के तौर पर वसूले गए एवं महिला आरक्षित डिब्बों में अनाधिकृत रूप से यात्रा करने वाले कुल 1707 पुरुष यात्रियों को रेलवे अधिनियम की धारा 162 के तहत मामला दर्ज किया गया एवं न्यायालय द्वारा उनसे कुल रु.3,27,400 का जुर्माना वसूला गया।

वर्ष 2018 में रेलवे सुरक्षा बल - वडोदरा मंडल द्वारा रेलवे अधिनियम की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत कुल 20,357 मामले दर्ज किए गए; जिनमे 20,338 व्यक्तियों को पकड़कर न्यायालय द्वारा उनसे कुल रु.33,59,220 जुर्माना वसूला गया।





रेल संपत्ति की सुरक्षा

वर्ष 2018 में, कुल 39 रेल संपत्ति (अवैध कब्जा) अधिनियम कीमत 3,09,218 के चोरी के मामले दर्ज किए गए जिसमें से 33 मामलों को डिटेक्ट कर लिया गया है जिसमें रु. 2,60,338 के मूल्य की संपत्ति की बरामदगी एवं 73 अपराधियों की गिरफ्तारी की गई है। रेल संपत्ति की सुरक्षा हेतु अपराधियों पर निगरानी रखी जा रही है। अपराधियों के डोजियर तैयार किए गए हैं। रिसीवरों पर निरंतर निगरानी रखी जा रही है।





ड्रग, नारकोटिक्स एवं अन्य सामाजिक बुराइयों पर नकेल

रेल में चलने वाली असामाजिक प्रवृतियों पर नकेल कसने के लिए जीआरपी, आईबी, नारकोटिक्स, फॉरेस्ट विभाग से निरंतर समन्वय बनाते हुए कार्यवाही की जा रही है। परिणामस्वरूप ट्रेनों में शराब तस्करी के 18 मामलों को रेसुब वडोदरा मंडल द्वारा डिटेक्ट कर जीआरपी को सुपुर्द किया। ड्रग की तस्करी के 2 मामले क्रमशः रुपए 6 करोड़ एवं 60 लाख के मूल्य के रेसुब वडोदरा द्वारा नारकोटिक्स विभाग के साथ डिटेक्ट किए एवं 2 नाइजीरियाई नागरिकों को गिरफ्तार किया। गांजा तस्करी के 2 मामले, कीमत रु 8,26,346 रेसुब- वडोदरा मंडल द्वारा डिटेक्ट किए गए। 37 आईपीसी मामले (यात्री के सामान की चोरी) रेसुब वडोदरा मंडल द्वारा डिटेक्ट किए गए।



नवोन्मेष, निगरानी, पर्यवेक्षण व फीडबैक

मंडल में यात्रियों की बेहतर सुरक्षा व यात्री सामान चोरी, जहरखुरानी इत्यादि अपराधों से बचने हेतु उन्हें जागरुक करने के लिए पीए सिस्टम एवं मेगाफोन के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। यात्री सुरक्षा हेल्प लाईन 182 पर प्राप्त सभी 917 कॉल/शिकायतों का निवारण किया गया। इसी प्रकार ट्विटर के माध्यम से प्राप्त सभी 660 शिकायतों का निष्पादन किया गया।

महिला वर्ष 2018

महिला यात्री एवं बच्चों की सुरक्षा हेतु रेसुब महिला स्क्वाड का गठन किया गया। जिनके द्वारा "सखी" व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से महिला सुरक्षा के बारे में सुझाव/सलाह एकत्र करने और उनकी समस्याओं को हल करने के लिए महिला यात्रियों को जोड़ा गया है। 'राखी' त्यौहार पर ट्रेनों में महिला यात्रियों को आरपीएफ महिला दस्ते वडोदरा मंडल द्वारा राखी बांध कर सुरक्षित यात्रा हेतु आश्वस्त किया गया।







महिलाओं और बच्चों की सहायता एवं सुरक्षा हेतु तैयार किए गए "कैलेंडर कार्यक्रमों" के अनुसार रेलवे सुरक्षा बल की महिला टीम द्वारा ट्रेनों और रेल परिसरों में भिन्न-भिन्न अभियान चलाए, सामाजिक संस्था के सहयोग से किए गए नुक्कड़ नाटकों में हिस्सा लिया। 182 के बारे में जागरूकता के लिए ट्रेनों, स्टेशनों, मॉल में कार्यक्रमों कर अधिक से अधिक महिलाओं, बच्चों एवं पुरुषों से संपर्क कर जानकारियां दी गई।

उपलब्धियां

चलती ट्रेन में चढ़ने की कोशिश करने वाली 3 महिला यात्रियों की जो संभवत: ट्रेन से नीचे गिर रही थीं, की जान बचाई गई। 84 नाबालिग बच्चों का बचाव किया गया और चाइल्ड हेल्प डेस्क/ उनके माता-पिता को सौंप दिया गया। 10 महिलाओं का बचाव कर उनके माता-पिता/अभिभावकों को सौंपा गया। मंडल की रेसुब अंकलेश्वर द्वारा 1 नाबालिग बच्चे का अपहरण होने से बचाया गया एवं अपहरणकर्ता को पकड़कर पुलिस के हवाले किया गया। महिलाओं और बच्चों



की सहायता एवं सुरक्षा हेतु रेसुब की महिला टीम द्वारा ट्रेनों और रेल परिसरों में लगातार अभियान चलाया गया। ट्रेनों, स्टेशनों, मॉल में कार्यक्रम आयोजित कर अधिक से अधिक महिला, बच्चों एवं पुरुषों से संपर्क किया गया एवं उन्हें 'यात्री सुरक्षा हेल्प लाईन 182' की जानकारीयां दीं। महिला स्क्वाड द्वारा ट्रेनों में चेकिंग के दौरान महिला आरक्षित डिब्बों में यात्रा करने वाले यात्रियों को एवं अनाधिकृत फेरीवालों को पकड़कर संबंधित पोस्ट के सुपुर्द किया गया।

रेलवे सुरक्षा बल स्थापना दिवस पर 20 से 26 सितम्बर, 2018 स्थापना दिवस सप्ताह के दौरान सुरक्षा हेल्प लाइन 182 का पम्फ्लेट्स, पोस्टर, बैनर के माध्यम से व्यापक प्रचार व प्रसार किया गया। रेसुब द्वारा एनजीओ/चाइल्ड हेल्प लाइन के साथ समन्वय बैठक कर लावारिस एवं निराश्रित बच्चों और महिलाओं के पुनर्वास के लिए परामर्श किया गया। स्टाफ की समस्या एवं उनके निवारणों के लिए सुरक्षा सम्मेलन आयोजित किए गए। ट्रेन एस्कॉर्टिंग स्टाफ हेतु सॉफ्ट स्किल ब्रीफिंग का आयोजन किया गया। अच्छे काम के प्रोत्साहन हेतु कर्मचारियों को रिवार्ड/प्रमाण पत्र दिये गए।



स्वच्छ भारत अभियान

रेसुब ने स्वच्छता अभियान के अंतर्गत मंडल द्वारा किए गए "श्रमदान" कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। 163 व्यक्तियों को रेलवे अधिनियम की धारा 145(इ) के अंतर्गत पकड़कर उनसे





न्यायालय द्वारा 24,320 रुपया जुर्माना वसूला गया एवं 1767 व्यक्तियों को लिटटरीं चालान कर कुल 3,68,200 रुपया जुर्माना किया गया।

प्रशिक्षण, प्रेरणा, सक्षम, व्यवहार कुशलता

यात्रियों की बेहतर सुरक्षा और उनसे कुशल व्यवहार हेतु "सक्षम" एवं "व्यवहार कौशल (सॉफ्ट स्किल)" कार्यक्रम के अंतर्गत सभी रेलवे सुरक्षा बल स्टाफ को उनके कार्यस्थल पर ही रहकर प्रशिक्षित किया गया। मंडल के 243 स्टाफ को आरएसएमएस (रेलवे सिक्यूरिटी मेनेजमेंट सिस्टम) कार्य प्रणाली के बारे में प्रशिक्षित किया गया है। जिसकी मदद से रेलवे अपराध पर ऑन लाइन निगरानी रखी जा रही है। समय-समय पर सुरक्षा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है, जिसमें बल सदस्यों की समस्याओं को अधिकारियों द्वारा सुना जाता है और तदनुसार उनका समाधान किया जाता है एवं उन्हें समय के साथ बदल रही चुनौतियों के प्रति जागृत किया जाता है। बल सदस्यों की बेहतर सुविधा हेतु बैरेकों के नवीनीकरण के साथ-साथ बैरेकों को अत्याधुनिक किया जा रहा है। बैरेकों में नये गद्दे, पलंग, सफेद चादरें, तकिये, ब्लेंकेट, परदे, अलमीरा, शुद्ध पेयजल हेतु आरओ सिस्टम, फ्लाय केचर, गीजर, कूलर, रेफ्रीजरेटर, वॉशिंग मशीन, शु-शाइनर मशीन लगवाए गए हैं। मैस में नए बर्तन व सामग्री उपलब्ध कराई गई एवं कुक की सुविधा मुहैया कराई गई हैं। मैस में साफ-सफाई एवं संतुलित आहार की व्यवस्था की गई है तथा खेलकूद इत्यादि के लिए आवश्यक किट भी उपलब्ध कराई गई है। स्टाफ को अत्याधुनिक जिम की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है, जिसका कार्य प्रगति पर है। स्टाफ के मनोबल को बढ़ाने हेतु अच्छे कार्य करने वाले बल सदस्यों को विभिन्न स्तर पर पुरस्कृत किया जा रहा है। जिससे अन्य बल सदस्यों को भी बेहतर कार्य करने की प्रेरणा मिलती रहे। जरूरुतमंद बल सदस्यों को "कर्मचारी कल्याण निधि" के अंतर्गत 21 स्टाफ को कुल रु 160000 की राशि की सहायता दी गई। रेसुब स्टाफ जानकारी हेतु उनकी चरित्र सेवा पुस्तिका एवं एपीएआर की स्केनिंग कर अपलोड कर दिया गया है। 27 अक्टूबर, 2018, को उचित जांच एवं कार्यवाही के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।

खेलकूद में हिस्सेदारी

रेलवे सुरक्षा बल-वडोदरा मंडल द्वारा अंतर मंडलीय रेसुब कबड्डी प्रतियोगिता-2018 का सफलतापूर्वक आयोजन करवाया गया। वर्ष 2018 में रेसुब क्रिकेट टीम ने अंतर डिपार्टमेन्ट



'डीआरएम कप टूर्नामेंट' जीता तथा डब्ल्यूआरईयू कप क्रिकेट टूर्नामेंट की रनर अप विजेता रही। अंतर मंडलीय एवं ऑल इंडिया स्विमिंग प्रतियोगिताओं में वडोदरा मंडल के रेसुब स्टाफ ने हिस्सा लिया एवं प्रथम एवं तृतीय स्थान ग्रहण किया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2018 में भाग लिया। राष्ट्रीय एकता दिवस पर रन फॉर यूनिटी में भाग लिया। वडोदरा शहर में आयोजित विभिन्न मैराथन दौड़ में भाग लिया।

इस प्रकार रेलवे सुरक्षा बल वडोदरा मंडल रेल संपत्ति व यात्रियों की सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए सतत् प्रयासरत् है एवं रेल प्रशासन व रेल यात्रियों की आशाओं पर खरा उतरने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। ■



मेमू कार शेड, वडोदरा : सेवा में रत, अनवरत



कल्लाराम मीना
मंडल विद्युत इंजीनियर (मेमू), वडोदरा मंडल

मेमू कार शेड, वडोदरा पश्चिम रेलवे की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। इसकी स्थापना 6 जुलाई, 1995 को पश्चिम रेलवे के प्रथम मेमू कार शेड के रूप में हुई। 1995-96 में मेमू कार शेड से मेमू ट्रेनों की शुरुआत वडोदरा मंडल के अहमदाबाद-वडोदरा-सूरत के बीच हुई। 1995-96 में मेमू कार शेड वडोदरा की होल्डिंग 27 मोटर कोच (डीएमसी) तथा 74 ट्रेलर कोच (टीसी) थी। वर्तमान में मेमू कार शेड वडोदरा 94 मोटर कोच तथा 278 ट्रेलर कोच अर्थात् कुल 372 कोच का मेंटेनेंस करके भारतीय रेल के यात्रियों को अनवरत सुरक्षित, समय पर तथा किफायती दरों पर अपने गंतव्य तक पहुंचाने का कार्य 24 घंटे कर रहा है। वर्तमान में मेमू कार शेड वडोदरा की प्रतिदिन 91 मेमू सेवाएं विभिन्न मार्गों : पीएनवी एल-बीएसआर-वीआर-एसटी-बीआरसी-एडीआई-जीएनसी, बीआरसी-जीडीए-डएचडी-यूजेएन, जीडीए-एएनएनडी, बीएच-डीएचएफ, बीएच-वीआर-बीएच, आरटीएम-कोटा-एमटीजे-बी एक्सएन-जेएबी तथा बीपीएल-बीआईएनए पर सेवा में है। मेमू कार शेड वडोदरा ने अपनी 23 वर्ष की यात्रा के दौरान मेमू चल स्टॉक की गुणवत्ता, मेंटेनेंस के तरीकों में सुधार, कर्मचारियों के स्वास्थ्य / कल्याण तथा पर्यावरण आदि क्षेत्रों में निरंतर उत्कृष्ट कार्य करके भारतीय रेल में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। पश्चिम रेलवे का एकमात्र मेमू कार शेड - मेमू कार शेड वडोदरा पूरे पश्चिम रेलवे तथा डब्लयूसीआर, एनसीआर के कुछ मंडलों में मेमू सेवाएं प्रदान कर रहा है।

मेमू कार शेड की प्रमुख उपलब्धियां

- वर्ष 2017-18 तथा 2018-19 में कुल अभी तक 22 मेमू रैक (प्रत्येक 8 कोच) प्रवर्तन में लाकर सफलतापूर्वक पारंपरिक आईसीएफ रेकों को बदलकर मेमू सेवायें शुरू की गईं। मेमू कार शेड वडोदरा ने उपरोक्त उपलब्धि मौजूदा कर्मचारियों से तथा नियमित रख-रखाव को बिना प्रभावित किये प्राप्त की।
- मेमू कार शेड वडोदरा ने भारतीय रेल में पहली बार 20 कोच की 3 मेमू रेकों की सफलतापूर्वक कमीशनिंग करके बीएचआर-वीआर मार्ग पर सेवा में लगाई।
- बॉयो-टॉयलेट वाले सभी कोच उचित सफाई और रख-रखाव के साथ अच्छी स्थिति में चल रहे हैं।



- बेहतर रोशनी और ऊर्जा की बचत के लिए एलईडी लाइट प्रदान की गयी है।
- सभी मेमू रैक को लाइन बॉक्स की आवश्यकता को समाप्त करने वाले टूल बॉक्स के साथ फिट किया गया है।

मेमू कार शेड वडोदरा के द्वारा नवंबर, 2018 में 5 एस कार्यप्रणाली को लागू किया गया है, ताकि कचरे को खत्म करने और एक कुशल, सुरक्षित और स्वच्छ कार्य वातावरण बनाए रखने के लिए निरंतर सुधार संस्कृति का मार्ग सक्षम हो सके।

मेमू कार शेड की प्रमुख गतिविधियाँ

मेमू कार शेड वडोदरा में मेमू गाड़ियों के सुरक्षित संचालन हेतु मेमू चल स्टॉक का मेंटेनेंस किया जाता है। इसके अंतर्गत समयानुसार चल स्टॉक का माइनर शेड्यूल इंस्पेक्शन (TI/IA/IC), एवं अन-शेड्यूल मेंटेनेंस किया जाता है। आरडीएसओ द्वारा जारी एसएमआई/ईएमयू/0037 और मैनूएल में दिये गए निर्देशों का पालन करते हुये चल स्टॉक का नियमित रख-रखाव किया जाता है।

शेड ऑग्यूमेंटेशन कार्य : मेमू कार शेड वडोदरा की होल्डिंग क्षमता कुल 372 कोच पहुंच चुकी है जो भविष्य में 600 कोच तक बढ़ाने के लिए प्रस्तावित है। शेड ऑग्यूमेंटेशन का कार्य प्रगति पर है। ऑग्यूमेंटेशन कार्य में स्वचालित कोच वॉशिंग प्लांट के साथ 1 वाशिंग लाइन, 2 नयी अस्तबल लाइन, 2 नयी 24 कोच रख-रखाव पिट लाइन तथा 2 मौजूदा रख-रखाव पिट लाइन का विस्तार शामिल है, जिससे आने वाले समय में 24 कोच की मेमू ट्रेन की सेवा प्रदान की जाएँगी।



पर्यावरण : मेमू कार शेड वडोदरा में विश्व पर्यावरण दिवस/ स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा इत्यादि मनाया जाता है। इस अवसर पर शेड के कर्मचारी एवं अधिकारी मिलकर श्रमदान / वृक्षारोपण / योग करते हैं। इस दौरान शेड संकुल, पिट लाइंस एवं सभी सेक्शन इत्यादि को साफ किया जाता है और वृक्षारोपण किया जाता है। ■

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल का मीडिया प्रबंधन



खेमराज मीना
जनसंपर्क अधिकारी, वडोदरा मंडल

पश्चिम रेलवे का वडोदरा मंडल दिल्ली मुंबई मार्ग पर ताप्ती नदी के उत्तरी छोर पर उत्राण स्टेशन से गोधरा व अहमदाबाद की ओर गेरतपुर स्टेशन तक फैला हुआ है। भारतीय रेलवे के व्यस्तम मार्गों में से एक दिल्ली- मुंबई व अहमदाबाद-मुंबई मार्ग पर मंडल की स्थिति होने के कारण यहाँ से रोज तकरीबन 223 ट्रेनों तथा 2 लाख से अधिक यात्रियों का आवागमन होता है। मंडल में व्यस्ततम रेलमार्ग होने के मद्देनजर रेल यातायात की सटीक व त्वरित सूचनाओं को आमजन व यात्रियों तक पहुँचाने के लिये जनसंपर्क अधिकारी की भूमिका अहम हो जाती है। मंडल के अंतर्गत वडोदरा, आनंद, भरुच, नडियाद व गोधरा मुख्य मीडिया सेंटर हैं। इसके अलावा अंकलेश्वर व छोटा उदेपुर भी मीडिया की ब्रांचे हैं। मंडल की सीमाएं गुजरात में होने के कारण मीडिया को जनहित की सूचनाएं गुजराती हिंदी व इंग्लिश तीनों भाषाओं में भेजी जाती हैं ताकि मीडिया में बेहतर कवरेज मिल सके।

दैनिक कार्य के अंतर्गत प्रेस क्लिपिंग के रूप में रोज सुबह मीडिया रिपोर्ट तैयार की जाती है। इन मीडिया रिपोर्टों का रिकॉर्ड भी रखा जाता है। मंडल के अंतर्गत चलने वाली ट्रेन सेवाओं व उनकी स्थितियों के बारे में रोज अपडेट के साथ मीडिया के माध्यम से जानकारी आमजन तक पहुंचाई जाती है। इसके अलावा रेल यातायात व उनकी सेवाओं संबंधित अपडेट सूचनाओं की प्रेस रिलीज जारी कर प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक तथा सोशल मीडिया के माध्यम से यात्रियों व लोगों तक पहुंचाई जाती है। इसके अंतर्गत स्पेशल ट्रेन, ट्रेन स्टॉपेज, ट्रेनों के समय में परिवर्तन, रद्दीकरण, रेल नियमों में बदलाव, अतिरिक्त कोचों का जोड़ना, रेलवे की नई योजनाओं इत्यादि के बारे में सूचनायें आमजन को दी जाती हैं।

जनसंपर्क प्रबंधन	
भारतीय रेल की छवि	**जनहित में सूचनाएं**
• इनोवेशन व नयी तकनीक • फीचर व लेख • संवाद व स्पष्टीकरण • प्रेस टूर व हेरिटेज प्रदर्शनी	• संरक्षा व सुरक्षा के प्रति जागरूकता अभियान • रेल यतायात व उनकी सेवाओं संबंधित अपडेट सूचनाएं • रेलवे के नये नियमों व नोटिफिकेशनों की जानकारी • रेलवे ब्लाकों व अन्य मरम्मत के कार्यों की पूर्व में जानकारी

मीडिया में प्रकाशित गलत व मनगढ़ंत खबरों के स्पष्टीकरण के लिये समय-समय पर रिजोइंडर भी जारी किये जाते हैं। मंडल में होने वाली गतिविधियों पर प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन भी कराया जाता है। मीडिया व संस्था के बीच बेहतर तालमेल रखने एवं कम्युनिकेशन गैप को खत्म करने के लिये जनसंपर्क अधिकारी द्वारा दैनिक रूप से प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से संवाद किया जाता है। जनसंपर्क अधिकारी द्वारा ही मंडल की रेल यातायात संबंधित व इवेंट की सूचनाऐं सोशल मीडिया-ट्विटर व फेसबुक पर पोस्ट की जाती हैं। ट्विटर पर आने वाली शिकायतों के निराकरण के लिये कॉमर्शियल कंट्रोल पर 24 घंटे स्टाफ तैनात भी रहता है। मंडल में होने वाले महत्त्वपूर्ण इवेंट, उपलब्धियों व उद्घोषणाओं के अवसर पर मीडिया द्वारा उचित कवरेज करायी जाती है।

मंडल में जनसंपर्क प्रबंधन प्रक्रिया : मंडल के अंतर्गत यात्रियों व लोगों के लिये ट्रेन ऑपरेशन तथा सुविधाओं से संबंधित नोट ऑपरेटिंग एवं वाणिज्य विभाग से जारी किये जाते है। उन्हें पीआरओ जनहित में आमजन की भाषा में बनाकर प्रेस विज्ञप्ति के रूप में मीडिया के लिये जारी करता है। जिससे यात्रियों व लोगों को असुविधा ना हो। वहीं दूसरी ओर जनता में रेलवे छवि को बेहतर बनाने के लिये रेलवे में हो रहे इनोवेशनों व नई अवधारणा तथा तकनीकों को भी मीडिया के माध्यम से प्रोजेक्ट करता है। इस तरह पीआरओ द्वारा मंडल की इमेज व जनहित दोनों पर विशेष ध्यान रखा जाता है ताकि आमजनों, यात्रियों, रेल यूजरों व फ्रेट कस्टमरों के बीच भारतीय रेल की छवि को बेहतर बनाया जा सके। इस प्रक्रिया को हम इस तरह समझ सकते हैं।

मीडिया फीडबैक : भारतीय रेल के वडोदरा मंडल में जनसंपर्क प्रबंधन में मीडिया फीडबैक की अहम भूमिका है। मंडल के अंतर्गत इससे रेलवे व रेलवे यूजरों के बीच बेहतर तालमेल तथा स्वच्छ जनमत तैयार करने में मदद मिलती है मंडल स्तर पर मीडिया फीडबैक की इस प्रक्रिया को हम इस तरह समझ सकते हैं। ■



With Best Compliments from

PRAVESH

CONSTRUCTION

Civil

Mechanical

Electrical

Signalling & Telecom
Turnkey Contractor

D-102, Akurli Industrial Premises Co-Op.Society Ltd.
Akurli Road, Kandivali (E), Mumbai-400101
Tele Fax No. : (022) 2884 0918
Email : praveshconst@rediffmail.com,
praveshconstruction@gmail.com
Branch Office : A/27, Sona Park, A.E.C. Road,
Chandkheda, Kalol, Gandhi Nagar, Gujrat

चिट्ठी-पत्री

महोदय



भारतीय रेल पत्रिका फरवरी, 2019 के अंक मुझे प्राप्त हुआ। माह फरवरी का अंक बहुत ही खूबसूरत है। बहुत ही बेहतरीन लिखावट के साथ पत्रिका को प्रस्तुत किया गया है। सबसे खास बात यह है कि घर बैठे यह पत्रिका आपके द्वार पर आ रही है। पत्रिका द्वारा मुझे रेलवे से संबंधित सभी जानकारियां मिली। आने वाली पत्रिका के इंतजार में मैं हूं।

ओ.पी. मालवीय,
भोपाल

प्रिय महोदय,

आपका दिसंबर, 2018 अंक बहुत अच्छा लगा लेकिन बीच के महीने में कई अंक प्राप्त नहीं हुए, इस बात का अफसोस है। सब्सक्रिप्शन डिलीवरी सिस्टम दुरूस्त रखें।

अर्पण
गोरखपुर

सर, ये अंक (दिसम्बर) बहुत ही अच्छा लगा- विशेष कर कहानी 'शून्य' और कविता 'लोको पॉयलट'।



हरेन्द्र कुमार,
खुर्जा बुलंदशहर

संपादक जी

मैं अरूण कुमार दुबे पश्चिम मध्य रेलवे के सागर रेलवे स्टेशन पर दूरसंचार में हेल्पर के पद पर कार्यरत हूं। मैं 40 साल से आपकी पत्रिका का सदस्य (सदस्यता संख्या 12795) हूं। जब मैं रेलवे में नहीं था, तब भी इसका सदस्य था। भारतीय रेल पत्रिका में काफी सुधार हुआ है, मुझे खुशी है कि दिसम्बर, 2018 से कागज और बेहतर हो गया है।

अरूण कुमार दुबे,
सागर

अस्तित्व

मां मैं भी तेरा अंश हूं।
तेरा ही रंग रूप हूं।
न बेटी न बेटा हूं।
बस तीसरा स्वरूप हूं।
हां मैं किन्नर - त्रिशंकु हूं।

आँचल में खिलते ही मेरे
इक सन्नाटा सा छा जाता है।
खुशियों भरे आंगन में
पल में मातम छा जाता है।
किंकर्तव्यमूढ़ सी ममता अश्रु बहाती है।।

लोक लाज की खातिर त्यागा।
लिंग, त्रुटि में दोष क्या मेरा?
मैं भी उस ईश्वर की रचना।
जिसकी ये सृष्टि निराली है।
फिर क्यूं ऐसी घृणित दृष्टि, सबने हम पर डाली है।

अर्द्ध हूं मैं पूर्ण नहीं।
माना वंश चलाने को संपूर्ण नहीं।
लेकिन क्या संवेदन से भी परिपूर्ण नहीं?
हर पल टीस सी उठती है।
अस्तित्व दंश सी चुभती है।

साज श्रृंगार का ढोंग रचाकर।
हंसी खोखली, ढोल बजाकर।
गली-गली यूं घूम रहा हूं।
घायल हृदय है, श्रापित तन।
ममता के आलिंगन को व्याकुल मन।

घर में रह कर कुछ रिश्तों को मैं भी जीता
भाई-बहन का रक्षक होता।
माता-पिता का सेवक होता।
कहने को संतान तो रहता।
इक अस्तित्व - पहचान तो रहता। ■

अर्चना शर्मा
कार्यालय अधीक्षक, सामान्य अनुभाग
सवारी डिब्बा कारखाना, उत्तर रेलवे, आलमबाग, लखनऊ

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोये

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र हिन्दी मासिक पत्रिका



भारतीय रेल

आज ही सदस्य बनें



सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

पोस्ट ..... जिला .....

राज्य ..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

वार्षिक सदस्यता	सर्व साधारण	रेलकर्मी	विशेषांक	एक प्रति
एक वर्ष	₹100*	₹90*	₹40	₹10
दो वर्ष	₹200*	₹180*	₹40	₹10
तीन वर्ष	₹300*	₹270*	₹40	₹10

* विशेषांक के साथ

रेल कर्मचारी ..... हां/नहीं वर्तमान सदस्यता (हो तो) संख्या ..... तारीख .....

देय राशि : डी.डी. ..... चेक ..... मनी ऑर्डर ..... पोस्टल ऑर्डर .....

डीडी/चेक/म.ओ./पो.ओ. नंबर ..... स्थान ..... रुपए ..... दिनांक .....

(डी.डी./म.ओ./पो.ओ. देय - 'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली')

संपर्क

व्यापार प्रबंधक

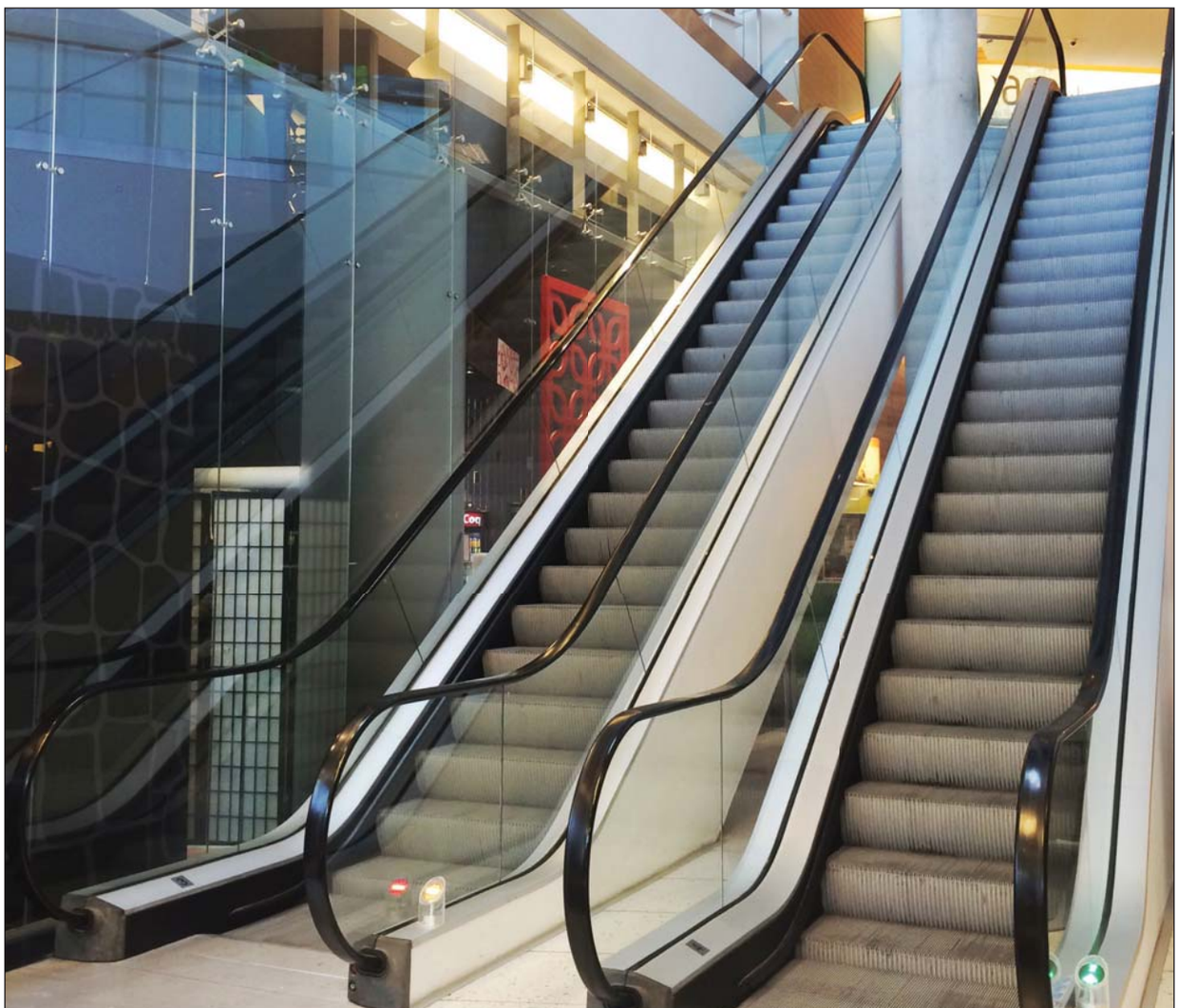
310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली - 110001

(011) 23382531/23303665/23304456 (रेलवे नं. 43665, 44456), मोबाइल : 9717647367

ई-मेल : bmpr310rb@gmail.com / editorbhartiyarailrb@gmail.com

सदस्यता-फॉर्म की फोटोकॉपी मान्य है

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2018-19-20
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित



Escalators
Railway, Metro Stations

Locomotives | Traction Alternators & Motors
Dynamic Brake Resistors | Cooling Fans | HVAC

Daulat Ram
Engineering Services Private Limited

10/2, NH-12, Simrai, Post Obedullahganj, Near Bhopal City, Dist. Raisen (MP) 464993 INDIA
Ph: 91 7480 231252 / 53 | Fax: 91 7480 231250 | info@daulatram.org | daulatram.com

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**